ISSN 2455-9644

आसरा मुक्तांगन

अक्टूबर–नवंबर–2024

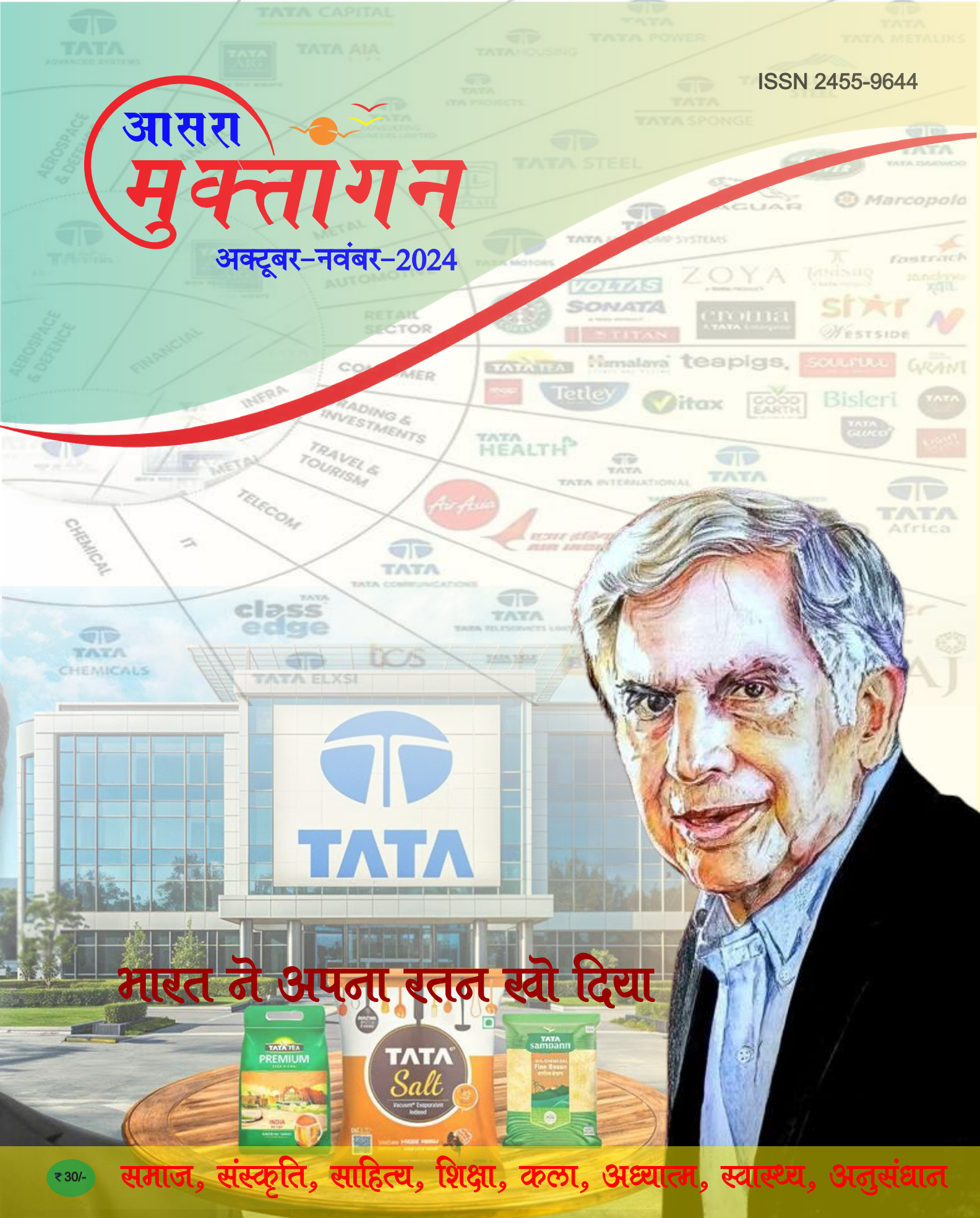

भारत ने अपना रतन खो दिया

₹ 30/-

समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान

77 वें निरंकारी संत समागम सेवा शुभारंभ करते हुए
सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

विस्तृत जानकारी-पृष्ठ-55

You can also follow us on and "Aasara Muktangan"

प्रकाशक-मुद्रक
महानंदा शिरकर

प्रधान संपादक
डॉ. रमेश मिलन

संपादक
डॉ. विमलेश शिरकर

प्रबंध संपादक
मोहन शिरकर

कार्यकारी संपादक
पवित्रा सावंत

उप-संपादक
डॉ. रमेश यादव, गुरुप्रित

संपादकीय मंडल
- डॉ. सुलभा कोरे
- डॉ. सतीश पाण्डेय
- प्रो. कुसुम त्रिपाठी
- श्री स. वि. लव्हटे
- श्री संजय भारद्वाज
- श्री बाळकृष्ण लोहोटे

सलाहकार मंडल
- गयाचरण त्रिवेदी
- डॉ. चंद्रशेखर आष्टीकर
- सरिता आहुजा (कनाड़ा)
- माधवराव अंभोरे
- जानकी प्रसाद, दिल्ली

समन्वयक एवं प्रवक्ता
- डॉ. रत्नाकर सं. अहिरे

जनसंपर्क एवं विशेष आयोजन
- बाळकृष्ण ताम्हाणे
- किशन नेनवानी
- घनश्याम कोळंबे
- दिनेश सिंह
- राजकरन पाण्डेय
- दत्तात्रय कावरे

विधि सलाहकार
- ऍड. रमेश शाह

विशेष प्रतिनिधि
- डॉ. वेणुगोपाल कृष्ण, चेन्नई
- आशीष कुमार, मुंबई

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : 8920111592, 991077754

आसरा
मुक्तांगन
www.aasaramuktangan.com

अक्टूबर-नवंबर-2024 वर्ष : 13, अंक : 3

इस अंक में

संपादकीय- डॉ. रमेश मिलन 5
मोहन शिरकर- कैसे बनी गिनीज़ बुक? 7
ऋषिकेश शरण- दो मित्र भिक्षुओं की कथा 7
श्रीहरि वाणी- हमारे पर्व और सनातन का चिंतन 8
पीतम सिंह 'प्रियतम'- दीपावली पर्व : क्यों और कैसे 10
डॉ. किशोर सिन्हा- अनूठा और भास्वर: बस्तर का दशहरा 12
डॉ. सुनील देवधर- दीपोत्सव- संस्कृति का पर्व 15
डॉ. लतिका जाधव- देवी 17
संजय भारद्वाज- स्टैच्यू... 19
डॉ. ओमप्रकाश शर्मा- हिन्दी देश को एकता के सूत्र में पिरोती है 21
अशोक जैन- धंधा कोचिंग का 23
डॉ. रमेश मिलन- अखंड भारत के महान शिल्पी : सरदार पटेल 25
सुधा भारद्वाज- रामप्पा 27
आशीष द्विवेदी 'साथी'- रिश्ते, अच्छा लगा 29
डॉ. रमेश यादव- लघुकथाएं 30
चित्रा देसाई- नालंदा, तैनाल 32
नंदन शर्मा- सपनों का क्या है, प्रणय गीत 33
राकेश शर्मा- ग़ज़ल 34
मुस्तहसन अज़्म- ग़ज़ल 35
सच्चिदानंद आवटी- जलता रहे तू..., जीवन की राह से... 36
देवकी कुलकर्णी- शब्द, प्रीतरंग 37
अंशु तिवारी- सोचा न था, श्री कृष्ण को समर्पित 38
प्रेम कुमार शर्मा 'प्रेम'- वीरों की गाथा, शहीद भगत सिंह 39
डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव- कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ 40
देवेन्द्र कुमार तिवारी- स्वर्ग बना दो 42
अनिता सक्सेना- अगले पल का ठिकाना नहीं है 42
वीनु जमुआर- सुनो कहानी... 43
अलका अग्रवाल- बीज से वृक्ष, पतंग 44
अनुष्का गुप्ता- पंचम सुर की पटरानी-कोयल 45
रमेश तैलंग- आँखें, नानी की आई है चिट्ठी 46
राम विलास शास्त्री- भारत ने अपना रतन खो दिया... 47
डॉ. रत्नाकर आहिरे- एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व 49
हृदयेश 'मयंक'- बदलते वक्त के मापक यंत्र- हरिमृदुल 50
संजय भारद्वाज- बात इतनी सी सै- डॉ. रमेश मिलन 53
77वें समागम की सेवाओं का विधिवत शुभारंभ- स. वि. लव्हटे 55
पाठकीय प्रतिक्रियाएँ 57

अकादमिक मंडल

न्यायमूर्ति अनंत डी. माने
उच्च न्यायालय, मुंबई (सेवानिवृत्त)

श्री ऋषिकेश शरण
प्रशासक

डॉ. नरेशचंद्र
प्रतिकुलपति, मुंबई वि.वि. (सेवानिवृत्त)

डॉ. माधुरी छेड़ा
शिक्षाविद

साहित्य मंडल

डॉ. सूर्यबाला
साहित्यकार

डॉ. दामोदर खड़से
साहित्यकार

डॉ. रामजी तिवारी
शिक्षाविद-समीक्षक

डॉ. दामोदर मोरे
मराठी कवि

सहयोग

राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, वर्धा

धनंजय शिंदे

सुनील पाटिल

शबाना पटेल

श्रद्धा गांगन

'आसरा मुक्तांगन' का अभियान 'वृक्ष लगाएं, बढ़ाएं'

वर्तमान में तापमान हर जगह बढ़ रहा है। पसीना, गर्मी और उससे उत्पन्न तकलीफें...मानव झुलस रहा है, जमीन तप रही है, उसमें दरारें पड़ रही है, पशु-पक्षी आदि सभी जीव गर्मी में झुलस कर मर रहे हैं और पेड़-पौधे भी पानी के अभाव में सूख रहे हैं।

यह है 'ग्लोबल वार्मिंग' का परिवेश, जो हम सबको एक ऐसे माहौल की ओर ले जा रहा है, जहां हमारे विश्व, हमारी भविष्यगत पीढ़ी को बहुत कुछ भुगतना पड़ेगा। हमने घर, रास्ते बनाएं; हमने अपने लिए संरचनात्मक सुविधाएं जुटायी और इन सब बातों को अंजाम देने के लिए हम वृक्षों को काटते गए।

वृक्ष इस पृथ्वी का सहारा, हमारा पनाहगार जो भूमि के अंदर जाकर अपनी जड़ों से पानी को संवर्धित करता है और जमीन से ऊपर बढ़कर बादलों को आसमान से नीचे उतरवाकर बरसात करवाता है तथा हमें छांव देकर कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम करते हुए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है।

वृक्ष का महत्व, पर्यावरण में उसकी उपयुक्तता असाधारण है, जिसे हमें जानना, पहचानना और समझना होगा। अन्यथा हम स्वयं भी झुलसते रहेंगे और हमारी भविष्यगत पीढ़ी को इससे भी ज्यादा झुलसाते रहेंगे।

पर्यावरण के संवर्धन को 'आसरा मुक्तांगन' ने अपना जीवन उद्देश्य बनाया है। हर परिवार दो-तीन वृक्ष लगाएं, उनका संवर्धन करें इसलिए 'आसरा मुक्तांगन से संबंधित सभी संस्थाओं, सदस्यों, समर्थनकर्ताओं, संरक्षकों तथा भारत के सभी परिवारों से अनुरोध है, अपील है कि वे 'वृक्ष संवर्धन अभियान' के बारे में अपने क्रियाकलापों, गतिविधियों से संबंधित फोटो- जानकारी के साथ नीचे दिए गए पते पर 'आसरा मुक्तांगन' हेतु प्रेषित करें। आपके प्रयासों को उचित स्थान और प्रोत्साहन देना, हमारा काम होगा...

आसरा मुक्तांगन, पोस्ट बैग-01,
कलवा, ठाणे-400605 महाराष्ट्र, भारत
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com

'आसरा मुक्तांगन' के संदर्भ में

'आसरा मुक्तांगन' राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्र को समर्पित एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए एक सशक्त राष्ट्र की नींव को परिपुष्ट करना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। नवयुवकों, नारी तथा बुजुर्गों में जागृति का संचार करना तथा देश में घर-घर तक साहित्य और संस्कृति के उच्चतम संस्कारों को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लक्ष्य पूर्ति हेतु, पत्रिका सतत प्रयत्नशील है। पत्रिका का प्रकाशन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत प्रकाशक एवं संपादक मंडल का एक सारस्वत अभियान है।

-आसरा मुक्तांगन

जीवन सर्वशक्तिमान का अनमोल उपहार

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।

मित्रो! सप्रेम अभिवादन! दीवाली-दशहरा के पावन पर्व सभी देशवासियों के जीवन में खुशी, सौहार्द, सांस्कृतिक समृद्धि लेकर आएं। हार्दिक शुभकामनाएं। दीपावली-दशहरा समृद्धि के पर्व हैं जो हमें असत्य से सत्य की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं।

जीवन सर्वशक्तिमान का अनमोल उपहार है। जीवन कैसा भी हो हंसी और खुशियों से भरा या वेदनामय, उसे बुद्धिमत्तापूर्वक और उद्देश्यपूर्ण ढ़ंग से जीना ही श्रेयस्कर है। इच्छाओं, आकांक्षाओं और आसक्ति से मुक्त होकर आत्मज्ञान प्राप्त करना, स्वयं को जानना, अपने कर्तव्यों को पहचानना, निष्काम कर्म करना मानव जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है, धर्म है। मनुष्य का जन्म मिला है तो इस श्लोक के माध्यम से उसकी सार्थकता पर विचार करें-

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलम् न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाष्चरंति!!
(चाणक्य नीति)

उक्त गुणों से परिपूर्ण, सभी के याद करने योग्य- सरदार वल्लभभाई पटेल राजनीति में त्याग और मर्यादा का आदर्श बने लौहपुरुष का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को हुआ। राष्ट्रीय एवं अतंरराष्ट्रीय स्तर पर सरदार पटेल के अदभुत व्यक्तित्व तथा देशहित में किए गए विशिष्ट कार्यों का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। अपनी दृढ़ता, आत्मबल, संकल्प, सत्यनिष्ठा, अटल विश्वास, दृढ़ विश्वास, साहस एवं कार्य के प्रति अति लगन के कारण ही आजादी के समय उन्होंने 565 देशी रियासतों को अपने थैले में डालकर भारतीय संघ में विलय कर दिया। सरदार पटेल फूल की तरह कोमल और वज्र की तरह कठोर थे। वे असंभव को संभव, कठिन को सरल, निरर्थक को सार्थक बनाने वाले कुशल राजनीतिज्ञ थे। निम्नांकित पंक्तियां उनके व्यक्तित्व पर खरी उतरती हैं-

अमुक्तस्वामिनो युक्तं युक्तं नीचस्य दूषणम्!
अमृत राहवे मृत्यु विषं शंकरभूषणम्!!

भावार्थ- यदि योग्य व्यक्ति के पास अयोग्य वस्तु भी आ जाए तो वह काम की बन जाती है लेकिन अयोग्य व्यक्ति के पास योग्य वस्तु भी चली जाए तो वह काम की नहीं रहती। जैसे शिव ने विष पिया और वह उनके गले की शोभा बन रहा है, लेकिन राहु अमृत पीकर भी मारा गया।

जन्मदिन पर भारत रत्न, अखंड भारत के महान शिल्पी को हमारा शत शत नमन!

देश ने अपने एक अनमोल 'रतन' को खो दिया। उद्योग जगत के महान दिग्गज, पद्मविभूषण, परोपकार एवं विनम्रता की साक्षातमूर्ति रतन टाटा का 86 साल की उम्र में मुंबई के

बीच कैंडी अस्पताल में 9 अक्टूबर 2024 को निधन हो गया। रतन टाटा ने टाटा समूह के विभिन्न स्रोतों से प्राप्त अधिकांश संसाधनों और धन का उपयोग समाज सेवा और देश की उन्नति में योगदान देकर किया। उनके द्वारा स्थापित टाटा कैंसर हास्पिटल कैंसर पीड़ित मरीजों का लगभग निशुल्क उपचार करके भारत सरकार से भी अधिक सेवा कर रहा है। आम आदमी की पहुंच में आने वाली सस्ती कार 'नेनो' उनकी विशिष्ट देन है। सरल स्वभाव, सादा जीवन, देश सेवक, दूरदर्शी, वैश्विक व्यक्तित्व रतन टाटा को विनम्र श्रद्धांजलि।

सरदार वल्लभभाई पटेल और रतन टाटा को याद करते हुए हम तो यही कहेंगे-

'आदमी मुसाफिर है आता है जाता है,
आते-जाते रास्ते में यादें छोड़ जाता है।'

मित्रो! विश्व में युद्ध भयंकर विनाश के संकेत दे रहे हैं। भारत सहित दुनिया का कोई भी देश इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में भारत सुरक्षा की दृष्टि से प्रसिद्ध कवि दिनकर जी के शब्दों में कहेंगे-

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिर हमें गाण्डीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।

14 नवंबर बाल दिवस पर देश के बच्चों को ढेर सारा प्यार-स्नेह! इस अवसर पर यह भी स्मरण कराते हैं कि गुरुगोविंद सिंह के साहबजादे जोरावर सिंह नौ साल तथा फतेहसिंह सात साल को इस्लाम धर्म कबूल न करने के कारण दिसंबर 1704 में दीवार में जिंदा चुनवा दिए गए थे। उनकी स्मृति में भारत सरकार के निर्णय के अनुसार अब हर वर्ष 26 दिसंबर को 'वीर बाल दिवस' मनाया जाया करेगा।

इस अंक में सभी मूर्धन्य रचनाकारों तथा पाठकीय प्रतिक्रिया देने वाले प्रबुद्धों का हृदय से साधुवाद! इस आशा के साथ मातृभूमि, मातृभाषा का सदा सम्मान हो, प्रेम हो, सद्भाव हो! विश्व का कल्याण हो!!

- डॉ. रमेश मिलन
मो.- 9029784346

❑❑❑

प्रधान संपादक-

डॉ. रमेश मिलन

आकाशवाणी पुणे केंद्र की
कार्यक्रम अधिकारी (हिंदी)

देवकी कुलकर्णी जी

एवं सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री सच्चिदानंद आवटी जी

को 'आसरा मुक्तांगन'
पत्रिका का हिंदी विशेषांक भेंट करते हुए।

आगामी अंक में...

साथियो! भारत उत्सवों का देश है। हम छोटे-बड़े सभी त्योहारों का उन्मुक्त होकर लुत्फ़ उठाते हैं। 'आसरा मुक्तांगन' समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान जैसे विषयों की धुरी पर निरंतर आगे बढ़ रही है। आप अपनी कविता, कहानी या अन्य लेख हमें हमारे निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं। आप अपने आलेख सीधे संपादक महोदय को भी भेज सकते हैं। 20 नवंबर 2024 तक मिले लेखों पर विचार किया जाएगा। आगामी अंक में नववर्ष और क्रिसमस पर भी हमें आपके आलेखों की प्रतीक्षा रहेगी।

ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com
व्हाट्सअप- 9152925759

जिज्ञासा समाधान-

मोहन शिरकर

कैसे बनी गिनीज़ बुक?

गिनीज़ बुक में दुनियाभर से असंभव काम करने वालों और असंभव कामों की सूची होती है। यह एक संदर्भ पुस्तक है जो हर साल दुनियाभर की अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित होती है। इसमें मानवीय उपलब्धियों और प्राकृतिक दुनिया की चरम सीमाओं से जुड़े रिकार्ड होते हैं।

गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स की शुरुआत साल 1955 में जुड़वां भाइयों नॉरिस और रॉस मैकव्हर्टर ने की थी। गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड मौजूदा विश्व रिकार्ड तोड़ने या स्थापित करने के लिए कोई पैसा नहीं देता है। गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड्स 2024 के संस्करण में दुनियाभर की 2638 रिकार्ड-तोड़ उपलब्धियां सम्मिलित हैं, जिनमें 60 से अधिक भारत की हैं। बुक में धारक का नाम आने से मान्यता, समर्थन, प्रसिद्धि जैसे लाभ मिलते हैं।

वर्तमान समय में इस बुक को 40 भाषाओं में प्रकाशित किया जाता है। इसकी पहुंच 100 से ज्यादा देशों में हैं। संगठन रिकार्ड बनाने और तोड़ने की प्रामाणिकता को सत्यापित करने के लिए रिकार्ड निर्णायकों की नियुक्ति करता है। 2008 से इस फैंचाइजी का स्वामित्व जिम पैटिसन ग्रुप के पास है, जिसका मुख्यालय 2017 में साउथ क्वे प्लाजा, कैनरी घाट, लंदन में स्थानांतरित हो गया। भारत में गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड का कार्यालय बी-41, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली-110013 में स्थित है।

❑❑❑

आध्यात्म-

ऋषिकेश शरण

दो मित्र भिक्षुओं की कथा

बुद्ध संघ में दो प्रकार के भिक्षु थे। एक वे जो शाक्य-मुनि के उपदेशों को सुनकर उन पर धारा प्रवाह प्रवचन इस प्रकार करते थे कि नौसिखुआ भिक्षुओं के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता था। इस प्रकार वे अपनी विद्वता सिद्ध करते थे। पंडित भिक्षुओं को पंडिताई के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता था।

दूसरी श्रेणी के भिक्षु संसार का त्याग कर धर्म और निर्वाण को प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहा करते थे। वे धर्म के पथ पर स्वयं चलते थे और अपने अनुभव के आधार पर वे बहुत कुछ प्राप्त कर लिया करते थे। लेकिन जब कभी वाद-विवाद होता तो पंडित भिक्षुओं के वाग्जाल से वे बाहर नहीं निकल पाते थे। पंडित भिक्षुगण बाजी मार ले जाते थे।

शाक्य मुनि को इस बात की पूरी जानकारी थी। एक दिन उन्होंने धर्म-सभा में समझाया, 'जो व्यक्ति ग्रंथों का पाठ याद कर लेता है पर उन पर आचरण नहीं करता वह वैसा ही है जैसा गाय चराने की नौकरी करने वाला व्यक्ति। उसका काम मात्र गाय चराना होता है तथा शाम में गायें गिनना। वह श्रमण का अधिकारी नहीं होता है। दूसरी ओर अगर कोई थोड़े ही ग्रंथों का पाठ करे पर उसके अनुकूल आचरण करे तो वह वैसा ही होता है जैसे वह स्वयं गाय का मालिक हो। उसे दूध, दही, मक्खन, घी, छाछ, सभी की प्राप्ति होती है।'

❑❑❑

आलेख-

श्रीहरि वाणी

हमारे पर्व और सनातन का चिंतन

वर्षा ऋतु के बाद मौसम बदलते समय चराचर प्रकृति में हो रहे संक्रमण कालीन परिवर्तनों से तालमेल बिठाने हेतु भारतीय मनीषियों ने एक सार्वजनिक व्यवस्था निर्मित की ताकि इस समय हम सब मानसिक...शारीरिक रूप से स्वस्थ ...सक्रिय रह सकें और पर्याप्त ऊर्जा, सामर्थ्य से आने वाले शीत काल में भी हमारी गति-जीवन चक्र व्यवस्थित रूप से प्रगति पथ पर चलता रहे यही हमारी सनातन जीवन पद्धति है।

कभी विचार तो करें, हम सब आज जिस सनातन संस्कृति की चर्चा सोशल मीडिया के माध्यम से, या कहें, प्रचार तन्त्र से प्रभावित होकर कर रहे हैं वह क्या है...?

गणेश चतुर्थी से बुद्धि-विवेक के 'प्रथम पूज्य' विघ्नहर्ता गजानन की स्थापना-विसर्जन के तुरन्त बाद अपने जन्मदाता पूर्वजों की अनन्त श्रृंखला के साथ सम्पूर्ण संसार को तृप्ति-संतुष्टि की कामना से पितृ पक्ष में श्रद्धांजलि...तर्पण-अर्पण और फिर सम्पूर्ण संसार की गति प्रदायनी, सर्जक महाशक्ति की पूरे नौ दिन तक आराधना से विजय पथ की ओर चेतना को अग्रसर करते...अनेक उत्सव मनाते...हम जीवन की समस्त भौतिक उपलब्धियों को पूर्ण करने वाली आदि शक्ति स्वरूपा महालक्ष्मी का स्तवन पंच दिवसीय दीपावली महापर्व के रूप में करते हैं।

इस सब के बीच अगर कभी विचार करें तो पाएंगे कि ऐसा बहुत कुछ है जिसपर सतत विचार-चिंतन करते सामान्य जन को सम सामयिक मार्गदर्शन प्रदान करना समकालीन प्रबुद्ध जनों का दायित्व है और तभी यह सनातन की सतत प्रवाहित धारा जीवन्त रही है...रह सकेगी।

भारत को भारतीय परिवेश में ही देखा...समझा... निर्देशित किया जाना सम्भव है ताकि भारत और भारत की सांस्कृतिक चेतना भारतीयता के साथ जीवित रहे...जीवन्त रहे।

संयुक्त परिवार...कुटुंब के साथ 'विश्व बंधुत्व की परिकल्पना' सिर्फ भारतीय सांस्कृतिक चेतना युक्त वैचारिकी में ही संभव है और यही सृष्टि की सर्वाधिक प्राचीन सनातन संस्कृति...भारत भूमि पर जन्मे अनेकानेक ऋषियों-महर्षियों-विचारकों, तत्ववेक्ता मनीषीयों ने समय-समय पर मानव सभ्यता के प्रारम्भ से आज तक अपने चिंतन-दर्शन में कहा, इसी क्रम में महावीर...बुद्ध और आधुनिक काल में महात्मा गाँधी के सत्य-अहिंसा के दर्शन को देखा-समझा जा सकता है।

यहाँ ध्यान देना होगा कि हमारे साथ...समानाँतर ही एवं बाद में विश्व के अनेक क्षेत्रों में पनपी सभ्यताओं ने ज्ञान-विज्ञान के अनेक सोपान स्पर्श तो किये परन्तु हमारी तरह सनातन प्रवाहित सांस्कृतिक सभ्यता...परम्पराओं की विविधवर्णी ...अनेक मत-मतान्तरों से लिपटी, सबको अपने साथ समेटे आगे बढ़ती, दर्शन-ज्ञान-विज्ञान के महानद स्वयं में समाहित करते...स्पर्श मात्र से तृप्ति प्रदान करती, पवित्र-पावन गंगा सरीखी सम्पूर्ण विश्व को आत्मिक शान्ति हेतु आकर्षित-आश्वस्त करती हमारी सांस्कृतिक चेतना आज भी गतिवान है।

पाश्चात्य जगत के पास बहुत कुछ तो है परन्तु हमारी तरह संयुक्त परिवार नहीं है, यही परम्परा और संस्कार-शिक्षा हमारी विशिष्ट धरोहर हैं जिन्हें पश्चिमी भौतिकवाद नष्ट करने पर उतारू है और हम हैं कि उसके पिछलग्गू बन खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी चलाने को आतुर हैं।

वर्तमान में देश के प्रसिद्ध विद्वान चिंतक, आलोचक, समीक्षक प्रो. कर्मन्दु शिशिर जी ने अपनी पुस्तक 'नव जागरण की निर्मिति' में 1830 में भारत आ कर यहाँ के मूल सांस्कृतिक ताने-बाने का गुप्त रूप से अध्ययन करने वाले

थॉमस मुनरो और मैकाले का उल्लेख करते उनके योजनाबद्ध सुनियोजित षड्यंत्र को बेनकाब किया है।

इन सबसे स्पष्ट होता है कि अपने ब्रिटिश साम्राज्य को लाभान्वित करने के उद्देश्य से हमारी सामाजिक सांस्कृतिक चेतना...सभ्यता को गहनता से समझ बूझ कर उनकी जड़ों को देखने समझने के बाद हमारी शिक्षण पद्धति और पारिवारिक संरचना को नष्ट-भ्रष्ट करने वाली दीर्घकालीन परिणामों वाली सुनियोजित नीतियाँ बनाकर हमें वास्तविक स्वाधीनता नहीं दी गयी बल्कि छलपूर्वक मात्र दिखावा किया गया, हम खुद को स्वतंत्र भले ही समझ रहे हों वास्तव में यह सच नहीं है।

हम आज भी उच्च शिक्षा के नाम पर अपने युवाओं को पढ़ाई के लिए विदेश भेजकर गौरव की अनुभूति करते हैं और दो लाख करोड़ से अधिक की भारी फीस विदेशी शैक्षिक संस्थानों को प्रतिवर्ष देते हैं...इतना ही नहीं इस शिक्षा से विकसित होनहार मेधा वाले हमारे युवा फिर उन्हीं विदेशियों की कम्पनियों में रोजगार हेतु जा कर उन्हें पुन: लाभान्वित करते हैं, यही थीं वे नीतियाँ जिनके कारण आज तक हमारे यहाँ की सभी भाषा-बोलियां अंग्रेजी के आगे बौनी दिखती हैं...हम अपनी भाषाओ में युवाओं को उच्च शिक्षा तक नहीँ दे पा रहे हैं, न हमारी भाषा बच पायी न हमारी सांस्कृतिक विरासत बच पा रही है...सब कुछ वैश्विक बाजार के पास गिरवी हो कर रह गया, हम समझ ही नहीं पा रहे कि कैसे हम, हमारा समाज, हमारी सामाजिक व्यवस्था-मर्यादा, रहन-सहन उन विदेशी बाजारों ने कब...कैसे खरीद लिया और लगातार यह सिलसिला जारी है...

वैश्विक बाजार को फायदा तभी होगा जब परिवार टूटेंगे वरना एक ही गृहस्थी में अनेक परिवार समाये रहेंगे तो विलासिता की अनावश्यक ढेर सारी वस्तुओं की खपत कहाँ होगी, भौतिकता की स्पर्धा हो तभी सामान बिकेगा, एकल परिवारों में व्यक्ति अकेला होगा...स्वच्छन्द होगा...स्वयं को संतुष्ट करने बाजार में आएगा...नहीं तो बाजार खुद ही उसके घर तक दस्तक देगा (अमेजॉन...जोमेटो...स्वेगी...फ्लिपकॉर्ट के रूप में...) सांस्कृतिक त्यौहारों का तात्विक स्वरूप बिगाड़ कर, घरेलू कारीगरो को मारकर ही केडबरी...पिज्जा...बर्गर ...केक...चॉकलेट से त्यौहार तभी मनाये जा सकते हैं जब घरों के वरिष्ठजन वृद्धाश्रम पहुंचा दिए जाएँ।

यही सब तो चाहता है पश्चिमी बाजार वरना बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कैसे चलेंगी...शायद इसीलिए बाजार ने अपनी असीमित ताकत से खरीद लिया है समूचे प्रचार तन्त्र ही नहीं बल्कि नीति नियंताओं...राजनैतिको...समाज के मार्गदर्शक बुद्धिजीवीयों आदि सभी को...तभी वे सब देखते सुनते भी चुप हैं।

उसी का परिणाम है कि आज हमारे पर्व त्यौहार स्नेहिल संबंधों में वृद्धि...नवीनता...आत्मिक आल्हाद...उल्लास के कम, परस्पर स्पर्धा-प्रदर्शन-दिखावा...बाहरी चमक-दमक में अपना वास्तविक उद्देश्य खो बैठे हैं...सम्पूर्ण राष्ट्र-समाज जिस मूलभूत इकाई 'परिवार' के मजबूत सूत्र से बँधा रहता था उसी संरचना पर प्रहार हो रहे हैं, परिवार-कुटुंब टूटेंगे, भौतिकता की आंधी में जब घरों की छत ही उड़ जाएगी...रिश्ते बिखर जायेंगे...बच्चे 'पालना घर' में और वरिष्ठ जन 'वृद्धाश्रम' में रहेंगे तो कौन...कैसे सहेजेगा त्योहारों और परम्पराओं में रची-बसी मर्यादा को...बात बहुत दूर तक जाएगी...प्रभावित सभी होंगे...सारे समाज और राष्ट्र सभी पर इसका दूरगामी दुष्प्रभाव निश्चित रूप से पड़ेगा।

आज तत्काल जरूरत है कि समाज के हित चिंतक, प्रबुद्धजन अपनी तटस्थता-चुप्पी छोड़ें...मानवीय मूल्यों...नैतिकता के विरुद्ध किसी भी प्रयास-बदलाव-कृत्य की स्पष्ट आलोचना-विरोध खुलकर करें...राष्ट्र-समाज हित में अपना मार्गदर्शन प्रदान करें वरना बढ़ते अनाचार की परिधि में एक न एक दिन वे सब भी आएंगे जो आज खुद को सुरक्षित समझ रहे हैं।

भूलें नहीं कि प्रबुद्धजनों की चुप्पी पर ही 'महाभारत' की पटकथा लिखी जाती है फिर उसकी 'जद' में सभी आते हैं...अछूता कोई नहीं रह पाता...

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध
(राष्ट्र कवि दिनकर जी..)

श्रीहरि वाणी
साहित्यकार, समीक्षक
92/143 संजय गाँधी नगर, नौबस्ता
कानपुर-208021
सम्पर्क- 9450144500 / 993518858
❑❑❑

आलेख-

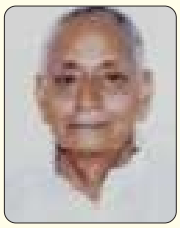

पीतम सिंह 'प्रियतम'

दीपावली पर्व : क्यों और कैसे

ओइम् ऋतञ्च सत्यञ्चामीद्धात्तपसोऽध्यजायता
ततो रात्र्य जायत ततः समुद्रोऽअर्णवः!!1!!
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायता।
अहोरात्राणि विदधाद्विश्वस्य मियतो वशी!!2!!
सूर्यचंद्र मसौधाता यथा पूर्वम कल्पयत।
दिवञ्च, पृथ्वीञ्चान्तिरिक्षमथो स्वः !!3!!

-ऋग्वेद-10-190-1-3

ऋग्वेद के इन मंत्रों में बताया गया है कि परमपिता परमेश्वर ने अनंत सामर्थ्य से सब जगत के साथ सूर्य चंद्र लोक रचे। उसी ईश्वर ने सहज भाव से जगत के रात्रि, दिवस, घटिका, पल-क्षण आदि रचे।

'जब-जब विद्यमान सृष्टि होती है उससे पूर्व सब आकाश अंधकार रूप रहता है। इसी अंधकार में सब जगत के पदार्थ और जीव ढके रहते हैं। इसी का नाम महारात्रि है। ऋग्वेद के इन मंत्रों के उल्लेख करने का उद्देश्य है कि अंधकार से प्रकाश की ओर जाना आदिकाल से चल रहा है। यही दीपावली है। दीपावली का संदेश और उद्देश्य भी उल्लेखनीय है।'

वेद की ऋचा भी है- अस्तो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योंमाऽमृतम्गमय।

परमात्मा से प्रार्थना की है- हे परमात्मा! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार के अज्ञान से ज्ञान के प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले चल।

पंक्तियाँ बचपन की भी याद हैं-

आई दीवाली, आई दीवाली, चमक उठी है रजनी काली नभ ने भी तारे छिटकाकर, खूब मनाई है दीवाली।

समाज में लोकमत और शास्त्र मत दोनों अभिन्न अंग हैं किंतु लोकमत शास्त्र मत पर हावी रहता है। शास्त्र मत पर चलना कठिन है- लोकमत सुविधानुसार होता है। वैदिक विद्धानों ने (ऋषियों ने) मानव जीवन के लिए जो दिशा-निर्देश किये हैं उनका पालन किये बिना हमारा जीवन स्वस्थ, सुखमय, सफल, सार्थक नहीं हो सकता।

इसीलिए ऋषियों ने प्रकृति को आधार मानकर ही पर्व-त्यौहार मनाने की परंपरा डाली! 'पर्व' नाम भी प्रकृति को आधार मानकर ही रखा गया। गन्ने में जो 'पोरी' होती है, हर पोरी पर एक गाँठ होती है जो पूरे गन्ने को कई पोरियों में विभक्त करती है। जड़ से लेकर आखिर तक गन्ने में उतनी पोरियाँ होती हैं जितने वर्ष में पर्व। पोरियों के आधार पर ही पर्व नाम पड़ा।

दीपावली का पर्व (त्यौहार) अन्य पर्वों के साथ गन्ने रूपी वर्ष की एक पोरी की तरह ही है।

दीपावली का वैदिक पर्व सिद्धांत नवस्येष्टि यज्ञ के नाम से जाना जाता है। यह आदिकाल से चला आ रहा है। वर्ष में दो बार नवस्येष्टि यज्ञ होते हैं। जो नए अनाज के आगमन की खुशियों का स्वागत करने का एक माध्यम है। साधन है। आर्य पर्वपद्धति के अनुसार वेद मंत्रों में ऋतुएँ और अनेक अन्नों के नाम आए हैं। शारदीय नवस्येष्टि दीपावली कार्तिक वदी अमावस्या को मनाया जाता है। नवीन धान की खील और सामग्री में मिलाए जाते हैं। यज्ञ के लिए वेद मंत्र हैं-

'ग्रीष्मो, हेमंत, उतनो वसंतः शरद्वर्षा (शरद्वर्षा) सवितन्नो अस्तु। तेषामृतूनां शतशारदानां निवात एषाममये स्याम्।'

म.ब्रा. 2-1-9 से 12, खं 7 सूत्र 10-11

अंधियारी रात होती है। अंधेरा दूर करने के लिए दीप जलाने का प्रयोजन पहले से है।

त्रेता युग में भगवान राम राक्षसों-रावण का वध करके 14 वर्षों का वनवास समाप्त करके अयोध्या आए थे। इस

खुशी के उपलक्ष्य में उन्होंने श्रीराम के सम्मानार्थ- दीप जलाकर अपनी भावनाओं को प्रकट करने की परंपरा प्रारम्भ की। लोकमत शास्त्रमत पर भारी पड़ गया। तब से लेकर आज तक दीपावली की मान्यता श्रीराम के अयोध्या लौटने से जुड़ गई। वैदिक परंपरा में ऐसा नहीं है। वैदिक मान्यता के अनुसार केवल दीवावली नहीं अन्य पर्व भी, होली, मकर संक्रांति, श्रावणी, जन्माष्टमी आदि भी किसी न किसी रूप में प्रकृति को आधार मानकर ही मनाए जाने चाहिए। किंतु लोकमत अपनी सुविधानुसार अपनी मान्यतानुसार दीपावली के साथ अन्य त्यौहारों को मनाता आ रहा है।

दुर्भाग्यवश यह महाभारत के युद्ध के पश्चात वैदिक विद्वानों व वीरों के अभाव के कारण लोकमत को दिशा निर्देश का भी अभाव रहा। परिणामतः देश में अज्ञान, पाखंड, अंधविश्वास बढ़ता गया।

भगवान राम क्योंकि बैसाख में पहुँचे तो उसके बाद उनके राजतिलक की तैयारी की गई हो। दशहरा भी दीपावली से पहले मनाया जाता है। त्रेतायुग में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक स्थिति भिन्न थी। त्यौहारों को भी वर्ण के अनुसार जोड़ दिया गया। दशहरे का त्यौहार क्षत्रियों का, दीवाली का त्यौहार व्यापारी वर्ग वैश्यों का, होली का पर्व शूद्रों से जोड़ दिया गया। यह सब बदलाव 'महाभारत' युद्ध के बाद हुआ। विद्धानों का अभाव हो गया। अज्ञानता का अंधकार देश में चहुँओर फैल गया। वेदों का ज्ञान न होने के कारण पाखंड, अंधविश्वास, धर्म के नाम पर अधर्म ने समाज में विकृति फैलाने में प्रमुख भूमिका निभाई। गुरुकुल पद्धति का लोप हो गया। पश्चिमी सभ्यता हावी हो गयी। कुछ सुधार आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद के समय हुए किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तो और अधिक पाखंड, अंधविश्वास, अज्ञान कुरीतियाँ छा गईं। पर्वों की पवित्रता समाप्त हो गई। होली पर हुड़दंग, दीवाली पर पटाखे- प्रदूषण का कारण हमारी संपन्नता और खुशियाँ प्रकट करने का माध्यम बन गये।

प्रीतम सिंह 'प्रियतम'
सी-6, पूर्वी ज्योति नगर
दिल्ली-110093

❑❑❑

गतिविधियां-

आसरा फाउंडेशन
द्वारा विजयादशमी के अवसर पर
मुलुंड, मुंबई और ऐरोली, नवी मुंबई में
पुस्तकों का निःशुल्क वितरण

डॉ. किशोर सिन्हा

अनूठा और भास्वर: बस्तर का दशहरा

दरअसल 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद जिन देशी रियासतों का भारत में विलय हुआ था, 'बस्तर रियासत' उनमें से एक थी। बस्तर का क्षेत्रफल केरल राज्य से भी अधिक है, जिसे और अलग एवं विशिष्ट बनाती हैं यहां की लोक-संस्कृति, रीति-रिवाज पर्व-त्यौहार और परंपरायें।

इनमें दशहरा एक ऐसा त्यौहार है जिसका आरंभ पूरे देष में आश्विन-शुक्ल प्रतिपदा से होता है; लेकिन बस्तर में ये त्यौहार आश्विन-कृष्ण अमावस्या या पितृमोक्ष अमावस्या से शुरू होता है।

असल में बस्तर-दशहरे का इतिहास सन् 1411 से प्रारंभ होता है और ये अत्यंत रोचक है कि इसका प्रथम अनुष्ठान बस्तर की तत्कालीन राजधानी, आज के ग्राम 'मंधोता' में संपन्न हुआ था। संवत् 1467 तक बस्तर की राजधानी 'मंधोता' ही रही थी। यही वो समय था जब मुगलों का आक्रमण 'मंधोता' पर हुआ, पर लाख कोशिशों के वे इसे जीतने में कामयाब नहीं हो पाये। तब बस्तर के तत्कालीन शासक पुरुषोत्तम देव, सुरक्षा की दृष्टि से राजधानी 'मंधोता' से हटाकर 'बस्तर' ले गये। तब से ग्यारहवीं पीढ़ी के राजा दलपत देव के शासन-काल, सन् 1771 तक दशहरा बस्तर में आयोजित होता रहा। इसी वर्ष बस्तर पर मराठों और मुगलों का, एक के बाद एक आक्रमण हुआ; पर वे राजा दलपत देव से जीत नहीं पाये और हार कर भाग खड़े हुए। फिर भी, बस्तर पर आक्रमणकारियों का खतरा हमेशा बना रहेगा, ये सोच दलपत देव नई राजधानी की खोज में जुट गये और ये राजधानी उन्हें मिली इन्द्रावती नदी के मनोहारी तट के निकट के ग्राम 'जगतूगुड़ा' के रूप में। ये 'जगतूगुड़ा' ही कालांतर में शब्द-विपर्यय से बदलकर 'जगदलपुर' हो गया। तब से लेकर अब तक दशहरा जगदलपुर में 248 वर्षों से भी अधिक समय से संपन्न हो रहा है। यहां के दशहरे की सबसे बड़ी खासियत ये है कि इसमें देश के अन्य भूभागों की तरह मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापित नहीं की जाती, बल्कि राजा के 'छत्र' को इसमें विशिष्ट स्थान मिलता है।

बस्तर के दशहरे का आरंभ 'काछनगादी' से होता है। 'काछनगादी' का अर्थ होता है- काछिन देवी को गद्दी प्रदान करना। काछिन देवी बस्तर की अनुसूचित जाति 'मिरगान' की कुलदेवी मानी जाती हैं, जिनका मंदिर जगदलपुर में पथरागुड़ा जाने वाले रास्ते में स्थित है। इसी मंदिर में 'सिरहा' (पुजारी) देवी का आवाहन् करता है। इस आवाहन् के उपरांत मिरगान जाति की एक कुंवारी कन्या पर देवी आती है। देवी के प्रतीक के रूप में इस कन्या को बेल के कांटों से बने झूले और कांटों से बनी हुई गद्दी पर लिटा कर, उसे झुलाते हुए सिरहा देवी को प्रसन्न करना होता है। इसके बाद देवी की विधिवत् पूजा-अर्चना करने के पश्चात् देवी से दशहरा मनाने की अनुमति मांगी जाती है। माना जाता है कि देवी प्रसन्न हो अनुमति प्रदान करती हैं। ये रस्म ही 'काछनगादी' कहलाता है।

बस्तर दशहरे के दूसरे दिन आश्विन-शुक्ल प्रतिपदा को 'जोगी बिठाई' की जाती है। जगदलपुर के सीरासार भवन में जोगी बिठाने की रस्म पूरी होती है। भवन के बीचोबीच एक गड्ढा बना कर सुरक्षित रखा गया है, जिसके अन्दर 'हल्बा' जाति का एक आदिवासी संत लगातार नौ दिनों तक योगासन में बैठता है। जोगी बिठाये जाने के पीछे की मान्यता ये है कि दशहरा निर्विघ्न समाप्त हो, इस उद्देश्य से वर्षों पूर्व एक आदिवासी संत, अपने तरीके से योग-साधना कर रहा था। तब

से ये प्रथा अब तक चली आ रही है।

इसके बाद आश्विन-शुक्ल द्वितीया से लेकर सप्तमी तक प्रतिदिन चार पहियों वाला विशालकाय लकड़ी का रथ खींचा जाता है। इस रथ पर पहले, बस्तर का जो भी राजा होता था, वो फूलों की पगड़ी पहनकर बैठता था, इसलिये इसे 'फूल-रथ' कहा जाता है। रथ की पूरी साज-सज्जा भी फूलों से की जाती है। इस रथ में दंतेश्वरी देवी का छत्र भी होता था। ये रथ मावली माता की परिक्रमा करता हुआ वापस अपने स्थान पर पहुंचता है। ये परिक्रमा सीरासार चौक से शुरू होकर गोल बाजार, गुरूनानक चौक होते हुए दंतेश्वरी मंदिर तक पूरी होती है। अब राजा तो रहे नहीं, इसलिये मात्र दंतेश्वरी देवी के छत्र के साथ परिक्रमा पूरी की जाती है। इस रथ को सैकड़ों की संख्या में आदिवासी भक्त खींचते हैं।

आश्विन-शुक्ल अष्टमी को रथ-यात्रा नहीं होती। इस दिन दुर्गाष्टमी होती है। 'निशा जात्रा' का कार्यक्रम मध्य रात्रि को दंतेश्वरी मंदिर से जुलूस के रूप में शुरू होकर इतवारी बाजार के निकट पूजा-स्थल तक पहुंचता है, जहां देवी का अनुष्ठान किया जाता है।

आश्विन-शुक्ल नवमी की संध्या को सीरासार में बैठे योगी को समारोहपूर्वक उठाया जाता है, उसे भेंट आदि देकर सम्मानित किया जाता है। इसी दिन रात नौ बजे 'मावली परघाव'- अर्थात् मावली देवी की अगवानी का कार्यक्रम होता है। इसमें दंतेवाड़ा से डोली में लाई गयी मावली-मूर्ति का श्रद्धापूर्वक स्वागत् किया जाता है। मावली माता यहां के लोकमानस में दुर्गा जी के प्रतीक-रूप में हैं। निमंत्रण पाकर मावली माता ही दंतेवाड़ा की दंतेश्वरी देवी के बदले जगदलपुर आती हैं। इस डोली को कंधे पर उठाकर पुजारी और राजपरिवार के लोग दंतेश्वरी मंदिर तक पहुंचाते हैं।

आश्विन-शुक्ल दशमी, यानी विजयादशमी के दिन 'भीतर रैनी' और इसके दूसरे दिन 'बाहर रैनी' की प्रथा है। इन दोनों दिनों में आठ चक्के के रथ से परिक्रमा होती है। इसके लिये प्रत्येक वर्ष नया रथ बनाया जाता है। एक वर्ष चार चक्के का, उसके दूसरे वर्ष आठ चक्कों के रथ का निर्माण कर, कुल बारह चक्कों का चक्र दो साल में पूरा किया जाता है। जब परिक्रमा पूरी हो जाती है, तब किलेपाल के माड़िया आदिवासी इस रथ को प्रथानुसार चुराकर कुम्हड़ाकोट ले जाते हैं। वहां पथरागुड़ा के पीछे साल वृक्षों से आच्छादित वन में रथ को ले जाकर वे देवी को नये चावल का अन्न

चढ़ाकर पूजा-विधान करने के उपरांत प्रसाद पाते हैं। इसके ठीक दूसरे दिन, इस रथ को वापस परिक्रमा कराते हुए दंतेश्वरी देवी के मंदिर तक पहुंचाया जाता है, जिसे 'बाहर रैनी' कहा जाता है। यहां आकर बस्तर के दशहरे का दूसरा चरण पूरा होता है।

आश्विन-शुक्ल द्वादशी को दशहरा के निर्विघ्न समाप्त होने की खुशी में काछिन देवी के मंदिर के पास पूजा-विधान कर 'काछिन जात्रा' संपन्न की जाती है। इसी दिन सीरासार भवन में परंपरानुसार मुरिया और माड़िया दरबार आयोजित होता है। इसमें बस्तर के सुदूर क्षेत्रों से आये आदिवासी मांझी, मुखिया, चालकी आदि अपनी समस्यायें शासन के प्रतिनिधि यों के समक्ष रखते हैं, जहां उनकी समस्याओं के निराकरण का प्रयास किया जाता है।

बस्तर-दशहरा के अंतिम चरण में त्रयोदशी के दिन समस्त ग्रामीण क्षेत्रों से आये देवी-देवता को स्थानीय गंगामुंडा-स्थित मावली शिविर के पास पूजा-मंडप में विदाई दी जाती है। इसे 'देव-सम्मेलन' भी कहा जाता है।

बस्तर-दशहरा भारत में आयोजित होने वाले अन्य दशहरों से इस मायने में भिन्न है कि इसका आयोजन लगभग पन्द्रह दिनों तक चलने वाली एक अलिखित प्रक्रिया एवं विधि-विधान के अन्तर्गत, सर्व-स्वीकृति से लगातार होता रहता है। ये अवश्य है कि आज उसके प्राचीन स्वरूप में समय के अनुसार कुछ-कुछ परिवर्तन भी दृष्टिगोचर हो रहा है।

मां दुर्गा का बस्तर के दशहरा से एकमात्र संबंध इस तरह से जुड़ता है कि मावली माता को यहां के लोकमानस में दुर्गा जी के प्रतीक-रूप में देखा जाता है जो निमंत्रण पाकर दंतेवाड़ा की दंतेश्वरी देवी के बदले जगदलपुर आती हैं। लेकिन देश के बाकी हिस्से के लिए 'दंतेवाड़ा' एक महत्वपूर्ण शक्तपीठ के रूप में ख्यात् है।

यदि आपकी आंखों से गुजरे तो बस्तर का दशहरा अपने-आप में एक अनूठा अनुभव है। मैंने तीन वर्षों तक इस अनूठे अनुभव को आत्मसात् किया है। इसी आधार पर कह सकता हूं कि बस्तर के दशहरे के अभूतपूर्व दृश्यों से गुजरना हो तो आपको एक बार बस्तर अवश्य जाना चाहिए।

डॉ. किशोर सिन्हा (पटना)
वरिष्ठ साहित्यकार / नाटककार

❑❑❑

आलेख-

डॉ. सुनील देवधर

दीपोत्सव- संस्कृति का पर्व

कार्तिक द्वादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक के मनोन्मेष का पर्व दीपावली। देवी नारायणी के पूजन का दिवस- दीपावली।

भगवती लक्ष्मी के आविर्भाव की अनेक गाथाएं व प्रसंग हमारे पुराणों और धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार सृष्टि के आदि में- श्रीकृष्ण के महारास के अवसर पर उनके वामांग से, स्थिर यौवना भगवती लक्ष्मी प्रकट हुई। समुद्र मंथन से लक्ष्मी के प्रकट होने की कथा प्रचलित है। इसी पुराण के अनुसार, दुर्वासा के शाप के कारण लक्ष्मी ने स्वर्ग त्यागा और फिर हरि की आज्ञा मानकर समुद्र की कन्या बनी। भगवान की रचि लीला के कारण ही देवों दानवों में संघर्ष के फलस्वरूप समुद्र-मंथन हुआ और लक्ष्मी प्रकट हुई। धम्मपद के अनुसार पूर्व दिशा के दिक्पाल धतरट्ठ की पुत्री है लक्ष्मी। चीनी बौद्ध ग्रन्थों में, कुबेर के प्रमुख पार्षद मणिभद्र की पुत्री और जापानी बौद्ध कथाओं में- हरीति की कन्या स्वरुपा हैं देवी लक्ष्मी।

देवी लक्ष्मी अन्नपूर्णा हैं, लाभ स्वरूपा है। उनके बिना सुखी जीवन की कल्पना संभव नहीं। इसीलिए न केवल भारत बल्कि विश्व के कई अन्य देशों में भी लक्ष्मीपूजन महोत्सव या प्रकाश पर्व मनाये जाने की परम्परा है।

नवम्बर- ईसा से कुछ वर्ष पूर्व विश्व में ये महोत्सव इसी रूप में मनाया जाता था। जहाँ-जहाँ आर्य संस्कृति का प्रभाव रहा- वहाँ वहाँ दीप पर्व की महत्ता देखी गई है। मिस्रवासी माह के दूसरे सप्ताह के प्रारंभ में भगवान आसिरिस और उनकी पत्नी ईसिस के प्रति श्रद्धावनत होकर ये पर्व मनाते हैं। आसिरिस पोषण के देवता- यानी भारतीय मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु और ईसिस- रोटी यानी पोषण की देवी-अर्थात-भगवती लक्ष्मी। जापान और चीन में आज भी

सितम्बर माह में पितृपक्ष के रूप में पूर्वजों एवं देवताओं का आह्वान करने की दृष्टि से ये पर्व मनाया जाता है।

भारत में दीपावली का पर्व वसुबारस अर्थात कार्तिक द्वादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक मनाते हैं। वसुबारस गो-पूजन है। बछड़े को दूध पिलाती गाय का पूजन इस दिन होता है। फिर धनतेरस आती है। धनतेरस, आरोग्य के देवता धन्वंतरी का जन्मदिन है। आरोग्य जीवन का आधार है, और सुखी जीवन के लिए आवश्यक भी। अतः आरोग्य जीवन की कामना का पर्व ही धनतेरस है। और फिर आता है प्रकाश पर्व दीपावली।

जगमगाते दीपों ने शताब्दियों से यही संदेश दिया- तमसो मा ज्योतिर्गमय। अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने की कामना। अंधकार चाहे अज्ञान, दरिद्रता अथवा दुर्बलता का ही क्यों न हो, इन सब पर विजय का पर्व है दीपावली। मान्यता है कि भगवान राम जब अत्याचार और अन्याय के अंधकार रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर, अयोध्या लौटे, तब समस्त अयोध्या में नगरवासियों ने घर-घर घी के दिये जलाकर, क्षमा, शील और शक्ति के प्रकाश रूपी प्रभु राम का स्वागत किया।

दीपावली के इसी दिन से किसान कहीं अपनी भूमि से धान की फसल प्राप्त करने की तैयारी करता है, तो कहीं गेहूँ की बुवाई की। वणिक वर्ग के लिये इस दिन का विशेष महत्व है। उनके बही खाते का हिसाब किताब, लेन देन को, पुनर्निधारत करता है ये दिन देवी लक्ष्मी के हाथ में गेंहूँ की बालियाँ श्रेष्ठ कृषि, दूसरे हाथ का मंगलघट जीवन रस की पूर्णता, तीसरे हाथ का कमल कला, सौन्दर्य और संस्कृति का प्रतीक और चौथे हाथ का चक्र, काल के अनन्त प्रवाह की ओर संकेत करता है।

काल का प्रवाह जिससे कोई भी समाज, व्यवस्था या देश अछूता नहीं रह सकता। कहना होता है कि भारत प्रभावित है समय चक्र से। दीपावली, यदि व्यक्ति की समृद्धि का पर्व है, तो राष्ट्र के जीवन की श्री समृद्धि और यश और और क्यों न बढ़े? विश्व को शान्ति, एकता, चरित्र और नैतिकता की शिक्षा देने वाला भारत- आज अपनी ही समस्याओं से जूझ रहा है।

सामाजिक विषमता का अंधियारा क्यों बढ़े? जातिवाद, सम्प्रदायवाद और भाषा के झगड़े क्यों बढ़ें? अच्छी नीतियों और प्रयासों के उपरांत भी- अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी और महंगाईरूपी अंधकार का नाश क्यों नहीं हुआ- अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं मिले? शायद इसलिये कि व्यक्ति के चरित्र ने राष्ट्र के चरित्र को धोखा दिया? व्यक्तिगत ईमानदारी की कमी ने भ्रष्ट आचरण (भ्रष्टाचार) को बढ़ावा दिया। निहित स्वार्थों ने सामाजिक भावना और व्यक्ति की व्यापकता को समेट लिया।

हमने दिया तो जलाया लेकिन दीपक की तरह जलना न सीखा। दीपक स्वयं जलकर जग को प्रकाश देता है। हमारे कई महापुरुषों ने अपने जीवन को जलते दीपक सा बनाया था। उन्होंने खुद जलकर जो प्रकाश दिया, उसी कारण भारत श्रद्धा पुरुषों का राष्ट्र बना। राष्ट्रीय जीवन पर छा रहे अंधियारे को दूर करने के लिये- हमें दीपक बनना होगा, नये संकल्प करने होंगे। समृद्धि की प्रतीक लक्ष्मी- मात्र दीप जलाने, नैवेद्य चढ़ाने और आरती उतारने से नहीं आती। हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने से उजाला नहीं होता। जीवन का आधार ही कर्म है- उद्योग है।

उद्यमेनही सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः
नहि सुप्तस्य सिंहस्थ प्रविष्यन्ति मुखे मृगाः

समाज का जीवन सुधरेगा कर्म से। लक्ष्मीपूजन के इस पावन पर्व पर दीप जलाने के साथ-साथ अपने अन्तर्मन में भी एक दीप जलाएँ। पहले स्वयं प्रकाशित हों। न केवल राष्ट्र बल्कि विश्व को आलोकित करने का व्रत लें और सार्थकता दें इस दीपोत्सव को।

डॉ. सुनील देवधर
9823546592
E-mail: sunilkdeodhar@gmail.com

❑❑❑

लघुकथा-

डॉ. लतिका जाधव

देवी

धीमी खुशबुओं से रास्ता महक उठा था, सुबह की धूप खिल रही थी। धूप, अगरबत्तियां और फूलों की महक से खिलता मंदिर का रास्ता। जो भारत के सभी धर्मस्थलों की विशेषता है। नवरात्रि पर्व शुरू हो गया था। देवी माता का मंदिर जहाँ श्रद्धालुओं की भीड़ थी, वहाँ से गुजरते हुए सृष्टि को ऑफिस जाना था। रिक्शा ऐसी भीड़ से निकालते हुए चलाना ड्राइवर के लिए भी सचमुच मुश्किल काम था। सृष्टि इस बात से खुश थी, आज आफिस ने दोपहर बाद सबको छुट्टी दे दी थी। कल दशहरे के लिए सबको खरीदारी, घर में तैयारियां जो करनी थी।

सृष्टि ऑफिस आ गई, दरवाजे में उससे पहले माधवी खड़ी थी, 'सृष्टि, आज तो एकदम साड़ी पहनकर आ गई'।

सुनकर सृष्टि हंसने लगी। रूपा समझ गई थी, 'फिर आज यहां से जाते समय मंदिर जो जा रही है' सृष्टि को सबने घेर लिया था।

सृष्टि सबको देखते हुए बोली, 'सब के सब जासूस हो। मेरी हर बात का पता लगाकर रहते हो'।

सब हंसते हुए अपने टेबल पर काम में जुट गए। ऑफिस का सेवक सृष्टि के पास आया, 'मैम आपका यह एमेजॉन से पार्सल आया है'।

फिर से सबकी नजरें सृष्टि की तरफ लग गई। सृष्टि ने तुरंत पार्सल खोला। एक स्कार्फ सा हल्के वजन का शाल था। सबको दिखाकर हंसते हुए उसने अपने रोजाना कि बैग में शॉल रख दिया।

आफिस छोडने से पहले सृष्टि ने टेबल के ड्रावर से सफेद छोटा लिफाफा निकाला। बैग से पैसे निकाल लिफाफे मे हजार रुपये रख दिए। लिफाफा आंखों से लगाकर बैग में रख दिया।

देवी माता मंदिर का परिसर नवरात्रि में हमेशा की तरह भीड़ भरा था। वह रिक्शे से उतरकर मुख्य द्वार के पास गई। श्रद्धालुओं की कतार इतनी लंबी थी, देखकर वह सोच में पड़ गई। कतार में खड़े रहने की हिम्मत करना उसके लिए मुश्किल था। सृष्टि ने मुख्य द्वार से दुर्गा माता को नमन किया। वह प्रदक्षिणा करते हुए दान पेटी तक गई। दोनों हाथों से नमन करते हुए बैग से लिफाफा निकालकर दान महोत्सव में सरका दिया।

मंदिर का कायापलट हो रहा था। अब पेडों के नीचे बैठने के लिए बेंच रखें थे। भीड़ में भी बगीचे ने रौनक बढ़ा दी थी। वह खाली जगह देख बेंच पर बैठ गई।

आंखों के सामने बचपन का वह मंदिर, नवरात्रि और ननिहाल की यादें उभर आई। मौसी और नानी देवी माता के लिए नवरात्रि पर्व में साड़ी लेकर मंदिर जाती थी, देवी की पूजा करती थी। सृष्टि यह नाम नानी और मौसी को अलग सा लगता था। ननिहाल मे सृष्टि को सब 'देवी' नाम से पुकारते थे।

मां ने मायकेवालों को समझाते हुए कहा था, सृष्टि भी देवी का ही रूप है। लेकिन नानी के लिए देवी जैसा शक्ति रूप नाम कोई और नहीं हो सकता था।

मौसी बहुत जल्द इस दुनिया को अलविदा कहकर गुजर गई। जब तक नानी थी, उसने नवरात्रि पर्व में देवी के लिए साडी और पूजा सब कुछ किया।

वह जब थक गई, तब सृष्टि नानी को विश्वास देती रही, हम मंदिर में दान करेंगे। दान करना भी मंदिर के लिए जरूरी है। वह पैसा मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए काम आता है। मैं हर साल नवरात्रि में कुछ पैसे मंदिर की दान पेटी मे रख दूंगी।

इस बात पर नानी को गहरा ऐतराज हुआ था। फिर धीरे धीरे कुछ जानकारों के समझाने से मान गई। सृष्टि का परिवार ही अंतिम समय में नानी का परिवार था। सब नानी को अंतिम समय तक प्रेम और सम्मान देते रहे।

मां तो हमेशा घर और काम मे उलझी हुई थी। नानी से सृष्टि का ऐसा नाता था, जो वह धीरे-धीरे सृष्टि की हर बात से सहमत होने लगी थी। सृष्टि के जन्म से ही नानी का बेटी से ज्यादा नातिन से लगाव हो गया था। नानी के जाने के बाद हर त्यौहार, हर उत्सव में सृष्टि बचपन में खो जाती थी। नानी की बहुत याद आती थी।

यह कैसी वंशबेल होती है? सृष्टि सोच रही थी। हजारों सालों से यह सिलसिला चल रहा है। आज हम विज्ञान युग में जी रहे हैं। लेकिन संस्कृति को आगे लेकर जाना वंशबेल के सिवाय कौन करता है? या कौन करेगा? तभी करीब से आती किसी बच्चे की हंसी ने उसकी विचार श्रृंखला को तोड़ दिया। हंसी सुनकर वह उधर देखने लगी। एक दो-तीन साल की बच्ची थी। बगीचे में पड़ा पौधों को पानी देने का पाईप उठाकर पानी से खेलते हुए हंस रही थी।

'देवी...देवी...' उस बच्ची को पुकारती हुई एक औरत उसके पास दौड़कर आ गई। पानी से खेलते हुए वह बच्ची पूरी भीग गई थी। सृष्टि भी खड़ी हो गई, वह औरत सृष्टि को देखकर बोली, 'दीदी, आपके पास टिश्यू पेपर है'?

सृष्टि अचानक आयी इस मांग की उम्मीद नहीं कर रही थी। उसने बैग खोलकर देखा एक रूमाल था। लेकिन वह उसने इस्तेमाल किया था। ऐसा रूमाल बच्चों को देना

ठीक नहीं था। बच्ची ठंड में थोड़ी देर बाद ठिठुरने लगेगी।

उसने अपना आज आया शाल बच्ची की मां को दिया, 'आप देवी को इसमें लपेट कर उठाना'।

वह खुश हो गई, 'लेकिन दीदी आपको मैं यह कैसे वापस करूंगी'।

सृष्टि को हंसी आ गई, 'दीदी कहती है, फिर वापस भी करती है, देवी को दिया वापस कैसे लूंगी' उसने देवी के गाल हल्के से थपथपाते हुए कहा।

'दीदी, यह देवी ऐसी ही है, अपनी ही मनमानी करती है' देवी की मां शिकायत करने लगी। सृष्टि को हंसी आ गई। देवी अभी भी हंस रही थी, मां उसको शाल मे लपेटकर खड़ी हो गई।

सृष्टि भी वहां से जाने के लिए मुख्य द्वार की तरफ मुडी, एक बार देवी और उसकी मां को देखकर हाथ हिलाया। देवी अभी भी हंस रही थी। मां के हाथों में हाथ लिए सृष्टि को बिदाई दे रही थी।

देवी का वह हंसता हुआ चेहरा सृष्टि को खुश कर गया। पुरानी यादें, उदासी उस हंसी में लुप्त हो गई थी। नयी रोशनी सी लिए, मन ताजगी से भर उठा था।

द्वारा- लतिका जाधव, पुणे, महाराष्ट्र

❑❑❑

संजय भारद्वाज

स्टैच्यू...

(1)

संध्याकाल है। शब्दों का महात्म्य देखिए कि प्रत्येक व्यक्ति उनका अर्थ अपने संदर्भ से ग्रहण कर सकता है। संध्याकाल, दिन का अवसान हो सकता है तो जीवन की सांझ भी। इसके सिवा भी कई संदर्भ हो सकते हैं। इस महात्म्य की फिर कभी चर्चा करेंगे। संप्रति घटना और उससे घटित चिंतन पर मनन करते हैं।

सो अस्त हुए सूर्य की साक्षी में कुछ सौदा लेने बाजार निकला हूँ। बाजार सामान्यत: पैदल जाता हूँ। पदभ्रमण, निरीक्षण और तदनुसार अध्ययन का अवसर देता है। यूँ भी मुझे विशेषकर मनुष्य के अध्ययन में खास रुचि है। संभवत: इसी कारण एक कविता ने मुझसे लिखवाया- 'उसने पढ़ी आदमी पर लिखी किताबें, मैं आदमी को पढ़ता रहा।'

आदमी को पढ़ने की यात्रा पुराने मकानों के बीच की एक गली से गुजरी। बच्चों का एक झुंड अपने कल्लोल में व्यस्त है। कोई क्या कह रहा है, समझ पाना कठिन है। तभी एक स्पष्ट स्वर सुनाई देता है, 'गौरव स्टेच्यू!' देखता हूँ एक लड़का बिना हिले-डुले बुत बनकर खड़ा हो गया है। 'ऐ, जल्दी रिलीज कर। हमको खेलना है', एक आवाज आती है। स्टैच्यू देनेवाली बच्ची खिलखिलाती है, रिलीज कर देती है और कल्लोल जस का तस।

भीतर कल्लोल करते विचारों को मानो दिशा मिल जाती है। जीवन में कब-कब ऐसा हुआ कि परिस्थितियों ने कहा 'स्टैच्यू' और अपनी सारी संभावनाओं को रोककर बुत बनकर खड़ा होना पड़ा! गिरना अपराध नहीं है पर गिरकर उठने का प्रयास न करना अपराध है। वैसे ही नियति के हाथों स्टैच्यू होना, यात्रा का पड़ाव हो सकता है पर गंतव्य नहीं। ऐसे स्टैच्यू सबके जीवन में आते हैं। विलक्षण होते हैं जो स्टैच्यू से निकलकर

जीवन की मैराथन को नए आयाम और ऊँचाइयाँ देते हैं।

नये आयाम देनेवाला ऐसा एक नाम है अरुणिमा सिन्हा का। अरुणिमा, बॉलीबॉल और फुटबॉल की उदीयमान युवा खिलाड़ी रही। दोनों खेलों में अपने राज्य उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर चुकी थी। सन 2011 में रेलयात्रा करते हुए बैग और सोने की चेन लुटेरों के हवाले न करने की एवज में उन्हें चलती रेल से नीचे फेंक दिया गया। इस बर्बर घटना में अरुणिमा को अपना एक पैर खोना पड़ा। केवल 23 वर्ष की आयु में नियति ने स्टैच्यू दे दिया।

युवा खिलाड़ी अब न फुटबॉल खेल सकती थी, न वॉलीवॉल। नियति अपना काम कर चुकी थी पर अनेक अवरोधक लगाकर सूर्य के आलोक को रोका जा सकता है क्या? कृत्रिम टांग लगवाकर अरुणिमा ने पर्वतारोहण का अभ्यास आरम्भ किया। नियति दाँतो तले उँगली दबाये देखती रह गयी जब 21 मई 2013 को अरुणिमा ने माउंट एवरेस्ट फतह कर लिया। अरुणिमा सिन्हा स्टैच्यू को झिंझोड़कर

दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचने वाली पहली दिव्यांग पर्वतारोही बनीं।

चकबस्त का एक शेर है-

कमाले बुजदिली है, पस्त होना अपनी आँखों में,
अगर थोड़ी सी हिम्मत हो तो क्या हो सकता नहीं।

स्टैच्यू को अपनी जिजीविषा से, अपने साहस से स्वयं रिलीज करके, अपनी ऊर्जा के सकारात्मक प्रवाह से अरुणिमा होनेवालों की अनगिनत अद्‌भुत कथाएँ हैं। अपनी आँख में विजय संजोने वाले कुछ असाधारण व्यक्तित्वों की प्रतिनिधि कथाओं की चर्चा उवाच के अगले अंकों में करने का यत्न रहेगा। प्रक्रिया तो चलती रहेगी पर कुँवर नारायण की पंक्तियाँ सदा स्मरण रहें, 'हारा वही जो लड़ा नहीं।'...इति।

(2)

आलस्य रोदनं वापि भयं कर्मफलोद्‌भवम्।
त्वयीमानि न शोभन्ते जहि मनोबलैः।।

अर्थात अपनी इच्छाशक्ति की सहायता से आलस्य और रुदन छोड़ो, प्रारब्ध से मत डरो- ये सब तुम्हें शोभा नहीं देते। ...इच्छाशक्ति सीधी परमात्मा के पास से आती है। तुम अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर जो चाहो, कर सकते हो।

'स्टैच्यू' श्रृंखला में आज इच्छाशक्ति के धनी एक और अनन्य व्यक्तित्व की चर्चा करेंगे। नाम है, स्टीफन विलियम हॉकिंग, प्रसिद्ध भौतिकी एवं ब्रह्मांड विज्ञानी। इक्कीस वर्ष की आयु में स्टीफन मोटर न्यूरॉन नामक असाध्य बीमारी के शिकार हुए। इस रोग में मनुष्य के सारे अवयव शनैः-शनैः काम करना बंद कर देते हैं। आगे चलकर श्वसन-नलिका भी बंद पड़ जाती है और व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। अलबत्ता मस्तिष्क को यह रोग नुकसान नहीं पहुँचा पाता।

स्टीफन के इस रोग से ग्रसित होने के बाद डॉक्टरों के अनुसार उनके पास जीवन के थोड़े ही वर्ष शेष बचे थे। अपार मेधा और अजेय इच्छाशक्ति के धनी स्टीफन बुदबुदाये, 'मैं अभी 50 साल और जीऊँगा।'

इक्कीस वर्ष की अवस्था में कहे इस वाक्य को स्टीफन की जिजीविषा ने प्रमाणित कर दिया। उनका देहांत 76 वर्ष की आयु में हुआ।

मोटर न्यूरॉन के चलते उनके शरीर के सभी अवयव निष्क्रिय होने लगे। धीरे-धीरे पक्षाघात ने देह को जकड़ लिया। एक विशेष व्हीलचेयर पर उनका जीवन बीता। अपने सक्रिय मस्तिष्क की सहायता और व्हील चेयर पर लगाए विभिन्न बटनों के माध्यम से उन्होंने न केवल प्रकृति प्रदत्त शारीरिक पंगुता का सामना किया अपितु भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान में अनेक अनुसंधान भी किए। अपनी आवाज खोने के बाद उन्होंने हस्तचालित स्विच से चलाये जा सकने वाले स्पीच जेनेरेटिंग डिवाइस के माध्यम से संवाद बनाये रखा। बीमारी के बढ़ते प्रभाव के कारण इस उपकरण को बाद में गाल की माँसपेशी की सहायता से सक्रिय किया गया।

स्टीफन हॉकिंग द्वारा विशेषकर ब्रह्मांड विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिपादित सिद्धांतों को व्यापक स्वीकृति मिली। वैश्विक स्तर पर उन्हें अनेक सम्मान और पुरस्कार मिले। इनमें अमेरिका का सर्वोच्च सम्मान, 'प्रेसेडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम' भी सम्मिलित है।

स्टीफन के संघर्ष के मूल में थी, उनकी जिजीविषा। स्टैच्यू बनी देह के भीतर बसी इस प्रवहमान जिजीविषा ने इतिहास रच दिया। उन्होंने जीवन ऐसा जिया कि समीप आकर खड़ी मृत्यु को उनकी देह ग्रसने के लिए 56 वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

शायद ऐसे ही बिरले लोगों के लिए कन्हैयालाल नंदन जी ने लिखा था-

जीवन के साथ थोड़ा बहुत मृत्यु भी मरती है, इसलिए मृत्यु जिजीविषा से बहुत डरती है...!

जीवन परमात्मा की देन है। जिजीविषा भी परमात्मा की दी हुई है। अपने जिजीविषा का उपयोग ना करना परमात्मा के प्रति कृतघ्न होना है। वैदिक दर्शन ने जिजीविषा को सर्वोच्च स्थान इसीलिए तो दिया है। आलेख के आरम्भ में उल्लेखित 'आलस्य रोदनं...' जैसा उद्‌घोष इसी के अनुरूप है।

ऐसे ही उद्‌घोष किसी स्टीफन हॉकिंग को बनाते हैं जो उद्‌घोष में प्राण संचारित कर शब्दों को जीवित कर देता है। मानवजाति का अनुभव जानता है कि जिसने शब्दों में प्राण फूँककर प्रेरणा को साकार कर लिया हो, उस को किसी तरह का कोई 'स्टैच्यू' बांध नहीं सकता।...इति।

संजय भारद्वाज
writersanjay@gmail.com

❑❑❑

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

हिन्दी देश को एकता के सूत्र में पिरोती है

14 सितंबर 1949 को संविधान द्वारा पृष्ट हिंदी भारत की मान्य राजभाषा और राष्ट्रभाषा बनी। भारतीय संविधान के 17 वें अध्याय में हिंदी भाषा के हित की रक्षा 343 से 351 तक के अनुच्छेद में की गई है। परंतु संविधान के 343 के खंड (2) में सूचित किया गया है कि यद्यपि हिंदी संघ की राजभाषा होगी- फिर भी संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का भी प्रयोग होता रहेगा। लेकिन अंग्रेजी के प्रयोग के लिए समय की मर्यादा रखी गई- 15 वर्ष।

फिर दस वर्ष की अवधि के समाप्ति होते-होते एक और 'राजभाषा अधिनियम' संसद में प्रस्तुत किया गया- राजभाषा अधिनियम 1976 और उसमें ऐसी व्यवस्था की गई है कि जब तक आवश्यकता महसूस की जाती है तब तक अंग्रेजी भाषा में कामकाज चलता रहेगा। दुर्भाग्य देखिए सन 2024 में भी हिंदी को पूर्णत: राष्ट्रभाषा का दर्जा अंग्रेजी के कारण नहीं मिल पाया। इसलिए हर वर्ष हिंदी दिन मनाने की आवश्यकता पड़ती है। मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से अपील करता हूँ कि वे संसद में प्रस्ताव पारीत करके अंग्रेजी हटाकर केवल और केवल हिंदी को राष्ट्रभाषा का पूर्ण अधिकार प्रदान करें।

हिंदी के भक्ति आंदोलन ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोया। जाति-पाँति, धन-धर्म-कुल की बड़ाई बौनी हो गई। भारतीय धर्म और संस्कृति 'वसुधैवकुटुंबकम' पर टिकी है। पूरा भक्ति आंदोलन जन-साधरण की शक्ति की खोज है। कबीर ने कहा है- 'जाति-पाँति पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि को होई।'

यह स्मरणीय है कि अपने देश में अपनी हिंदी भाषा रहनी चाहिए यह आवाज उठाने की प्रेरणा सबसे पहले जिनके मन में उठी, वे हिंदी भाषी क्षेत्र के नहीं थे। यह बार-बार दुहराया गया सत्य है कि स्वामी दयानंद, राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्तर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, रवींद्रनाथ टैगोर, श्रद्धाराम फिल्लौरी, महात्मा गांधी- इनमें से किसी की भी मातृभाषा हिंदी नहीं थी। पर इन्हीं लोगों ने इस आवश्यकता का अनुभव किया कि इस विशाल देश के जन समुदाय के बीच एक संवाद स्थापित करने की आवश्यकता है और यह संवाद ऐसी भाषा से ही स्थापित हो सकता है जो संतों, फकीरों, यात्रियों, देश के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने वाले व्यापारियों, दूर-दूर तक मुहिम पर जाने वाले सिपाहियों के आपसी व्यवहार की भाषा सदियों से रही हो। वे यह पहचानते थे कि यह भाषा किसी-न-किसी रूप में हिंदी थी।

व्यापक स्तर पर ग्राहय भाषा के रूप में उसकी मान्यता और शक्ति उसकी संख्या से नहीं आई है और न केवल उसके साहित्य के महत्व से आई है, वह शक्ति तीन कारणों से आई है। पं. विद्यानिवास मिश्र इस संदर्भ में लिखते हैं, 'पहला कारण तो यही है कि वह सदियों से अंत:प्रांतीय व्यवहार की भाषा थी। दूसरा कारण हिंदी की वह विरासत थी, जो उसने अप्रत्यक्ष रूप में संस्कृत से और प्रत्यक्ष रूप में मध्यदेशीय प्राकृत से ली; न संस्कृत का कोई प्रदेश था, न मध्य प्राकृत का। ये समस्त प्रदेशों को जोड़ने वाली भाषाएँ थीं। हिंदी भाषा का देश पूरा हिंदुस्तान है, कोई एक प्रांत या राज्य नहीं। हिंदी की शक्ति का तीसरा कारण है उसका जनभाषाओं से गहरा संबंध। हिंदी क्षेत्र में लगभग अठारह जनभाषाएँ हैं और इस क्षेत्र के व्यक्ति एक विचित्र प्रकार के द्विभाषा-भाषी हैं। ये बहुत निजी पारिवारिक परिवेश में एक भाषा बोलते हैं और व्यापक परिवेश में दूसरी भाषा।'

हिंदी की बोलियों के लोक-साहित्य तथा लोक गायकों

के साहित्य में सबसे अधिक मुखरता राष्ट्रीय चेतना की है।

हिंदी को राष्ट्रभाषा का पूर्णत: दर्जा प्रदान करने का सबसे ज्यादा विरोध दक्षिण भाषी लोगों ने किया। जबकि दक्षिण भारत की सभी भाषाओं की फिल्मों का हिंदी में डबिंग किया जाता है और वें फिल्में भारत भर में रिलीज होकर करोड़ों रूपए कमाती हैं। इसी तरह देश के विविध प्रादेशिक राज्यों की भाषाओं के साहित्य का हिंदी भाषा में अनुवाद होने से वे लेखक देश स्तर तक पहुँचते हैं। उन्हें राष्ट्रीय मंच प्राप्त होता है। इसलिए अब सभी प्रादेशिक भाषाओं के महानुभावों ने जन-जन की हिंदी भाषा का महत्व पहचानकर, बेवजह विरोध न करके हिंदी को पूर्णत: राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में पहल करनी चाहिए।

वर्तमान समय में पूरे विश्व के देशों में मंदी का दौर जारी है। जबकि भारत विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था की ओर तेज गति से बढ़ रहा है। अनेकों बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में आ चुकी हैं और आ रही हैं। उनका कारोबार हिंदी में जारी है। विश्व के 200 देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग खुल गए हैं। हिंदी में एम.ए., पी-एचडी की उपाधि ग्रहण करने के साथ छात्रों ने विदेशी भाषा भी आत्मसात करनी चाहिए। ताकि वे विदेश जाकर हिंदी पढ़ा सकें। हिंदी भाषा में रोजगार के यह क्षेत्र उपलब्ध हैं जहाँ छात्र अपना भविष्य संवार सकते हैं- रेडियो, दूरदर्शन धारावाहिक, फिल्म, डॉक्यूमेंट्री के लिए संहिता लेखन, लेखक, अनुवादक, बैंक और सरकारी कार्यालयों में हिंदी अधिकारी, एम.पी.एस.सी / यूपीएससी, अभिनय, डी.टी.पी., पत्रकारिता, विज्ञापन, जनसंपर्क अधिकारी, प्राध्यापक/अध्यापक, दुभाषिया (विदेश मंत्रालय), सूत्रसंचालक, निवेदक, ओवरव्हाईस, कार्यक्रम व्यवस्थापक, इंटरनेट लेखन-ब्लॉग,यू-ट्यूब चैनल, भाषा प्रशिक्षक, साक्षात्कारकर्ता, अनुसंधाता, आस्वाद लेखनकर्ता, नाटक, पुस्तक समीक्षक आदि।

अखबार में फिल्म, हिंदी देश की एकसौ पैंतालीस करोड़ जनता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक एकता के सूत्र में पिरोकर राष्ट्र को 'हम सब एक है', 'वसुधैवकुटुंबकम्' का पाठ भी पढ़ाती है।

प्रो. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, पुणे
omprakash.sharma@gmail.com

❑❑❑

गतिविधियां-

कुणबी युवा मंच, मुंबई का आयोजन-

शनिवार, दिनांक 5 अक्तूबर 2024 को माणगांव, जिला रायगड स्थित खरे सभागृह में विद्यार्थियों को सरकारी नौकरियों हेतु मुंबई कस्टम विभाग के श्री सत्यवान रेड़कर द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कुणबी युवा मंच, मुंबई एवं निजामपुर क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता, श्री नितिन बड़े जी एवं जवाहर नवोदय विद्यालय के उप प्राचार्य जी ने योगदान दिया था। आयोजकों की टीम से श्री सत्यजीत भोनकर जी एवं उनके साथी गण उपस्थित थे। कला शिक्षक, श्री चंदन तोडणकर जी भी उपस्थित थे।

'आसरा मुक्तांगन'

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के अपने विचार हैं। संपादक का इनके साथ सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

- संपादक

आलेख-

अशोक जैन

धंधा कोचिंग का

हमारे देश में बदहाल शिक्षा की देन है ये 'कोचिंग सेंटर'। विद्यालय की पढ़ाई से विद्यालय की ही परीक्षा और नौकरी के लिए तथा व्यावसायिक परीक्षा की तैयारी के लिए आज विद्यार्थी इन कोचिंग सेंटरों के मुहताज हो गये हैं। बच्चों के किसी भी कंपीटिशन की तैयारी कोचिंग केंद्र से कराने का वर्तमान में अभिभावकों का फैशन सा बन गया है। इसके चलते आज मेधावी विद्यार्थी भी स्कूल कॉलिजों को छोड़ इन कोचिंग केंद्रो में आधीन हो रहे हैं। कुल मिला कर इन सरकारी स्कूल कलेजों की व्यवस्था और प्रबंधन से आज समाज का भरोसा उठ गया है तथा सबने इन प्राइवेट कोचिंग सेंटर को ही विद्यार्थियों के भविष्य का मार्गदर्शक समझ लिया है।

निजी स्वार्थ और अंधी लालच से शिक्षा पर बाजार की भयंकर जकड़न दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। सरकारी व्यवस्था अक्सर इस बात से बेखबर, पंगु और उदासीन रहती है कि इन शिक्षा और कोचिंग संस्थानों में क्या और कैसे हो रहा है। शिक्षा के प्रति उदासीनता का रवैया और युवा वर्ग की जिंदगी के साथ इस तरह का खिलवाड़ आत्मघाती और अक्षम्य अपराध है। इस तरह की गैरकानूनी शिक्षा की दुकानों में और इनके आसपास विद्यार्थियों के रहने के लिए बने 'पीजी' आवासों में भी आये दिन हादसों का समाचार मिलता रहता है। मानसिक, शारीरिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से निहायत ही बुरे हालत में चलने वाले ये कोचिंग- व्यापार के केंद्र देश में शिक्षा की दुर्गति की हकीकत बयान करते हैं।

हमारा भारत वर्ष जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति के लिए दुनिया भर में जाना जाता था, जब इंग्लैंड जैसे देश ने शिक्षा के क्षेत्र में कलम पकड़नी शुरू की थी तब भारत में हजारों की संख्या में गुरुकुल सक्रिय थे और जब उन्हें लिखने की कला आई तब तक हमारा देश कई वेदों और शास्त्रों को लिख चुका था। नालंदा जैसी यूनिवर्सिटी हमारे देश में चल रही थी जिसमें लगभग दस हजार विद्यार्थी अर्थशास्त्र, गणित, विज्ञान और आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर इन विषयों पर शोध कर रहे थे।

जब दुनिया इस सोच में पड़ी थी कि सूरज धरती के चारों ओर घूमता है या धरती सूरज के चारों ओर घूमती तब हमारे देश के विद्यार्थी खगोल शास्त्र की पढ़ाई करते थे और हमारे गुरु इन शिक्षार्थियों को भूमंडल के रहस्यों का ज्ञान देते थे। चीन, जापान और फ्रांस के वैज्ञानिक हमारे इन गुरुकुलों के आचार्यों से तकनीकी ज्ञान सीखते थे। लेकिन आजादी के बाद से तत्कालीन सरकार ने शिक्षा विभाग का जिम्मा जब से कुछ विशिष्ठ लोगों को और तुष्टिकरण के चलते एक वर्ग विशेष के हाथों में सौंपा तब से पूरी शिक्षा प्रणाली का व्यावसायीकरण हो गया। जिसके परिणाम हम सबके सामने हैं।

अभी हाल ही में दिल्ली के राजेंद्रनगर के बेसमेंट में हुआ हादसा इकलौता नहीं है, इससे पहले भी कई हादसे हो चुके है जिनमें कई घरों के चिराग हमेशा- हमेशा के लिए बुझ चुके है। इसके अलावा कोटा, राजस्थान में तो इतने विद्यार्थी मौत को गले लगा चुके हैं, जिनके आँकड़े देश का सांख्यिक विभाग भी नहीं एकत्र कर सकता। इसके बाबजूद लोग न तो सचेत हो रहे हैं और नहीं सरकार इन मासूमों की जान की सलामती के लिए इन कोचिंग सेण्टरों में मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था हेतु कोई कठोर मानक बना कर अपना कर्तव्य निभा रही है।

अपनी संस्कृति, धरोहर, वैभव और शिक्षा की सुरक्षा

ना करने वाला समाज कभी सशक्त हो नहीं सकता।

दरअसल स्वार्थ, लालच, बेईमानी, सरकार तंत्र और समाज तंत्र दोनों की जड़ों में कैंसर बन कर दौड़ रही है, फिर भी हम बेपरवाह बने हुये है। हादसा हुआ है कुछ दिन बाद भूल जाएँगे फिर जब कोई नई बात होगी तो देखेंगे। हमारी ये सोच ही हमे इन हादसों को रोकने के लिए मजबूर करती है।

'किसी लेखक ने कहा है कि हमारे जीवन में वास्तविक समस्यायें सिर्फ पाँच प्रतिशत ही है, शेष 95% समस्याओं के निर्माता हम खुद है'। जिनसे हम रोजमर्रा की जिंदगी में दो-चार होते रहते हैं।

904, सनशाइन 'बी' ओमेक्स आर-1, निकट पुलिस हैडक्वार्टर, शहीद पथ लखनऊ (यू.पी.)
मो.- 9044000018

❑❑❑

क्या आप 'आसरा मुक्तांगन' के परिवार में शामिल होना चाहते हैं?

'आसरा मुक्तांगन' की सदस्यता स्वीकार कर आप इस परिवार के सदस्य बन सकते हैं। भारत और नेपाल हेतु सदस्यता दरें-

एक प्रति:	30/-	वार्षिक सदस्यता:	350/-
त्रैवार्षिक सदस्यता:	1000/-	आजीवन सदस्यता:	6000/-

मानद संरक्षण: 1,00,000/-

(डाक/कूरियर 'आसरा मुक्तांगन' द्वारा वहन किया जाएगा)
(चेक ड्राफ्ट 'आसरा मुक्तांगन' के नाम से ही देय होंगे)
बैंक का नाम- Bank of India (Mumbai)
A/c No. : 030120110000055
IFSC : BKID0000301

'आसरा मुक्तांगन'
पोस्ट बैग नं.-1, कलवा ठाणे-400605 (महाराष्ट्र)
Email : aasaramuktangan@gmail.com
Mobile : 8108400605/9029784346

गतिविधियां-

'के.वी.एन. नाईक शिक्षण प्रसारक संस्था', नाशिक, महाराष्ट्र में आयोजित एक विशेष समारोह में आसरा मुक्तांगन का हिंदी भाषा विशेषांक सत्कारमूर्ति एडवोकेट डॉ. सुधाकर आव्हाड को भेंट करते हुए-
आसरा मुक्तांगन के समन्वयक
डॉ. रत्नाकर अहिरे

वाशिंद, ठाणे में आयोजित
महिला सशक्तिकरण
शिविर में मार्गदर्शन करते हुए
'आसरा मुक्तांगन'
की प्रतिनिधि
श्रीमती शबाना पटेल

डॉ. रमेश मिलन

अखंड भारत के महान शिल्पी : सरदार पटेल

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सरदार वल्लभभाई पटेल के अद्‌भुत व्यक्तित्त्व तथा विशिष्ट कार्यों का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। सरदार पटेल भारत के वीर सपूतों में से एक थे, जिनमें देश सेन, समाज सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। अपनी दृढ़ता, आत्मबल संकल्प, सत्यनिष्ठ, अटल लक्ष्य, दृढ़ विश्वास, साहस एवं कार्य के प्रति के कारण ही वे लौह पुरुष के नाम से जाने जाते हैं। वह मितव्ययी थे, कम बोलते थे, परंतु काम अधिक करते थे। सरदार पटेल सिर्फ एक सच्चे राष्ट्रभक्त ही नहीं थे बल्कि भारतीय संस्कृति के महान समर्थक, सादा जीवन-उच्च विचार के अनुयायी थे।

सही अर्थों में सरदार पटेल में 'कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता' थी। वे केवल सरदार ही नहीं अपितु भारतीयों के हृदय के सरदार थे। पटेल स्वयं कहा करते थे, 'मैंने या विज्ञान के गगन में ऊँची उड़ानें नहीं भीं। मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में, गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है।'

राजनीति में त्याग और समर्पण का आदर्श बने सरदार वल्लभभाई झवेरमल पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को नडियाड (नविहाल) गुजरात (बम्बई प्रेसीडेंसी) में एक लेवा पटेल (पाटीदार) जाति में हुआ था। वे, सक्षिप्त नाम, भारत के विस्मार्क, लौहपुरुष, सरदार, मजबूत पुरुष के अंतकरणों से विख्यात हुए। वे पिता सवेरभाई पटेल एवं माता लाड़बाई पटेल की चौथी संतान थे। वल्लभभाई की दो संतानें थीं- पुत्री मणिबेन पटेल तथा पुत्र दह्याभाई पटेल।

गुजरात के आनंद तालुका के करमसद गांव के एक पाटीदार कृषक परिवार में इस महान व्यक्तित्व का जन्म हुआ। इनके पिता अर्थ वृद्धा से रहित, भक्ति, सेवा भावनाओं से ओतप्रोत थे। 'मानवीयता और राष्ट्रीय' के प्रति उनका अगाध अनुराग था।

सरदार पटेल की माता लाड़बाई पटेल भी मृदु तथा कोमल स्वभाव की थीं। अनुशासन, श्रद्धा और भक्ति के सुंदर वातावरण के संस्कार माता-पिता की तरह वल्लभभाई के जीवन में भी समाहित हो गए थे सरदार पटेल के जीवन में वह क्षण भी आया जब उनको कर्तव्यनिष्ठ और उनके दृढ़ मनोबल की परीक्षा हुई। जब वे एक मुकदमे की पैरवी न्यायालय में वकील के तौर पर कर रहे थे, तभी उन्हें एक तार मिला। तार में पत्नी के दु:खद निधन का संदेश था। वल्लभभाई ने उसे जेब में रखकर अपने कर्तव्य को प्रमुख मानते हुए सहजता के साथ कोर्ट की कार्रवाई में सहयोग दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के समय कांग्रेस के तंत्र की सुदृढ़ रचना करने, उसे सुस्थिर बनाने और स्वतंत्रता प्रप्ति के बाद भारत के शासन तंत्र को मजबूती देने एवं एकीकृत करने में सरदार पटेल का नाम गर्व से याद किया जाता रहेगा।

वल्लभभाई पटेल साहसिक स्वभाव एवं दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण भारत के एक महान व्यक्तित्व थे। वे जमीनी सोच रखने वाले तथा सख्ती से निर्णय लेने और लागू करवाने के कारण लौह पुरुष माने जाते हैं। देश की आजादी के समय उन्होंने कंपनी अद्‌भुत सूझ-बूझ और दृढ़ता से छोटी-बड़ी रियासतों का भारत में विलय कराया।

मातृभूमि की गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे किसान तथा श्रमजीवी समाज के सच्चे प्रतिनिधि थे। स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्रीय जागरण में उनका स्थान प्रथम श्रेणी के नेताओं में है। विलक्षण बुद्धि, निःस्वार्थ सेवा भावना, अनन्य देश प्रेम एवं निडरता उनके व्यक्तित्व की पहचान थे। गाँधी जी, देश के अनेक नेताओं और अमर शहीद क्रांतिकारियों के अदम्य कर्मयोग के फलस्वरूप हमें जो स्वराज मिला, उसमें सरदार पटेल का योगदान अप्रतिम है।

देश के लौह पुरुष माने जाने वाले सरदार पटेल बचपन से ही दृढ़निश्चयी थे। इसका प्रमाण है कि विद्यार्थी जीवन में ही विद्यालय के मार्ग में रुकावट डाल रहे खूंटे को उन्होंने अपनी शक्ति नेपोलियन बोनापार्ट का कहना था कि 'असंभव शब्द मेरी डिक्शनरी में नहीं है।' ठीक इसी प्रकार लौहपुरुष सरदार पटेल कहा करते थे, 'ऐसा कोई विघ्न नहीं है जो दूर न किया जा सके।' अपने अथक परिश्रम से उलझनों को कुशलतापूर्वक सुलझाने के फलस्वरूप उन्हें 'भारत का बिस्मार्क' का सम्मान मिला था।

ऐसी महान विभूतियों के बारे में प्रसिद्ध कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध की कर्मवीर' कविता की पक्तियाँ पूर्णरूप से सार्थक हैं- 'पर्वतों को काट कर सड़कें बना देते हैं वे, सैकड़ों मरुभूमियों में नदियाँ बहा देते हैं वे।'

सरदार पटेल में गाँधी जी के साथ आजादी की लड़ाई में अनेक आंदोलनों में भाग लिया। 22 जुलाई, 1947 को संविधान सभा द्वारा तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपना लिया गया था। 'इंडियन इंडिपेंडेंस एक्ट 1947 के अनुसार 14 अगस्त को पाकिस्तान और 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता मिलते ही देश का भारत और पाकिस्तान' दो राष्ट्रों में विभाजन हो गया। शरणार्थियों के स्थानांतरण के साथ ही हिंसा और मारकाट प्रारंभ हो गई। अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान की सहायता से सशस्त्र कबायती लुटेरों द्वारा कश्मीर पर किए गए हमले को विफल करते हुए सरदार पटेल की जागरुकता से अन्य रियासतों के साथ उसे भारतीय संघ में सम्मिलित कर लिया गया।

लगभग एक बात में ही उन्होंने भारत का मानचित्र बदल दिया। छोटी-बड़ी देशी रियासतों का गंभीर प्रश्न इतनी कुशलता से सुलझाना कि अंग्रेजों के साथ-साथ दुनिया भी दंग रह गई। देशी सोच के इस महान व्यक्तित्व ने देशी रियासतों को अपने थैले में डालकर आजादी के समय के ज्वलंत प्रश्न को हल करके विश्व का एक और आश्चर्य बना दिया।

भारत में स्थिर और सुदृढ़ शासन तंत्र को स्थापित करने की महत्ता को सरदार साहब समझते थे। बेशक- सत्यप्रिय, कुशल एवं निर्भीक राजनीतिज्ञ ने अपने श्रेष्ठ आचरण तथा देश के प्रति वफादारी निभाते हुए राष्ट्र की आजादी से पूर्व अविस्मरणीय सेवा की जो भारत की आजादी के बाद भी गृहमंत्री के रूप में भारतीय जनता के समक्ष सच्चे लौह पुत्र के रूप में सामने आई गुजरात के संस्कारी एवं सुविज्ञ कवि नरसिंहराव की गांधीजी और सरदार पटेल के संबंध में यह उक्ति अत्यंत सार्थक है- 'यत्र योगेश्वरो गाँधी वल्लभश्च धूधरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रवा नीतिमतिर्मय।।

बारडौली सत्याग्रह में किसानों के संकल्प को सरदार पटेल की सहायता से मिली जीत को वहाँ की महिलाओं ने वल्लभभाई को 'सरदार' कहकर आनंद मनाया। इस विजयोत्सव पर गांधीजी ने आशीर्वाद देते हुए सार्वजनिक रूप से वल्लभभाई को सरदार की उपाधि से संबोधित करते हुए उनकी प्रशंसा की। अब वल्लभभाई पटेल गुजरात के ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारत के 'सरदार' तथा 'लोकप्रिय' नेता बन गए।

जन्म और मृत्यु परम पिता परमेश्वर के हाथ में है। 15 दिसम्बर, 1950 को भारत का लाडला सरदार देश के करोड़ो लोगों को रोता-बिलखता छोड़कर परलोक गमन कर गया।

सरदार पटेल सभी अर्थो में संस्कृत के कथन के अनुसार वज्र की तरह कठोर और फूल की तरह मृदु थे।

कृतज्ञ राष्ट्र ने वर्ष 1991 में मरणोपरांत सरदार पटेल को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

अखंड भारत के महान शिल्पी को शत-शत विनम्र नमन।।

Email: dr.rmilan@gmail.com

❑❑❑

सुधा भारद्वाज

रामप्पा

-संटी तू क्या लाया?

-नमकीन!

-कौन-सा वाला?

-तेरे पापा जो दिल्ली से लाए थे, वो क्या?

-ठीक है, उसकी हम लोग सब्जी बनायेंगे।

पूरी बिल्डिंग के बच्चों की गृहस्थी मेरे घर में पलंग के नीचे जमी थी। उस समय बॉक्स पलंग का प्रचलन नहीं हुआ था। लोहे के पलंग होते थे, जिसके चारों पायों के नीचे पत्थर और लकड़ी के गुटके लगाकर उसके नीचे आराम से बैठकर हम घर-घर खेलते थे। सब की लाई हुई चीजों से सारा खाना बनकर तैयार था, बस सुधीर का इंतजार हो रहा था। वह चूरी याने मीठी सौंफ लाने गया था जो खाने के बाद हम तुलसी के पत्तों में रखकर पान के रूप में खाने वाले थे। सभी का मन आशंकित था कि शायद उसकी मम्मी ने डपटकर उसे पढ़ने बैठा दिया होगा!

सीमा ने दूसरी मंजिल पर जाकर झाँककर देखा तो दौड़कर बताने आई कि उसकी दादी ने उसे नीचे कुछ सामान लाने भेजा है, बस अब वो आ ही रहा होगा। टूना जल्दी-जल्दी प्लेटें लगाने में व्यस्त हो गई। सब के घर से लाए व्यंजनों को सब्जी-रोटी, दाल-चावल का नाम दे हम अपनी दावत मनाने को आतुर थे। माँ द्वारा खाने को दिये जाने वाले वे सभी पदार्थ जो घर पर हर एक को स्वादहीन लगते थे, अपने खिलौनों की गृहस्थी में सब के मुँह में पानी ला रहे थे। सभी भोजन का स्वाद चखने को उतावले हो रहे थे।

एकाएक अर्चना की भयातुर आवाज आई- रामप्पा ऽऽऽ...! सभी बच्चे स्तब्ध बैठ गये। आगे क्या होने वाला है सब जानते थे।

रामप्पा अपनी लुंगी घुटनों तक चढ़ा कर हमारे घर में घुस आया और धड़ाधड़ सजे हुए सारे व्यंजन खाने लगा। सब चुप...कोई एक शब्द नहीं बोला। बस मैं अपने दोनों हाथों की मुठ्ठियाँ ताने उसकी पीठ पर बरसाती रही। आखिर रुआँसी होकर मैंने माँ को आवाज लगाई...माँ से फटकार खाकर खी ...खी...करता रामप्पा बाहर निकला और दौड़कर सीढ़ियाँ उतर गया। बचे-खुचे सामान से सभी बच्चों को समाधान करना पड़ा। वो तो अच्छा हुआ सुधीर इस लूटपाट के बाद आया वरना पान की प्लानिंग भी धरी की धरी रह जाती। जिस दिन हम सभी बच्चे अपने-अपने घरों से बढ़िया खाने का सामान लाते तो रामप्पा को पता नहीं कैसे भनक पड़ जाती और वह ऐसे ही हमला बोलकर हमारी चीजें चट कर जाता। सारे बच्चे उससे थरथर काँपते थे। वह जैसे ही बगल वाली आंटीजी के घर आता, सोनू-टूना दरवाजे के पीछे खड़े हो जाते। कमोबेश हर बच्चा उसकी आवाज से ही डरता था। कोई दूध नहीं पी रहा है, होमवर्क से जी चुरा रहा है या फिर अपनी माँ के साथ बाजार जाने की जिद कर रहा है, सभी समस्याओं का सिर्फ एक इलाज था रामप्पा। उसका नाम सुनते ही हर बच्चा अपनी जिद भूल जाता।

इसका अर्थ यह नहीं था कि रामप्पा बहुत क्रूर या विशालकाय डरावने व्यक्तित्व वाला आदमी था, बल्कि वह तो हर बच्चे का खूब ध्यान रखने वाला ममता से भरा हुआ था। उसकी रोबीली आवाज की फटकार से हर बच्चा डरता तो था, पर बहुत बार खेलों में वह हमारा साथी भी होता था। जब हम स्कूल-स्कूल खेलते थे तो वह कभी मूर्ख विद्यार्थी बन जाता, कभी हमारे स्कूल का चौकीदार बनता। बॉल खेलते समय अधिकतर जब हमारी बॉल सामने की फैक्टरी के बगीचे में चली जाती और हम वहाँ के वॉचमैन से डाँट खाकर बिना बॉल लिए रोते-रोते वापस आते तो वह बिल्डिंग के वॉचमैन

की जगह हमारा अभिभावक बन वहाँ लड़ने पहुँच जाता। ...फिर भी जाने कब नाराज होकर रामप्पा अपने मछली पकड़ने वाले जाल में बांध देगा, इस बात का भय सभी को लगा रहता था।

बस मैं न रामप्पा से डरती थी न उसके जाल से, इसलिए नहीं कि मैं बड़ी निडर थी बल्कि बचपन से मैं उसकी गोद में खेली थी। वह बाजार जाता तो मुझे कंधे पर बैठा कर ले जाता। स्कूल में दाखिल होने से पहले मैं घर में कम और रामप्पा के पास अधिक रहती थी। अपने परिवार से, बाल-बच्चों से दूर रहने के कारण उसे भी मुझसे विशेष स्नेह था जो बाद में उसके परिवार के गाँव से आने पर भी कम नहीं हुआ। मैं रामप्पा और उसकी पत्नी सुंदरी के बीच बहुत बार झगड़े का कारण भी बन चुकी थी।

सुबह सभी का दूध लाना, किसी की रद्दी बेचना, कोई अपने गाँव जा रहा है तो ऊपर से उसका सामान उतारना, ये सब वॉचमैन के वेतन के अलावा उसकी अतिरिक्त कमाई के साधन थे।

औसत कद-काठी, काला रंग और एकदम सफेद बालों वाला रामप्पा केवल बिल्डिंग का वॉचमैन ही नहीं था, सभी के घर के सदस्य जैसा था। यदि वह कभी किसी से नाराज हो जाता तो उसे तुरंत मना लिया जाता क्योंकि लोग पूरा घर और बच्चे उसके सुपुर्द कर शांति से बाहर-भीतर के जरूरी काम कर लेते थे।

मुझे याद है, बड़ी जीजी की शादी के समय सारा सामान रामप्पा ने अपने हाथों से बांधा था। बड़ी जीजी की शादी के बाद पहली बार मम्मी-पापा मुझे, भैया, और मंझली जीजी को छोड़कर हफ्ते भर के लिये किसी जरूरी काम से मुंबई से बाहर गए थे, उस दौरान मैं और जीजी रामप्पा की इजाजत के बिना बिल्डिंग से बाहर कदम भी नहीं रख पाते थे।

मुंबई की बारिश में ट्रेनें बंद होना कोई नई बात नहीं है। ट्रेन से स्कूल जाने का मेरा पहला साल था। एक दिन मूसलाधार बारिश के चलते स्कूल से वापसी के समय ट्रेनें बंद हो गईं। जब मैं पैदल चलते हुए घर पहुँची तब पापा और भैया के अलावा रामप्पा भी मेरी खोज में निकला हुआ था।

शायद मैं ग्यारहवीं में थी, जब एक दिन सुबह किसी

के यहाँ दूध नहीं आया। उन दिनों दूध सरकारी केंद्र पर कार्ड दिखाकर बोतलों में मिलता था। रात में रामप्पा सभी के घर से कैरेट, दूध की बोतल और पैसे जमा करता और सुबह सब का दूध लाता था। आज उसकी खोली में ताला लगा हुआ था। जैसे-तैसे करके उस दिन का सभी ने काम चलाया। पूरा दिन गुजर जाने पर भी जब रामप्पा नहीं लौटा तो शंका-कुशंकाओं ने सभी को आ घेरा। पूरे तीन दिन बीत जाने पर चौथे दिन उसकी खोली का ताला तोड़ा गया तो वहाँ सभी के दूध के कार्ड, कुछ के राशन कार्ड और दूध की बोतलों के अलावा कुछ नहीं था। मतलब?...रामप्पा सोच-समझकर खोली छोड़कर चला गया या भाग गया? हर व्यक्ति अवाक था। अपने घर का कोई सदस्य घर छोड़कर चला जाए तो जैसा महसूस होता है, सभी ऐसा ही कुछ महसूस कर रहे थे। उसके एकाएक इस तरह किसी को बताये बिना चले जाने से हर एक के मन में जो नाराजगी थी, वह प्रकट होने लगी थी। वैसे सभी जानते थे कि वह शराब पीता था और मटका खेलता था लेकिन एकाएक उसकी अनुपस्थिति से उस पर दारू पीने, मटका खेलने और रुपये-पैसे का हेरफेर करने के इल्जाम लगने लगे। कल तक बिल्डिंग के साथ-साथ सभी के घर के रखवाले पर छोटी-मोटी कई चोरियों के आरोपों की झड़ी लग गई पर मेरा मन इन बातों को मानने के लिये तैयार ही नहीं था। जी तोड़ परिश्रम के पैसों से दिलाई उसकी

पॉपिन्स का स्वाद मेरे मुँह में ज्यों का त्यों था, किसी के आरोप प्रत्यारोप उसे बिलकुल कसैला नहीं कर पाए।

वर्षों बीत गए। इस बीच बिल्डिंग में कई वॉचमैन आए और चले गए, कोई विशेष समय तक रुक नहीं पाया। रामप्पा भी अतीत हो गया। बिल्डिंग के कई पुराने लोग नई जगह पर रहने चले गये। मेरी भी शादी हो गई।

शादी के बाद मैं पहली बार मायके आई। एक रात एक बुड्ढ़े अनजान व्यक्ति को घर के बाहर खड़ा देख भाई के नन्हें बेटे ने उस तरफ सबका ध्यान आकर्षित किया। हम सब एक नजर में रामप्पा को पहचान गए। वह अपराध-बोध लिए बाहर खड़ा था। पापा ने उसे अंदर बुलाया, माँ ने खाने के लिये पूछा तो उसने इन्कार कर दिया।

चाय पीते-पीते वह थोड़ा सहज हुआ, भाई की पत्नी, उसके बेटे को देखकर उसके चेहरे पर खुशी के वे ही भाव थे जो किसी आत्मीय के चेहरे पर आते हैं। मुझे देखकर वह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि तब सोलह-सत्रह साल की नवयुवती, आज एक विवाहित स्त्री के रूप में उसके सामने बैठी है। उसकी अनुभवी आँखे मेरे चेहरे को ठीक उसी प्रकार पढ़ रहीं थी जैसे कोई पिता अपनी नवविवाहित बेटी के चेहरे से अनुमान लगाने की कोशिश करता है कि बेटी अपने ससुराल में सुखी है कि नहीं? माँ ने उसे एक पुराना शर्ट और ओढ़ने के लिये चादर दी।

हम दोनों के बीच कोई संवाद नहीं हुआ। एकाएक मेरी और उसकी नजरें मिली, मैंने पूछा, 'रामप्पा, हमको याद करते हो?' जवाब में दोनों हाथों से चादर से मुँह ढाँपे रामप्पा फफक-फफक कर रो पड़ा। मेरी भी आँखों से आंसू बह निकले। अविरल अश्रुओं ने उसके प्रति सारी नाराजगी को समाप्त कर दिया। जाते-जाते बिना कुछ कहे उसने मेरे सर पर हाथ फेरा।

वह रामप्पा से मेरी आखिरी मुलाकात थी। उसके बाद न वह कभी आया न किसी से उसका जिक्र ही सुना। जाने अब वह जीवित भी है या नहीं, लेकिन कई वर्ष गुजर जाने पर भी सिर पर उसके हाथ का स्पर्श ज्यों का त्यों महसूस होता है।

सुधा भारद्वाज
bsudhasanjay@gmail.com

❑❑❑

कविताएँ/ग़ज़लें-

आशीष द्विवेदी 'साथी'

रिश्ते

बदल गया ध्यौस आकाश गंगा में
और सूर्य, चंद्र, गृह, नक्षत्र
हो गए केवल तारे, गृह, उपग्रह।
सम्पूर्ण सृष्टि का पोषक सूर्य
पापों से मुक्ति दिलाने वाला ना होकर
मात्र पापों को अंधेरे तक टालने वाला हो गया।
सावित्री रुपए कमाने वाली
व्यवसायिक पूजा की मात्र माध्यम हो गई।
इंद्र, रुद्र, मरूत पौराणिक देवता
अब हट गए जुबान से ही तो-
अल्प वृष्टि, अनावृष्टि, आंधी, तूफान, भूकंप
पर्यायवाची बनकर अखबारों में छपने लगे।
धरती हो गई व्यापारिक दायरे की वस्तु
इंच व फुट में बिकने लगी माँ
या होने लगा चीर हरण।
आधुनिकता में बढ़ गई नग्नता की कीमत
यकीनन मैं तो रहा वैदिक काल की किसी किताब के
एक पृष्ठ में उलझा और दुनिया आगे बढ़ गई
'फेंटेसी' के मुख पृष्ठ तक।

अच्छा लगा...

कोरे कागज पर खींचा, हाशिया अच्छा लगा।
घर का परकोटा औ' दर का परदा अच्छा लगा।
कौन किसी मुफलिस से, करता है प्यार सच्चा?
मुझे देख तेरी आंखों में, आसूं का कतरा अच्छा लगा।
रात के अंधेरे के नाम पर ही तेरा जलाया,
वो शाम की आरती का, छोटा दिया अच्छा लगा।
जन्म दिन पर मेरे, सब लोगों ने दिए गुलदस्ते,
तेरी भेंट सबसे जुदा, मिट्टी का खिलौना अच्छा लगा।
प्यार करोगी मुझसे, जब मैंने पूछा तुमसे,
सच कहूं तो तेरा कहा 'ना' अच्छा लगा

उदइया, जिला डूंगरपुर (राजस्थान)

❑❑❑

डॉ. रमेश यादव

लघुकथाएं

क्या मां भी कभी रिटायर होती है!

सुबह 10 बजने में कुछ मिनट बाकी थे। सबकी नजरें मुख्य द्वार पर टिकीं थी। और मिसेज अनिता जोशी ऑफिस में प्रवेश करती हैं। कांच का दरवाजा खोलकर अंदर कदम रखते ही स्टाफ तालियां बजाकर बड़ी गर्मजोशी से उनका स्वागत करते हैं। तिलक, आरती, फूल-माला पहनाकर गुलाब की पंखुड़ियों की बरसात की जाती है। शुभकामनाओं भरा गीत प्रस्तुत किया जाता है। सभी लोग उनके सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ रिटायरमेंट जीवन की मंगल कामना करते हैं। आज का दिन विशेष है यह एहसास उनके सहकर्मी जताने की कोशिश करते हैं और पल-पल की हलचल को कैमरे में कैद करते हैं।

काफी कोशिशों के बावजूद भी वो अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाई, आँखों से छलकते आंसुओं को आँचल से पोंछते हुए आगे बढ़ती हैं। तभी एक कर्मचारी झुकते हुए उन्हें मस्टर थमा देता है। मिसेज जोशी हस्ताक्षर करने लगती हैं। ऑफिस का ये उनका अंतिम हस्ताक्षर था। हस्ताक्षर ही क्या, ऑफिस का हर क्षण आज उनके लिए अंतिम था। भावूक होकर वो हर क्षण को दिल के कैमरे में कैद करते हुए आज के हर पल को जीने की कोशिश कर रहीं थीं।

मिसेस जोशी जानती थीं कि कल से यह ऑफिस उनके लिए बेगाना हो जाएगा। सेवानिवृत्ति का अंतिम दिन उन्हें झकझोर रहा था। रोज की दौड़ख़्रभाग भरी नटनी की जिंदगी से मुक्ति का आनंद या कुर्सी खोने का दुख...! दुविधा मनस्थिति...!

'मॅडम आज आप काम नहीं करेंगी, सबसे मिलते हुए सिर्फ बिदाई समारोह की तैयारी करेंगी।' ऐसा कोई नियम नहीं है मगर मैनेजर साहब ने इंसानियत का परिचय दिया, जो टारगेट और काम को लेकर रोज पीछे पड़े रहते थे।

जैसे ही मिसेस जोशी ने अपना मोबाइल ओपन किया, उनके जेहन में भविष्य की योजनाओं का कारवां तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा। सोचने लगीं- नौकरी करते हुए चालीस साल कैसे गुजर गए, पता ही नहीं चला। मुंबई की रफ्तार भरी जिंदगी, रोज की आपाधापी...। अगले ही पल उनकी आँखों में घर-गृहस्थी का दृश्य तैर गया, जो उन्हें अब भी निभाना था...। बेटी की गोद भराई रस्म, बहू-बेटे, पति, सास की जिम्मेदारियाँ, आगे पोता-पोती के साथ खेलेने के सपने, उनकी देखभाल, उनके शिक्षा की चिंता, उम्र के साथ संगाती बन रहीं बीमारियों के साथ तालमेल...! सबकुछ तो अभी निभाना ही है...। सेवानिवृत्ति मतलब ऑफिस से मिलने वाली तनख्वाह से निवृत्ति...। क्या मां भी कभी रिटायर्ड होती है...?

जिंदगी भी एक हवन कुंड

शहर के जाने माने उद्योगपति अग्रवाल जी की 75 वीं सालगिरह पर हवेली में होम हवन, पूजा-पाठ और सहभोज का आयोजन किया गया था। परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्य पंडित जी के साथ पूजा की रस्म निभा रहे थे। इस दौरान पंडित जी ने जीवन के मर्म से जुड़ी कथा के माध्यम से जीवन में आनंद और सुख कैसे खोजना चाहिए इसका राज समझाया। कथा समापन करते हुए पण्डितजी होम करवाने में जुट गए।

स्वभावानुसार अग्रवाल जी हाथ संभालकर समिधा समर्पित कर रहे थे, जिससे अंत में काफी समिधा बच गई। अंत में होम-हवन के समापन की घोषणा करते हुए पंडित जी ने अंतिम मंत्र पढ़ा और बोले, 'अब जो कुछ बच भी गया है सारी सामग्री, कुंड में एक साथ समर्पित करके जोर से बोलो- स्वाहा।'

बची हुई सारी समिधा एक साथ हवन में समर्पित करते हुए अग्रवाल जी भी जोर लगाकर बोले- 'स्वाहा।'

हवन कुंड में समिधा की मात्रा अधिक हो जाने से चारो ओर धुआं ही धुआं फैल गया। सबकी आंखों में जलन होने लगी। अग्रवाल जी ने भी अपनी आंखें मलते हुए मूंद ली और उनका भूतकाल आंखों में तैर गया। जेहन में ख्याल आया- अरे, बचाने और हाथ बचाकर खर्च करने की फिक्र में मैंने अपने जीवन में भी काफी समिधा बचा ली है। अब तो एक साथ समर्पण की बारी आ गई। यहां से तो आंखों में सिर्फ नमी और सामने गुबार ही गुबार नजर आ रहा है। मतलब जीवन में भी समिधा समर्पण का संतुलन बिगड़ गया।

पंडित जी की कथा का स्मरण करते हुए उन्होंने अपनी आँखें खोली और संकल्प किया कि आज के बाद सामाजिक सरोकार के तहत वे गरीब, असहाय, विकलांग तथा जरूरतमंदों की सुश्रुषा में अपना अतिरिक्त धन लगाएंगे। तुरंत निराशा के बादल छँट गए और नए जोश के साथ आनंद के उन क्षणों को वो जीने लगे।

गठरिया में लागा चोर....

गांव के बाहर, मंदिर के पास स्थित पीपल के पेड़ के नीचे तीन लोग बातें कर रहे थे। अचानक उनकी नजर सामने से आ रहे पंडित जी पर पड़ी। बकरी को देखते ही उनके मन में लालच आ गया और वे तीनों बिखर गए।

दक्षिणा संग दान में मिली छोटी बकरी को कंधे पर लादे पंडित जी घर की ओर जा रहे थे। जैसे ही पंडित जी पीपल के पास से गुजरे उनमें से एक जो कि मुंह में पान ठूसे हुए था, बोला, "महाराज जी इस कुत्ते को कंधे पर लादकर कहां ले जा रहे हैं?"

"अंधे हो क्या? दिखाई नहीं देता ये कुत्ता नहीं बकरी है...बकरी। यजमान ने दान दिया है।" मुंह बनाते हुए पंडित जी ने जवाब दिया।

"आपकी नजरें धोखा खा रही हैं महराज जी, मुझे तो कुत्ता दिखाई दे रहा है! यजमान ने आपको फंसा दिया है। आगे जैसी आपकी मर्जी।" कहकर वह व्यक्ति चलते बना।

कनखियों से पंडित जी ने एक नजर बकरी की ओर देखा और आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाते ही दूसरे व्यक्ति ने उन्हें घेर लिया और बोला, "पंडितजी जयराम, का हाल चाल बा?"

"जयराम जी। सब कुशल मंगल है, अपनी सुनाओ।"

"सब ठीक है बाबा, मगर आप ई का अनर्थ कर रहे हैं? कंधे पर सूअर लादे कहां जा रहे हैं? ई आपको शोभा नहीं देता! राम राम राम...लोग क्या सोचेंगे?"

"अरे मूर्ख, तेरी आंखें फूट गई हैं क्या, जो बकरी को सूअर बता रहा है?"

"पंडितजी आपकी अब उम्र हो गई है। बकरी नहीं सूअर है सूअर! अब आप नहीं मान रहे हैं तो हम भला का कर सकते हैं?" इतना कहकर वह भी चलते बना।

आगे बढ़ते हुए पंडित जी सोचने लगे...। ऐसा कैसे हो सकता है! उन्होंने पुनः बकरी को गौर से देखा और अपनी तसल्ली करते हुए आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाने के बाद रास्ते में बैठा तीसरा व्यक्ति सामने आया और बोला, 'बाबा पायलागू, इस गदहे को लादे इतनी दुपहरिया में कहां जा रहे हैं? सब ठीक तो है ना? ई बोझा को काहें ढो रहे हैं?'

'अरे अकल का मारा, तू अंधा है क्या जो बकरी को गदहा बता रहा है?'

'बाबा, गदहा है गदहा! जरा गौर से देखें। खैर, मैंने जो देखा, सो बता दिया, आगे आप जाने।' इतना कहकर वह आगे बढ़ गया।

पंडित जी चिंता में डूब गए। वे सोचने लगे कि एक ने कुत्ता कहा, दूसरे ने सूअर और ये तीसरा गदहा कह रहा है। जरूर ये प्राणी मायावी है जो बार-बार अपना रूप बदल रहा है और मुझे नजर नहीं आ रहा है, अन्यथा राह चलते लोग ऐसी बातें क्यों करेंगे? आगे चलकर ये मुझे नुकसान पहुंचा सकता है! ऐसा सोचकर उन्होंने तुरंत उस बकरी को कंधे से उतारा तथा खेत की ओर भगा दिया। पंडित जी ने अंतिम बार उसकी ओर देखा और मन कठोर करते हुए उसे वहीं छोड़कर घर की ओर चल दिए।

मौका देखकर उन तीनों ठगों ने पंडित जी पर ठहाका लगाया और बकरी को लपक लिया। अपनी योजना कामयाब होते देख वे खुशी से झूम उठे। उनमें से एक बोला, "भाई जिंदगी में ठगों से कोई बच पाया है? फिर चाहे विज्ञापन हो, राजनीति हो, चुनावी वादे हो, ढोंगी बाबा, साइबर ठग...। और 'गठरिया में लागा चोर बटोहिया, का सोए रे...।' गाते हुए वे तीनों बकरी को पेड़ से बांधकर नए शिकार की तलाश में साधना करने लगे।

मुंबई
फोन- 9820759088
मेल- rameshyadav0910@yahoo.com

❑❑❑

चित्रा देसाई

नालंदा

सुनो द्वारपाल- जब इसे जलाने आए
ढहाने आए,
तुम खड़े थे द्वार पर क्यों खोले तुमने किवाड़?
तुम भी तो ज्ञानी थे,
तुम्हारे दस प्रश्नों से,
होती थी पहली परीक्षा।
क्या तुमने एक भी प्रश्न नहीं किया!
ज्ञान ने क्यों रास्ता दिया बल को?
बल तर्क नहीं करता-
दिखाता है बल्ली की नोक।
सैनिक पहले आँखें दिखाता है,
फिर निकालता है।
उबलते तेल के कड़ाहों में,
बिना जले कैसे निकलें
नहीं सिखाती कोई किताब।'
'झूठ मत बोलो द्वारपाल!
तुमने सीखा ही नहीं, प्रतिरोध करना।'
कुछ दीवारें लड़खड़ाती सी,
खड़ी हैं अभी तक थामे हैं जली हुई ईंटें।
मिट्टी जलकर और भी जिद्दी हो जाती है।
यहाँ गुरू को प्रणाम करने,
मेरे हाथ नहीं उठते!
चीखते हैं कितने ही प्रश्न-
'अपने शिष्यों के साथ दीवारों से सटकर
क्या तुम भी खड़े हुए थे आचार्य,
या उठाए थे हाथ?
उन्हीं के शस्त्र छीनकर
क्या किया था तुमने भी वार?
अहिंसा में विश्वास करते थे न,
इसलिए हिंसा के साक्षी बने रहे तुम?'
चुप हैं सब... सच है- किताबों से नहीं बहता लहू
उनके साथ हुई हिंसा- सदियों तक रिसती है...

तैनाल

सुनाई देती थी गलियों में
'तैनाल' लगवाने की पुकार।
नर्म खुरों के नीचे- लोहा जड़ते देखा है कभी?
कहीं आवेश में- आक्रामक न हो जाये,
मुँह पर बाँध दी जाती है जाली।
स्वयं को सुरक्षित कर,
शुरू होती है- यातना-कथा।
रेत में कुलबुलाती है पूरी देह,
जमीन पर पटकता है सींग,
जबड़ो के बीच दबी रबड़,
और बहता झाग!
आँख बंद कर- राह देखती हूँ उसके उठने की।
तैनाल लगा- दौड़ता है वह तारकोल की सड़कों पर।
समझ जाती हूँ- यात्रा के लिये
नर्म फोहो के नीचे लोहा लगाने की प्रक्रिया
और मैं भी तैनाल लगवा- उठ खड़ी होती हूँ
सरपट दौड़ने के लिये।

❑❑❑

नंदन शर्मा

सपनों का क्या है

सपनों का क्या है
छूते ही रहते हैं मन
कभी मुंडेर पर
चिहुंकते
गौरैया के बच्चों की तरह
कभी पोखर में खिल आये
इकलौते नीलोफर की मानिंद और मन
उसका भी क्या है
सिहर-सिहर टांकता ही रहता है
मुंदी हुई पलकों के बैंजनी उजास में
कल्पना के नये-नये इन्द्रधनुष
बुनता ही रहता है
निरंतर प्रतीक्षा के ठूंठ पर
बया-के-से घौंसले
किंतु सपनों और मन के मध्य
है कोई तीसरा भी
जो खड़ा रहता है
नि:शब्द
किसी के छूने पर ना सिहरता है
ना ही क्षितिज-भ्रम टूटने पर होता है उदास
वह तो सपनों और मन की
अटखेलियां देखता
धीमे-धीमे मुस्कराता है
जैसे कहता हो सपने तो लहर हैं
छूते हैं और पलट जाते हैं
मन कवि है
खड़ा रह जाता है ठगा-सा।

प्रणय गीत

मधुर वीणा के तारों-सी मुझमें गूंजती हो तुम
मैं तुमसे प्यार करता हूं फिर भी पूछती हो तुम

पूछना है गर, तो पूछो तुम गगन के चांद से
चाहा है मैंने तुम्हें रात-दिन उन्मांद से
हैं गवाह ये दिन गुजरते बीतते पलछिन
अनमना ही मैं रहा प्रिय! तुम्हारे बिन
कहाँ पल भर को भी मुझसे छूटती हो तुम
मधुर वीणा के तारों-सी...

छू सको तो छूओ मेरे प्यार की गहराइयां
क्या बतायेंगी तुम्हें ये देह की परछाइयां
है रूह से रूह का मिलन ये मेरा तुम्हारा
किया तुम्हीं को समर्पित है जीवन ये सारा
यूं इस तरह आंखों में मेरी क्या ढूंढती हो तुम
मधुर वीणा के तारों-सी...

महकती हो मोगरे-सी दिन-रात मुझमें तुम
बरसती हो बन नेह की बरसात मुझमें तुम
तुम हो तो हुआ है रुपहली भोर-सा जीवन
बूंदों में सावन की थिरकते मोर-सा जीवन
प्रिय! हर घड़ी मुझको मुझी से लूटती हो तुम
मधुर वीणा के तारों-सी...

प्यार तुम्हारा भी प्रिय! है अनंत आकाश-सा
घुल गया है गहन मुझमे पावन प्रकाश-सा
मगन हूं पा कर तुम्हारा मैं भी प्रेम ये निश्छल
लगे है धार गंगा की मुझे, है छू रही अविरल
जब मान ही जाती हो, तो क्यूं रूठती हो तुम
मधुर वीणा के तारों-सी...

CL-1, 9 0 4 ब्रह्मा सन सिटी,
वडगांव शेरी, पुणे-41101

❑❑❑

राकेश शर्मा

उबलता है, लेकिन उफनता नहीं है
लहू में अब उतनी सघनता नहीं है

वो सर अब भी कांधों की रौनक बना है,
उछलने पे पगड़ी जो तनता नहीं है

उसे मान कर दोस्त मैं चल रहा हूं,
मेरी आस्था का जो हंता नहीं है

मैं दानिशवरों को यह समझा रहा हूं,
जुनूं के बिना काम बनता नहीं है

वो मिट्टी की तासीर से अजनबी है,
बदन जिसका मिट्टी में सनता नहीं है

है संग इसके जीना, है संग इसके मरना,
यह कुनबा है मेरा, यह जनता नहीं है

वही मर के होता है रुसवा जहां में,
कफन खुद जो सीं कर पहनता नहीं है

हैं शायर तो बहुतेरे नामी जहां में,
खघ्यालों में सबके गहनता नहीं है

घड़ी-घड़ी आता है, पल-पल आता है
बात-बात पर माथे पे बल आता है

मंगल आता नहीं सोम के बाद कभी,
हफ्ते भर हर रोज अमंगल आता है

पीर पिघल कर खौल रही है सीने में,
हंसने पर भी आंखों में जल आता है

तकलीफें यूं आती हैं मेरी जानिब,
जैसे गांवों में टिड्डी दल आता है

प्यासों की बस्ती का बाशिंदा हूं मैं,
पांच साल में एक बार नल आता है

फिक्र यही भेजे को चाटे जाती है,
थके बाजुओं में कैसे बल आता है

सींच रहा हूं खून से अपने मैं उनको,
जिन पेड़ों पर कभी नहीं फल आता है

मुद्दत से मुझको तलाश है उस पल की,
अनायास ही जब दिल को कल आता है

❑❑❑

मुस्तहसन अज़्म

इस जुदाई में तड़प है ना मजा है कोई
शायद अब बीच हमारे भी अना है कोई

ऐसा लगता है अदाओं से खफ़ा है कोई
यह शरारत है, अदा है कि सजा है कोई

सुनता था सारा जमाना ही खफ़ा है मुझे से
आज क्यों मेरी तरह मुझ से मिला है कोई

जाने क्यों बाद गुनह के यह ख़्याल आता है
जैसे चुपके से हमें देख रहा है कोई

हर घड़ी मेरी बालाएं जो लिया करती है
मां की बेलौस वो पाकीजा दुआ है कोई

अक्ल के साथ चलूं 'अज़्म' कि मैं दिल की सुनो
रहनुमा है कोई तो रोक रहा है, कोई तो रोक रहा है।

धीरे-धीरे बदल रहा हूं मैं
खा के ठोकर संभल रहा हूं मैं

दो कदम साथ चल के देख लिया
अब जरा हटके चल रहा हूं मैं

एक छोटी सी गाली दे के लगा
दायरे से निकल रहा हूं मैं

दूसरों के लिए हूं सख़्त बड़ा
तेरे आगे पिघल रहा हूं मैं

मेरे पीछे पड़े हुए हैं सब
रास्ती जो उगल रहा हूं मैं

दुनियादारी भी आ गई मुझको
मुफ्त लुक़मे निगल रहा हूं मैं

'अज़्म' थोड़ी-सी रोशनी के लिए
शम्अ सा कब से जल रहा हूं मैं

❑❑❑

आसरा रियलिटी
पूरा करेगा आपका अपना सपना
अधिक जानकारी के लिए-
मोबाइल : 9152525174
घर हो या मकान
वेस्टर्न हो या सेंट्रल
शॉप हो या दुकान
हॉरबर हो या नवी मुंबई

सच्चिदानंद आवटी

जलता रहे तू...

जलता रहे तू सारी रात,
आए चाहे, आंधी-वात!
जलता रहे तू सारी रात,
जब तक,
हो जाये न प्रात!

आए जब आंधी तुफां-
आंचल ले-
बचाऊंगा तुझे!
कंपित हो मत मेरे दीप!
बहुत दूर है-
अभी प्रात।
जलता रहे तू सारी रात।

चाहे खत्म हो जाये तैल,
मेरे प्राण ही अर्पण तुझे,
खून मेरा हो जाएगा तैल!
चाहे छुटे झंझावात
अचल रहे तू सारी रात!

विश्वास मुझे- तू कभी
नही करेगा किसी के- जिंदगी से खेल!
यारी रखना, ये अनमोल
तो दफां हो जाएगी...
सारी रात!
जलता रहे तू सारी रात...!

जीवन की राह से...

जीवन की राह से चलते-चलते...
न जाने कैसी उठती है, एक टीस मन में...
उमड़ पड़ते हैं,
पलकों से आंसू,
निकल पड़ती है- मुंह से आह!

जीवन की राह से चलते-चलते
न जाने कैसा उबलता है तेजाब दिल में,
फूट पड़ते हैं,
अंगार आखों से-
निकल पड़ते है- तपते लफ्ज!

जीवन की राह से चलते-चलते
न जाने कैसा निर्झर, बहता रहता है मन में...
चेहरे पे दिखाई देती है- मुस्कान शर्मीली,
हर दिन लगता है- जैसे दिवाली!

जीवन की राह से चलते-चलते
न जाने
क्या होता है दिल को?
चेहरे पे आ जाती है-
एक-निर्वेदता...
और, पैर चलने लगते है। तनहां की ओर...
जीवन की राह से चलते-चलते...!!

सच्चिदानंद आवटी सहायक निदेशक (राजभाषा)

❑❑❑

देवकी कुलकर्णी

शब्द

मै यूं ही लिखने बैठी
और शब्द सामने आ के खड़े रहे
तय तो इतना ही करना था
कौन-सा शब्द किस जगह इस्तेमाल करूं।

मन का इशारा समझा
तन ने सहारा दिया
शब्दों का मिलाप हुआ इतना
कि महफिल में आ बैठे शब्द
कविता रचाने के लिए
कभी कविता नहीं होती स्फूरित
इतना ही समझा कि शब्द
रंगों की छटा लिये आते हैं
शब्द केवल शब्द ही नही होते
समूह में देते है नये अर्थ
और सजाने लगते है सुनहरे सपने।
फिर हम अचरज में पड़ जाते हैं
चेहरे को नया अर्थ देते है ये शब्द।
भावना के संग दौड़ते,
लड़खड़ाते, गिरते संभलते ये शब्द-
दिन में कभी-कभी परेशान करते
फिर भी आनंद लुटाते हैं ये शब्द।
ये शब्द, शब्द ही हैं जो आते हैं मन के गर्भ से
कोई नहीं जानता उसकी गहराई और उंचाई भी।
और फिर भाव और विचारों के लिए
उतर आते है कागज पर ये शब्द ये शब्द।
शब्दों को पिरोते, गूंधते, पखरथे, ये शब्द
भावनाओं की भर जाती है अंजूरी और
आपाधापी के इस जीवन में बात करते हैं ये शब्द।
मिलाते हैं ये शब्द जगाते, रुलाते, हंसाते हैं ये शब्द।
शब्द-शब्द नहीं, शब्द जीवन का
गीत गाते हैं ये शब्द।
ये शब्द
इन शब्द सैनिकों को मेरा नि:शब्द सलाम।

प्रीतरंग

आकाश चीरकर अंबर से आए सप्तरंग
श्याम की प्रीत संग
यादों के सागर में आये प्रेम तरंग
प्यार से हंसके देखा तुमनें
तेरी महकती खुशबू ने
फिजा भी चमक उठी अंगड़ाइयाँ ले,
बीत गये मौसम सारे, तेरे सुमिरन में
वक्त बेवक्त वो मुलाकातें याद करतें मन में
मिले न मिले सही, फिर भी बातें करते अतंरंग में
फूलें, कलियाँ, फलियां, पिरोये
सुर के संग
समझ में आए तेरे मन के प्रीतरंग
एहसास हुआ राधा ही कृष्णरंग।
जीवन में आए आनंद के सबरंग।

❑❑❑

कविताएँ/ग़ज़लें-

अंशु तिवारी

सोचा न था

इस तरह घर जेल बन जायेंगे ये सोचा न था
आहटों पे पहरे लग जायेंगे ये सोचा न था।

खूबसूरत सी धरा को बदनजर किसकी लगी
यूं फिजा में जहर घुल जायेंगे ये सोचा न था।

आसमां का चांद भी अब उतना चमकीला नहीं
और सितारे भी न मुस्काएंगे ये सोचा न था।

कौन सी दस्तक है जिसके खौफ में हम इस तरह
चौखटों में कैद हो जायेंगे ये सोचा न था।

लफ्जे आजादी है क्या और क्या खुली आबो-हवा
रोज हम ये खुद को समझाएंगे ये सोचा न था।

है बड़ा गहरा अंधेरा रौशनी पर जिद पे है
सैकड़ों दिए यूं जल जायेंगे ये सोचा न था।

कर लिए सारे जतन पर दर्द ये जाता नहीं
हाथ फिर दुआ में उठ जायेंगे ये सोचा न था।

श्री कृष्ण को समर्पित

सभी ऐश्वर्यों से परे
तुम
यशोमति के नंदन
क्या करूं
अर्पित तुम्हें
तुम स्वयं कुन्दन
स्वयं चन्दन।
हैं तुम्हीं से रंग सारे
हैं सभी श्रृंगार तुमसे
किस तरह
तुमको सजाऊं
किस तरह कर पाऊं वन्दन।
है तुम्हारे रूप जैसा
लीलाधर संसार सारा
है क्षणिक जीवन परन्तु
चल रहा सब कुछ निरन्तर।
तुमने इतना सब दिया
मैं क्या तुम्हें दूं हे बिहारी
सूर्य जैसे दिन सभी
और चंद्रमा-सी सांझ अर्पण।
तुम हो गिरधर अति मधुर
नटखट चपल नंदलाल मेरे
स्नेह सागर कृष्ण तुमको
स्नेह का सच्चा समर्पण

दिल्ली / 8291971060

❑❑❑

प्रेम कुमार शर्मा 'प्रेम'

वीरों की गाथा

भारत है वीरों की भूमि, वीर यहां पर बहुत हुए।
अपने देश धर्म की खातिर, दीवारों में चिने गये।
ऐसे ही वीरों की गाथा, तुम्हें बताने आया हूं।
भारत है वीरों की भूमि, इसको गाने आया हूं।
मैं इसे सुनाने आया हूं।

मंगल पांडे ने क्रांति का, विगुल यहीं पर बजाया था।
गोरों के अधिकारी को, मौत की नींद सुलाया था।
ऐसे वीर क्रांतिकारी की, मैं गाथा गाने आया हूं।
भारत है वीरों की भूमि, इसको गाने आया हूं।
मैं इसे सुनाने आया हूं।

डायर ने जब जलियांवाला, गोली काण्ड कराया था।
उधम सिंह ने लंदन जाकर, डायर मार गिराया था।
ऐसे सूर साहसी की मैं, गाथा गाने आया हूं।
भारत है वीरों की भूमि, इसको गाने आया हूं।
मैं इसे सुनाने आया हूं।

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु ने, देशहित फांसी खाई थी।
चन्द्रशेखर और सुभाष जी ने, अंग्रेजी सत्ता हिलाई थी।
ऐसे शेर शहीदों की मैं, गाथा गाने आया हूं।
भारत है वीरों की भूमि, इसको गाने आया हूं।
मैं इसे सुनाने आया हूं।

शहीदों से हम प्रेरणा लेकर, अपना कर्तव्य निभायेंगे।
देश के दुश्मन और गद्दारों को, मौत की नींद सुलायेंगे।
अब अपने शेर शहीदों को, मैं श्रद्धांजलि देने आया हूं।
भारत है वीरों की भूमि, इसको गाने आया हूं।
मैं इसे सुनाने आया हूं।

शहीद भगत सिंह

वीर शहीद भगतसिंह जी को
करता मैं शत् शत् वार नमन।
आजादी की खातिर उसने
किया स्वयं का जीवन अर्पण।

बचपन से ही वीर भगतसिंह
बहुत बेचैन हुआ फिरता
मां भारती की आजादी को
नई नई बड़ी योजना बुनता।

लाला जी के ऊपर जब,
गोरों ने लाठीचार्ज कराया।
वीर भगतसिंह ने बदले में
सांडर्स के ऊपर बंम गिराया।

अंग्रेजों ने भगतसिंह को
धोखे से पकड़ लिया था।
राजगुरु सुखदेव के साथ
फांसी पर चढ़ा दिया था।

वीर भगतसिंह ने तब भी
कायरता नहीं दिखाई थी।
हंसते-हंसते उस वीर ने
देश हित फांसी खाई थी।

पावन जन्मदिन के अवसर पर
वीर शहीद का स्मरण करते हैं।
भारत मां के अमर पुत्र को हम
श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

खुर्जा, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

❑❑❑

डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव

(अभिनेता, कवि एवं प्रेरक वक्ता)

कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ

प्रभु कृपा से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय लेलूँ?
मात-पिता से जीवन पाया,
रूप रंग और पाई काया।
हरी आँख माँ की अनुकम्पा,
कद ऊँचा पितृ अनुकम्पा।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
मात पिता से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
प्रथम गुरु माँ ने दीक्षा दी,
पिता ने शब्दज्ञान शिक्षा दी।
संस्कार है उच्च सिखाया,
होता क्या व्यवहार बताया।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
सबकी कृपा से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
माँ ने व्यंजन दिव्य खिलाया,
पाक-कला में दक्ष बनाया।
अतिथि का सम्मान सिखाया,
आवभगत करना सिखलाया।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
माँ की कृपा से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
प्रारंभिक दीक्षा गुरु ने दी,
स्नातक की शिक्षा गुरु ने दी।
विद्या वाचस्पति उपाधी,
मानद मुझको अर्पित कर दी।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
गुरु कृपा से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
अभिनय ज्ञान गुरु से पाया,
भिन्न-भिन्न चरित्र निभाया।
निर्देशक तकनीक सिखाया,
अभिनय से परिचय करवाया।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
निर्देशकों से सीखा सब है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
दर्शक स्नेह ने दिया सहारा,
देखके अभिनय मुझे दुलारा।
आलोचकों ने किया परिष्कृत,
वृहद् हृदय से किया पुरस्कृत।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
जनता से ही सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
बहन भाई संग जीना सीखा,
हँसना सीखा लड़ना सीखा।

सखी-मित्र संग जग को जाना,
प्रेयसी संग प्रणय को जाना।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
संबंधों से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
संघर्ष में पत्नी संग मिला था,
उलझन का निष्कर्ष मिला था।
पत्नी प्रतिक्षण संग है ऐसे,
तमसो मा ज्योतिर्गमय जैसे।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
पत्नी संग ही सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
पत्नी ने जब पुत्री जन्मा,
मुझमें एक पिता को जन्मा।
नव्य एक जीवन को देखा,
स्वयं के ही विस्तार को देखा।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
अर्धांगिनी से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
पुत्री कम्प्यूटर सिखलाती,
नित्य नई तकनीक बताती।
करती है वो मुझको दीक्षित,
शिक्षित हो करती है शिक्षित।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
बिटिया से सब सीखा है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
कवि पिता से कविता जाना,
क्या कैसे लिखना है जाना।
पूर्वजों का अनुकरण किया है,
अध्ययन उनका कर्म किया है।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
विद्वानों से सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
गुरु से ज्ञान ध्यान भी सीखा,
ध्यान का गूढ़ विधान भी सीखा।
ध्यान में जब स्वयं को जाना,
शिव से क्या संबंध है जाना।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
शिव से ही तो सब पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
ये सारा संसार वृहद् है,
सागर का विस्तार वृहद् है।
योग्य था जितना मैंने पाया,
बस कुछ ही मोती चुना पाया।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
जो कुछ भी मैंने पाया है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
सम्मान मुझे जो प्राप्त हुआ है,
जन-जन की वो अनुकम्पा है।
दम्भ स्वयं का कैसे पालूँ,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
जनता का वरदान मिला है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
पृथ्वी पर मैं अतिथि मात्र हूँ,
भाग्य से अपने कृपा पात्र हूँ।
आज हूँ मैं कल नहीं रहूँगा,
पंच तत्व में मिला मिलूँगा।
इसमें ऐसा मेरा क्या है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?
ईश्वर का ही ऐश्वर्य है,
कैसे उसका श्रेय मैं लेलूँ?

अंधेरी, मुंबई

❑❑❑

कविताएँ/ग़ज़लें-

देवेन्द्र कुमार तिवारी

स्वर्ग बना दो

इस धरती को स्वर्ग बना दो।
समरसता का दीप जला दो।
अब त्रस्त हुई हिंसा से जनता,
अमन, प्रेम-रस गीत सुना दो।

हैं भरे खेत, खलिहान तुम्हारे।
नदी, ताल और झरने सारे।
पुष्पित होती नव कलियों पर,
स्नेहमयी जल-बूँद गिरा दो।

ये नीली, पीली तितली डोलें।
पी मकरंद, सुमन का खेलें।
नित् कोयल बोलें डाली-डाली,
तुम भी रस-संगीत बहा दो।

इस मेरी चन्दन-सी माटी में,
क्यूँ गिरती हैं बूँद लहू की?
ये वर्ग भेद की, जाति-द्वेष की,
इस ज्वाला को आज बुझा दो।

बर्बर और नापाक जुल्म से,
पीड़ित हुए आतंकवाद से।
विस्थापित अपने ही हो गए,
इनका तुम घर-बार दिला दो।

तुमने ही तो इस दुनिया को,
जीने का गुरू-मंत्र बताया।
ना अवरूद्ध करो उस पथ को,
पुनः वही जीवन का स्वर दो।

❑❑❑

अनिता सक्सेना

अगले पल का ठिकाना नहीं है

किरदार निभाने को मिला है जहाँ में,
ऐसा सुअवसर कभी आना नहीं है।
नश्वर है यह बेसकीमती दुनिया यहाँ,
अगले पल का ठिकाना नहीं है।।

वृद्धाश्रम में वृद्ध माता-पिता रो रहे हैं,
धिक्कार है ऐसे बच्चों को,
स्वजन स्नेह से वंचित हो रहे हैं।
बच्चों! इनकी चंद सांसों के साथ
तुम्हारी खुशहाली का आशीर्वाद,
कब बंद हो जायेगा? तुमने जाना नहीं है।।

जो लोग जहाँ पर हैं, सब सद्कर्म करें
किसी के आँसू का कारण न बनकर,
सबकी खुशियों का विस्तार करें।
पर पीड़ा से कुछ हाथ आना नहीं है,
अगले पल का ठिकाना नहीं है।।

अयोध्या, उत्तर प्रदेश
मो.-9889209884

❑❑❑

वीनु जमुआर

सुनो कहानी...

सुनो कहानी बचपन की
आँगन कहता था बच्चों से

एक था राजा एक थी रानी
राजा बड़ा दयालु था
वेद-पुराण, योग, राज-धर्म
का ज्ञानी था।
रानी भी थी परम पंडिता
कभी किसी को दु:ख ना देती
रक्षा सब की थी वे करती
राज्य था खुशहाल!

जब तुम पढ़-लिख सुविज्ञ बनोगे,
दान-धर्म, कर्म की बातें सीखोगे,
करना आदर गुरुजनों का
बनना तुम भी परम ज्ञानी

ग्रीष्म ऋतु की
दोपहरिया में
जब बच्चों की लगती चौपाल
आम्रकुंज से आती गूँज
सुन लो बच्चों मेरी बात
एक थे देश के प्रधानमंत्री
हरदम कहते
जय जवान-जय किसान
जब तुम बन जाओगे सयाने

निर्भय, निडर, सुदृढ़,
दृढप्रतिज्ञ-मन, प्यारे
भूल न जाना उनकी बात
पाँव रहें धरती पर तुम्हारे
चाहें छू लो तुम आकाश

उम्र का यह वक्त निराला
तकनीकी विज्ञान का बोलबाला
आभासी दुनिया की मस्ती
किंतु भूल न जाना
प्रकृति की हस्ती
जिसके मूल में होती है
सृष्टि की शक्ति

सत्य से बढ़ता है आत्मबल
अहिंसा में है सुख और शांति
राष्ट्र धर्म है सर्वोपरि
कहती हमसे गुरु-वाणी

पूछो बच्चों तुम अपने मन से
क्या कहता है, सुन कर
हम सभी की बात!

निर्णय लेना, आगे बढ़ना
जीवन है अनुपम निर्झर प्रपात

पुणे
संपर्क- 839054080

❑❑❑

अलका अग्रवाल

बीज से वृक्ष

धरती की कोख में, एक बीज कहीं पड़ा।
सूरज, जल मिलते ही, अंकुर बन फूट पड़ा।

मैं नन्हा पौधा बन, खूब लहलहाऊंगा।
धरती का स्निग्ध पा, मैं तो खिल जाऊंगा।

एक दिन बड़ा वृक्ष बन, जब खड़ा हो जाऊंगा।
कितनों को जीवन दे, जन्म धन्य कराऊंगा।

छाया दे पथिकों को, राहत दिलवाऊंगा।
फल, फूल, सब्जी दे, खुशियां लुटाऊंगा।

पतंग

मकर संक्रांति का है त्योहार,
नभ में उड़ती सर-सर पतंग।
लाल, गुलाबी, नीली, पीली,
आसमान में उड़ती पतंग।

तरह-तरह के रंग में मिलती,
कागज व प्लास्टिक की पतंग।
बच्चे, बूढ़े, जवान उड़ाते,
सब मिलकर रंगीन पतंग।
पक्की डोर व मांझा लेकर,
छत पे जा उड़ाते पतंग।

कोई उड़ाता मैदानों में,
लेकर फिरकी और पतंग।

कोई देता पतंग छुड़ैया,
कोई तानता डोर पतंग।
कोई लपेटे फिरकी पर है,
कोई काटता पेंच पतंग।

वो देखो वो कटी पतंग,
उड़ी जा रही दूर पतंग।
लंगी लेकर दौड़े रहे सब,
लूटने को कटी पतंग।

नभ में छाई हैं चहुं ओर,
कुछ छोटी व बड़ी पतंग।
कभी सर्प-सी लहराए वो,
ऊंची उड़ती जाए पतंग।

नभ में चढ़ जाती ऊपर तक,
डोर के कांधे पर चढ़के।
कभी लड़ाये पेंच किसी से,
कभी कटे,पेड़ में अटके।

पतंग समान बच्चों तुम भी,
वांछनाओं को उड़ान दो।
उत्साह तेरा नभ को छू ले,
उमंगों को आसमान दो।

❑❑❑

अनुष्का गुप्ता

पंचम सुर की पटरानी-कोयल

कोयल का स्वर...कू...ऊ...कू...ऊ...कू...ऊ...।
पहचाना बच्चो! इसी मीठी बोली को?
हाँ, बिलकुल सही पहचाना तुमने।
यह प्यारी-सी दुलारी-सी कोयल का स्वर
भारतीय पक्षियों में सबसे अधिक संगीत से भरा है।
जब भी कोयल बोलती है संगीत में बोलती है।
लो फिर सुनो
कोयल की मीठी बोली को...कूऊ...कूऊ...कूऊ
कोयल की इस मीठी आवाज को
कोयल का कूकना कहते हैं
बच्चों, संगीत तो तुम्हें भी लगता है बहुत प्यारा,
मीठा-मीठा संगीत तुम्हारे कानों में
घोलता है रस का फव्वारा।
कोयल की कूक भी होती है,
संगीत की तरह मधुर और सुरीली।
बैठकर आम की डाली पर,
छेड़ती है तान जब कोई रसीली।
कोयल की मनमोहक आवाज को,
कवियों ने पुकारा है मधु की प्याली।
जिसे पीते ही मन जाता है झूम-झूम,
और हाथ बजा उठते हैं ताली।
कोयल को बनाया है कवियों ने
अपना मीत,
और कोयल की मोहक कूक की बड़ाई में
रच डाले हैं अनेकों गीत।
बच्चो! संगीत में होते हैं सात स्वर
उनमें पांचवां स्वर होता है- सबसे ऊँचा और मधुर
उसी पांचवें स्वर से
करती है जादू...कोयल की वाणी
इसीलिए कवियों ने कहा है-
कोयल को पंचम सुर की पटरानी।
नर कोयल होता है चमकीले रंग का बड़ा प्यारा,
उजला-उजला-सा लगता है बड़ा दुलारा।
इसकी आंखों में चारों ओर,
होता है पीला, हरा और लाल रंग।
देखकर इसकी सुंदरता को बच्चो,
तुम रह जाओगे दंग।
मादा कोयल होती है भूरे रंग की
और इस पर होती हैं,
सफेद चित्तियाँ और धारियाँ
रहने के लिए भाते हैं कोयल को
घने पेड़ और अमराइयाँ।
और भोजन में होते हैं
कीड़े-मकोड़े और फल,
खाती है जिन्हें बड़े चाव से कोयल।
कोयल नहीं बनाती अपना कोई घर,
मादा कोयल खोजती फिरती है इधर और उधर-
(बच्चो! भला क्या खोजती फिरती है?)
वह खोजती है काले कौवे का बना बनाया घर;
जिसमें अपने अंडे देकर वह हो जाती है बेफिकर।
बेचारा कौवा नहीं पाता समझ,
कोयल की चतुराई।
क्योंकि कोयल और कौवे के अंडों में,
कोई भेद देता है नहीं दिखाई।

फिर मादा कौआ सेती है
अपने अंड़ों के साथ,
कोयल के अंड़ों को भी।
और प्यार से खिला-पिलाकर
पालती है कोयल के बच्चों को भी।
जब बच्चे होते हैं बड़े
पता चलता है तब, मादा कौवे को
कोयल का हेर-फेर,
लेकिन तब तक हो चुकी होती है बहुत देर।
सर्दी के मौसम में कोयल,
धर लेती है बिलकुल मौन।
फिर भला उसकी मीठी आवाज को
सुन सकता है कौन?
जानते हो तुम इसका मर्म,
क्योंकि कोयल जाती है चली
देश के उन भागों को, होते हैं जो गर्म।
किंतु आता है जैसे ही वसंत,
कोयल के मौन का
हो जाता है अंत।
वसंत में कोयल गाती है हरदम,
मनमोहक और मीठे गीत।
गीतों में भरा रहता है,
सुरमयी संगीत!!
...लो सुनो पंचम सुर की पटरानी का यह
मिश्री-सा गीत- कूके कोयल काली
फुदके डाली-डाली
पंचम सुर की रानी
प्यारी है मस्तानी
उपवन की खुशहाली-कूके।
कौवा भी है काला
बोली विष का प्याला
कोयल मधु की प्याली- कूके।
अमराई बौराए इस पर मस्ती छाए
नाचे मन मतवाली
कूके कोयल काली।

❑❑❑

रमेश तैलंग

आँखें

तारे नील गगन की आँखें।
नावें, किसी नदी की आँखें।

आँख दिये की नन्ही बाती।
अंधे की आँखें हैं लाठी।

पत्ती हैं आँखें डालों की।
दाने हैं आँखें बालों की।

बेटे अपनी माँ की आँखें।
सूरज चन्द्र जहाँ की आँखें।

नानी की आई है चिठ्ठी

नानी की आई है चिठ्ठी।
घर भर को आशीष लिखा है,
और लिखी हैं बातें मिठ्ठीं।

मुझसे पूछा है- रे पप्पू!
नानी को क्या भूल गया तू?
चिठ्ठी तेरी एक न आई,
मुझसे सचमुच दूर गया तू।

अब जल्दी से चिठ्ठी लिखना।
शुरु छुट्टियाँ हों, तब मिलना।

फ्लैट-401, प्लाट-50, सेक्टर-27, खारघर, नवीमुंबई
मो. 921168874

❑❑❑

राम विलास शास्त्री

भारत ने अपना रतन खो दिया...

रतन टाटा को उनके कारोबारी कौशल के साथ-साथ उनकी नैतिकता और परोपकारी गतिविधियों के लिए भी जाना जाता है। एक प्रमुख परोपकारी व्यक्ति के रूप में, उन्होंने अपने हिस्से का 65 प्रतिशत से अधिक हिस्सा धर्मार्थ ट्रस्टों में निवेश किया है। उनके जीवन का एक प्रमुख लक्ष्य भारतीयों को बेहतर जीवन स्तर प्रदान करना और मानव विकास सुनिश्चित करना है।

टाटा समूह के चेयरमैन के रूप में उन्होंने कंपनी को ऐसी ऊंचाइयों पर पहुंचाया कि इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित मान्यता मिली। कंपनी ने बड़ी वित्तीय सफलता हासिल की और टाटा समूह न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज तक पहुंच गया। उनके नेतृत्व में, टाटा समूह कोरस, जगुआर लैंड रोवर और टेटली जैसी कंपनियों के अधिग्रहण के साथ एक वैश्विक ब्रांड बन गया। टाटा नैनो और टाटा इंडिका ऑटोमोबाइल की कल्पना और निर्माण उनके नेतृत्व में किया गया था। उन्हें भारत के दो सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

रतन टाटा ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी सफलता ने न केवल दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया है, बल्कि उन्हें अपने लिए बेहतर जीवन बनाने का अवसर भी दिया है। रतन टाटा के सफलता के सिद्धांत रतन टाटा के जीवन और उपलब्धियां उनके जीवन परिश्रम और विनम्रता का एक जीवंत उदाहरण है। रतन टाटा का जीवन हमें कई तरह से प्रेरित करता है और जितना अधिक हम उनके जीवन पर नजर डालते हैं, हम उनकी उपलब्धियों से चकित रह जाते हैं। जिस तरह से उन्होंने आधुनिक समय के अनुसार विरासत को आकार दिया है, वह

सराहनीय और उत्साहजनक है। भले ही हम इस बात से सहमत हों कि उन्हें टाटा साम्राज्य विरासत में मिला था, लेकिन उनकी क्षमताओं पर कभी सवाल नहीं उठाया गया। टाटा कंपनी बनाने के पीछे उनकी रणनीतियाँ और विचार अद्वितीय हैं।

रतन टाटा का मानना है कि विपत्ति के समय में आपके पास दो विकल्प होते हैं- या तो आप खुद को परिस्थिति से दूर कर सकते हैं या खुद को इसके लिए तैयार कर सकते हैं। रतन टाटा के लिए, यह चुनाव बहुत पहले ही कर लिया गया था। भारत के सबसे बड़े व्यावसायिक समूह की बागडोर मिलना बेहद चुनौतीपूर्ण हो सकता है। लेकिन टाटा समूह के अध्यक्ष के रूप में रतन टाटा के पदभार ग्रहण करने से यह साबित हो गया कि जो पहले से ही बढ़िया है उसे और भी बेहतर बनाया जा सकता है। उनकी विरासत में महान नेतृत्व को प्रेरित करने की जन्मजात शक्ति है। उनकी सफलता शब्दों

से परे किसी को भी प्रेरित कर सकती है। लेकिन, अगर दुनिया आपको जिस तरह से देखती है वह इस बात का नतीजा है कि आप कितनी अच्छी तरह से संवाद करते हैं, तो रतन टाटा की बुद्धिमत्ता बेजोड़ है। उनकी सादगी, उनका दृढ़ संकल्प, उनके निर्णायक क्षण, उनकी उदारता, उनके सीखने की अवस्था, उनकी विनम्रता और उनकी बौद्धिक जिज्ञासा शामिल है। एक ऐसे व्यक्ति से जिसने अपने जीवन के दिनों को सफलता को फिर से परिभाषित करते हुए जिया है। उसके अनुभव और सीख किसी भी उद्यमी सुरंग के अंत में प्रकाश को रोशन कर सकते हैं। अगर कभी, अपने जीवन की यात्रा में, आपको थोड़े धक्के या चिंगारी की जरूरत है।

क्यों न उनकी व्यावसायिक प्रवृत्ति का भी समर्थन किया जाए? भारत की महत्वाकांक्षाएँ स्थानीय नहीं, बल्कि वैश्विक होनी चाहिए। इसकी कंपनियों को घरेलू बाजार पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय दुनिया में और दुनिया के लिए निर्माण करना चाहिए। उनकी जो भी कमियाँ थीं, रतन टाटा ने हमेशा खुद को और अपने समूह के उत्पादों को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उत्पादों के साथ तुलना करके देखा।

रतन टाटा, भारत के जाने-माने उद्योगपतियों और परोपकारी लोगों में से एक थे। टाटा ग्रुप की विरासत को नए मुकाम पर पहुंचाते हुए रतन टाटा ने कभी धनी बनने के लिए नहीं बल्कि भारत को एक बेहतर देश बनाने के लिए बिजनेस किया। आपको जानकर हैरानी होगी की रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा ग्रुप साल 2021 तक ही 102.4 अरब डॉलर यानी करीब 85,99,09,12,00,000 रुपये दान कर चुका था।

शिक्षा, चिकित्सा और ग्रामीण विकास के समर्थक होने के नाते रतन टाटा ने चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में बेहतर जल उपलब्ध कराने के लिए न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संकाय को सहयोग दिया।

टाटा शिक्षा एवं विकास ट्रस्ट ने 28 मिलियन डॉलर का टाटा छात्रवृत्ति कोष प्रदान किया था, जिससे कॉर्नेल विश्वविद्यालय भारत के स्नातक छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान कर सके। वार्षिक छात्रवृत्ति से एक समय में लगभग 20 छात्रों को सहायता मिलती थी।

टाटा समूह की कंपनियों और टाटा चैरिटीज ने 2010 में हार्वर्ड बिजनेस स्कूल (एचबीएस) को एक कार्यकारी केंद्र के निर्माण के लिए 50 मिलियन डॉलर का दान दिया था।

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने संज्ञानात्मक प्रणालियों और स्वचालित वाहनों पर शोध हेतु कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय को 35 मिलियन डॉलर का दान दिया था। यह किसी कंपनी द्वारा दिया गया अब तक का सबसे बड़ा दान है और 48,000 वर्ग फुट की इमारत को टीसीएस हॉल कहा जाता है।

टाटा समूह ने 2014 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे को 950 मिलियन डॉलर का ऋण दिया गया और टाटा सेंटर फॉर टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन (टीसीटीडी) का गठन किया गया। यह संस्थान के इतिहास में अब तक प्राप्त सबसे बड़ा दान था।

टाटा ट्रस्ट्स ने भारतीय विज्ञान संस्थान, न्यूरोसाइंस सेंटर को अल्जाइमर रोग के कारणों के अंतर्निहित तंत्र का अध्ययन करने तथा इसके शीघ्र निदान और उपचार के लिए तरीके विकसित करने हेतु 750 मिलियन रुपये का अनुदान भी प्रदान किया।

टाटा समूह ने संसाधन-विवश समुदायों की चुनौतियों का समाधान करने के लिए मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) में एमआईटी टाटा सेंटर ऑफ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन की भी स्थापना की, जिसका प्रारंभिक फोकस भारत पर था।

कोरोना से लड़ने के लिए टाटा ग्रुप ने देश को 1500 करोड़ रुपये दान दिया था।

रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा संस ने राम मंदिर के लिए 750 करोड़ रुपये की धनराशि रखी है। इस रकम में से 650 करोड़ रुपये बुनियादी ढांचे, डिजाइन, और आंतरिक कार्यों पर खर्च किए जाएंगे। वहीं, 100 करोड़ रुपये उस जगह के विकास के लिए रखे गए हैं जहां इमारत बनेगी।

उनकी अद्वितीय सादगी, परोपकार और समाज के विकास के प्रति समर्पण ने लाखों लोगों के जीवन को छुआ। वे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता, पशु कल्याण जैसे कुछ कारणों के लिए सबसे आगे थे। उनकी विरासत जीवित रहेगी और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति हार्दिक संवेदना।

द्वारका, नई दिल्ली

❑❑❑

डॉ. रत्नाकर आहिरे- एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व

12 अक्टूबर, 2024, गोरेगांव स्थित श्रावस्ती बुद्ध विहार सांस्कृतिक केंद्र में मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. रत्नाकर आहिरे ने 'Journey from Signature to Autograph' विषय पर अपने विचार रखे। उनके प्रेरक भाषण ने हजारों लोगों के दिलों को छू लिया और उन्हें जीवन के नए लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम में 9 से 90 वर्ष की आयु के लोग शामिल हुए। यह एक अद्‌भुत दृश्य था जहां विभिन्न पीढ़ियों के लोग एक साथ बैठकर डॉ. आहिरे के ज्ञान का लाभ उठा रहे थे। कार्यक्रम की शुरुआत में भारतरत्न रतन टाटा को श्रद्धांजलि अर्पित की करते हुए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, एपीजे अब्दुल कलाम, गाडगे बाबा और विवेकानंद जैसी महान हस्तियों के जीवन पर प्रकाश डाला। कैसे इन महान हस्तियों ने अपनी मेहनत और लगन से सफलता के शिखर छुआ।

डॉ. आहिरे ने श्रोताओं को बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शिक्षा के महत्व, सकारात्मक सोच और अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि कैसे हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ बड़ा कर सकता है। उन्होंने डेमो, रोल मॉडल, गाने और कहानियों के माध्यम से अपनी बातों को सरलता से समझाया।

कार्यक्रम में उपस्थित अनंत नारायण जाधव, जो एक वाहन चालक हैं, ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि कैसे डॉ. आहिरे के भाषण ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में कई भाषण सुने हैं लेकिन डॉ. आहिरे का भाषण अद्वितीय था। जाधव ने डॉ. आहिरे की 'रेडियेंट अकादमी' को एक लाख रुपये का दान देने की घोषणा की।

डॉ. रत्नाकर आहिरे ने अब तक 14 लाख से अधिक

लोगों को प्रेरित किया है। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है, जिसमें यूनाइटेड नेशंस ऑर्गेनाइजेशन द्वारा दिया गया डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर रत्न पुरस्कार भी शामिल है। बुद्धविहार के सचिव श्री राजकुमार अहिरे और एडवोकेट अध्यक्ष एडवोकेट शांताराम भोसले ने डॉ. रत्नाकर आहिरे को बुद्धविहार का ट्रस्टी नियुक्त करके उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने माउंट एवरेस्ट पर ट्रैकिंग की है और कई हिमालयन अभियानों में भी भाग लिया है।

डॉ. रत्नाकर आहिरे का मुख्य लक्ष्य शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाना है। युवाओं के सपनों को साकार करना। हर युवा उनके विचारों को व्यवहार में लाकर कौशल विकास के माध्यम से समाज के विकास में योगदान दे सकें। योग्य भारतीय छात्रों का विदेशी विश्वविद्यालयों में दाखिला लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त करे। उनका जीवन युवाओं की लक्ष्यपूर्ति के लिए सदैव समर्पित है।

'रेडियेंट अकादमी' युवाओं के सपने को साकार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी काम कर रहे हैं। दुनिया में शिक्षा का स्तर बेहतर हो ऐसा सदैव प्रयास करते हैं। उनके प्रयासों से लाखों लोगों का जीवन बदल रहा है। डॉ. आहिरे एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व दृढ़ संकल्प के साथ मुकाम हासिल करने की सदैव पैरवी करता है।

-गुरप्रीत, मुंबई

❑❑❑

हृदयेश 'मयंक'

बदलते वक्त के मापक यंत्र- हरिमृदुल

समकालीन हिन्दी कविता परिदृश्य में जिन कतिपय युवा कवियों नें अपने नयेपन और अनूठे पन के साथ अपनी उल्लेखनीय पहचान बनाई है उनमें हरिमृदुल जी एक हैं। उनका एक कविता संग्रह अभी हाल में ही 'सेतु प्रकाशन' नोएडा से प्रकाशित होकर चर्चित हो रहा है। इससे पूर्व उनके दो संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं 1. सफेदी में छुपा काला (2007) 2. जैसे फूल हजारी (2009)। हरि मृदुल जी कथाकार भी हैं। उनकी कहानियों का भी एक संग्रह अभी हाल में ही 'आधार प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है' हंगल साहब, जरा हँस दीजिए। हरि मृदुल जी पेशे से पत्रकार हैं वह भी दैनिक नवभारत टाइम्स मुंबई में बतौर सहायक संपादक के कार्यरत हैं। पत्रकारिता की व्यस्तता व सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों की नियमित भागीदारी की व्यस्तताएं उन्हें हमेशा कहीं न कहीं उलझाये रखतीं हैं बावजूद इसके कविता से वे अति गंभीरता से जुड़े हुए हैं। शायद यही कारण है कि वे अपने तीन कविता संग्रहों के साथ समकालीन हिन्दी कविता में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे अपने पहले कविता संग्रह में अपने नयेपन और नई संवेदना के लिए पहचाने गये। उनकी कविताओं में 'कंघा', 'स्पॉट ब्वाय', 'बनियान', 'मोंजे', 'सिरहाना', 'पोलीथिन' जैसे सामान्य विषयों पर कविताएँ मिल जांएगी। उनका उनके गाँव जवार के प्रति लगाव दर्शाती अनेक कविताएँ 'न्योली', 'घुघुति', 'बैल', 'बू' जैसी कविताएँ रिश्तों की स्मृतियों और उनके, उनको कविता में ही सही, सहेजने की दृष्टि को दर्शाती हैं। दूसरे संग्रह में उनकी प्रेम कविताओं के साथ साथ महानगरीय जीवन बोध से भरी अनेक जीवंत कविताएँ हैं जो उन्हें एक अलग पहचान दिलाती हैं। इस नये संग्रह की कविताएं उनके एक अलग तरह के

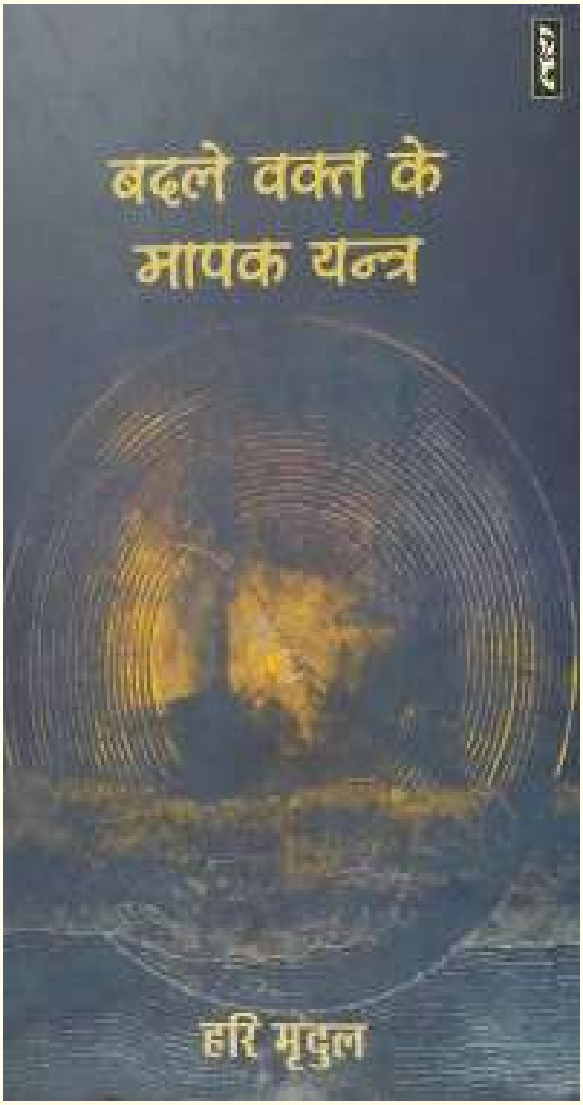

काव्य व्यक्तित्व से परिचित कराती हैं। इस संग्रह में भी कुछ ऐसे विषयों पर कवितायें हैं जो अमूमन समकालीन हिन्दी कविता में कहीं नहीं मिलेंगी। इस पर इस संग्रह की भूमिका में सुप्रसिद्ध कवि श्री विष्णु खरे जी लिखते हैं कि 'उनके पास कई कवितायें ऐसी स्थितियों, अनुभवों अथवा दृश्यों पर हैं जो, इससे पहले हिन्दी कविता में मेरे देखे तो कम से कम नहीं थीं।' 'कद्दू यानी कि गदू', 'दूध में हल्दी', 'बाल', 'हरा रंग', दुनिया का हवलदार एक सिल्वर जुबली फिल्म की बात 'राम राम', गुड़, आदि कई कविताओं का जिक्र किया है। विष्णु खरे जी नें अपनी भूमिका में हरि मृदुल को मौलिक और सतर्क कवि कहा है जो 'अपने इर्द-गिर्द की तमाम जीवन स्थितियों और खटरागों पर उनकी जैसी गहरी भेदक नजर जाती है, वह उनकी कविता को मौलिकता प्रदान करती है।' हरि मृदुल की इस संग्रह की कविताओं को पढ़ते हुए मैंने भी महसूस किया है कि देखने में सामान्य सी दिखने वाली ये कविताएं गहरे जीवन राग की कविताएं हैं। हरि मृदुल प्रतिरोध के कवि हैं। वे दैनन्दिन समाज व्यवस्था में तर्जनी उठाकर विरोध करने वाले मुखर कवि हैं। वे एक्टिविस्टों की तरह भले मुट्ठियां भींचकर प्रतिरोध के जुलूस में भले न शामिल हों पर उनके संकेत की भाषा खुले प्रतिरोध से कम नहीं है। उनकी कविता 'तर्जनी' में उनकी पंक्तियाँ देखें-

मेरी तो इतनी ही गुजारिश है कि
'तर्जनी नहीं उठेगी
तो काम समय पर नहीं होगा
सही काम नहीं होगा
सो अपनी-अपनी तर्जनी को
गायब होने से बचाना है
वक़्त जरूरत हर हाल में
इस उंगली को उठाना है भाइयो! पृष्ठ-14

उनके कविता में छुपे एक व्यंग्य को देखें- जिनके जूते बोलते हैं उनके चेहरे नहीं बोलते (पदचाप पृष्ठ 15)।

आज के जी हुजूरी वाले दौर में उनकी कविता 'सर' काबिले-तारीफ है। कार्पोरेट कल्चर का प्रभाव कुछ इस तरह बढ़ा है कि अगर आपको 'एस सर, हाँ सर, जी सर, नहीं आता तो आपके लिए यह मुश्किल समय है। यदि आता है तो आपकी सफलता सुनिश्चित है। एक कविता 'करतब' में हरिमृदुल कहते हैं कि-

ऐसी जालसाजी
ऐसी बाजीगरी
यह देश
बाजीगरों और जोगियों का है
सच ही है ये मान्यता
हम वाकई हैं इन बाजीगरों
जोगियों के चेले
ये हमारे गुरु
गुरु घंटाल (पृष्ठ 38)

एक छोटी पर मारक कविता में कवि की लोगों से अलग और अभिव्यक्ति की अनूठी कला का आनंद लें-

छंटनी
सत्रहवीं मंजिल पर था ऑफिस
जहाँ से फेंक दिया गया मुझे
खुद को घसीटते हुए
किसी तरह घर पहुंचा
बीबी बच्चों के सामने
मेरी आत्महत्या हुई। (पृष्ठ 39)

हरिमृदुल जी के इस संग्रह में कई उल्लेखनीय कविताओं को पढ़ते हुए एक अलग तरह के अनुभव से गुजरना हुआ। 'सजगता से आ रही नीचता', 'उलट पुलट' कविता को संग्रह की महत्वपूर्ण कविता मानते हुए प्रकाशक ने इसे प्रमुखता के साथ अंतिम कवर पृष्ठ पर स्थान दिया है। दिया भी जाना चाहिये। यह कविता वाकई अलग अंदाज और कथ्य के अनूठे रंग में उतरी है। आपको भी पढ़ना आवश्यक है। यह कविता आज के समय का चित्रांकन भी करती है-

चारों तरफ रोशनी ही रोशनी
इतनी रोशनी कि अंधेरे का है
बेसब्री से इंतजार
चारो तरफ एक दम चुप्पी
इतनी चुप्पी कि जोरों से चिल्लानें की
है प्रतीक्षा
चारो तरफ भद्र जन
इतने भद्र जन कि भदेस का है
भरपूर स्वागत

चारो तरफ सुभाषित वाक्य कि
गलियों के लिए है आदर पूर्ण जगह। (पृष्ठ 49)

'कद्दू यानि कि गदू' स्मृतियों की अद्भुत कविता है कवि गदू के बहाने गाँव की भूली बिसरी स्मृतियों को सहेजता दिखलाई पड़ता है। इस कविता के विषय के अनूठे पन के लिए विष्णु खरे जी नें भी भूमिका में इसका उल्लेख किया है पर यह कविता मूलत: कवि के ग्रामीण जीवन में बिताए दिनों व आज गावों में हुए बदलावों की भी अद्भुत कविता है। शहर गावों को उसकी सामूहिक संस्कृति को लील गया है। कहां रह गये अब पहले वाले गांव। कवि पहले के पुस्तैनी धंधो में लगे लोगों को तलाशने की कोशिश करता है। कार्पोरेट कल्चर नें नाई, बढ़ई, कुम्हार, सबके सबको पेशे से च्युत कर दिया है। उनके पुस्तैनी धंधो से सभी बेदखल कर दिए गये हैं। कवि बड़ी बेचैनी से एक एक कर सभी घरों को देखता है' इन्हीं घरों में एक मेरा पैतृक घर था-

धूसर रंग में डूबा
बेहद उदास
देहरी पर खड़े थे बूबू
हथेली की ओट से देखते हुए।

इस संग्रह में सम्मिलित है एक खूबसूरत अलग तरह की कविता 'मधुली की दातुली' चट्टान पर घिस घिस कर तेज कर रही हूं दातुली की धार।

पहले दुख क्लेश काटूंगी
बाद में घास
हाथ में जो ज्योडी है
पहले हिम्मत बांधूगी
फिर घास का गट्ठर
जैसे गाय रस ले लेकर चबाती है घास
ऐसे ही चबाती हूं
मैं पल-छिन, दिवस-मास
और कुछ नहीं है मेरे पास
चट्टान, दातुली, ज्योडी और घास
बस इन्हीं की आस
इन्हीं से मिलते दो ग्रास। (पृष्ठ 61)

मेरी समझ से यह संग्रह की सर्वश्रेष्ठ कविता है। यह संग्रह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें कवि का अतीत, पहाड़ का लोक जीवन, सीढ़ी जैसे खेत वहां का गांव जवार तो है ही वर्तमान समय सर पर चढ़कर बोलता है। राजनीतिक बदलाव की छटपटाहट है तो परिवर्तन कामी सोच के सपने हैं। कवि की तमाम जीवन स्थितियों पर रची कवितायें हैं तो एक जीवन राग का बोध सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। प्रतिरोध का मद्धिम-मद्धिम स्वर है तो व्यवस्था से दो चार करने वाले विचार उन्हें उनके जागरुक करने के लिए सदैव तत्पर दिखलाई पड़ते हैं।

इस संग्रह में सौ से अधिक कविताओं में से अन्य कई हैं जो विशेष संदर्भों में उल्लेख के लिए आकर्षित करती हैं। पर सबका उल्लेख आवश्यक नहीं है। कुल मिला कर हरि मृदुल प्रतिरोध के और आज के समय को चित्रित करने वाले अनोखे कवि हैं। पढ़ते हुए सामान्य सी दिखने वाली उनकी कविताएं दुबारा पढ़ने पर कुछ अलग तरह की मन:स्थितियों को पैदा करती हैं। हरि मृदुल के यहां न तो बड़बोला पन है और न ही प्रचलित मुहावरे और न कहन का प्रचलित ढंग है। इसलिए वे समकालीन कविता परिदृश्य में अपने तरह के अनूठे कवि हैं। कई बार पढ़ते हुए पाठक अपने समय की और समाज की प्रवंचनाओं से दो चार होता है। भाषा के स्तर पर हरिमृदुल का पत्रकार कवि पर हावी है। वह भावुकता और कवि जन्य रुझानों से मुक्त है। अमूमन प्रचलित कविताओं का असर कवियों में उनके मुहावरों में सहज दिख जाता है। हरि मृदुल जी उससे बचते हुए अपना मुहावरा गढ़ते हैं जिसे कवि की निजी सफलता माना जाना चाहिए। हरि मृदुल जी हमारे बीच के और दैनंदिन जीवन में हमेशा हमारे साथ रहने वाले लोगों में हैं या यूँ कहें कि वे हम लोगों के सुख दु:ख के साथी हैं। उनकी प्रतिभा से हम शुरुआती दिनों से ही परिचित हैं। एक ऐसे साथी को पढ़ने व उनकी कविताओं पर टिप्पणी करने का अवसर मेरे लिए खुद के दुखों से उबरने का भी अवसर है। मैं उन्हें हृदय तल से इस संग्रह के लिए और इस संग्रह को पढ़ने के लिए उपलब्ध कराने के लिए बधाई देता हूं।

लेखक : हरि मृदुल
संग्रह का नाम 'बदले वक्त के मापक यंत्र'
प्रकाशक : सेतु प्रकाशन, नोएडा, उ.प्र.

मुंबई, महाराष्ट्र

❑❑❑

संजय भारद्वाज

बात इतनी सी सै- डॉ. रमेश मिलन

देखना, बोलना, सुनना मनुष्य जीवन में अनुभूति और अभिव्यक्ति के अभिन्न अंग हैं। यही कारण है कि मनुष्य देखा, बोला, सुना, प्राय: अपने संगी-साथियों के साथ साझा करता है। देखने, बोलने, सुनने का साझा रूप है नाटक। वस्तुत: जीवन के प्रसंगों और घटनाओं का रेपलिका है नाटक। मनुष्य की भावनाओं से व्यापक अंतरंगता ने भरतमुनि से हजारों वर्ष पूर्व नाट्यशास्त्र की रचना करवाई। पृथ्वी पर जीवन के प्रादुर्भाव के साथ ही सृष्टि के रंगमंच पर पात्रों की आवाजाही त्रिकाल सत्य है। इस सत्य को व्यक्त करते हुए शेक्सपियर ने लिखा, 'ऑल द वर्ल्ड इज अ स्टेज एंड ऑल द मेन एंड वूमेन मिअरली प्लेयर्स।' सारा जगत एक रंगमंच है और सारे स्त्री-पुरुष केवल रंगकर्मी।

रंगकर्म अथवा नाटक अपने आरंभिक समय में लोकनाट्य के रूप में उभरा। कालांतर में सभागारों तक पहुँचा। समय ने करवट ली और और दूरदर्शन के धारावाहिकों के रूप में विकसित हुआ नाटक।

डॉ. रमेश गुप्त 'मिलन' द्वारा लिखित 'बात इतनी सी सै', विभिन्न विषयों पर दूरदर्शन के लिए लिखे अलग-अलग लघु नाट्यों का संग्रह है।

इन धारावाहिकों या एपिसोड का लेखन काल लगभग साढ़े तीन दशक पुराना है। स्वाभाविक है कि तत्कालीन समाज की भाषा, सोच, मूल्य, ऊहापोह जैसे अनेक बिंदु इनमें दृष्टिगोचर होते हैं। यही लेखन की कसौटी भी है जिस पर लेखक खरा उतरता है।

सच्चा साहित्य वह है जो त्रिकाल तक अपने दृष्टि का विस्तार कर सके। उसकी आँखों में समकालीनता का प्रकाश हो, साथ ही अंतस में सार्वकालिकता का अखंड दीप भी प्रज्ज्वलित हो रहा हो। भूत, भविष्य और वर्तमान में प्रासंगिक बने रहना, लेखन की बड़ी उपादेयता है।

नाट्यलेखन के कुछ तत्व एवं सूत्र हैं। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल, शैली आदि का विस्तृत

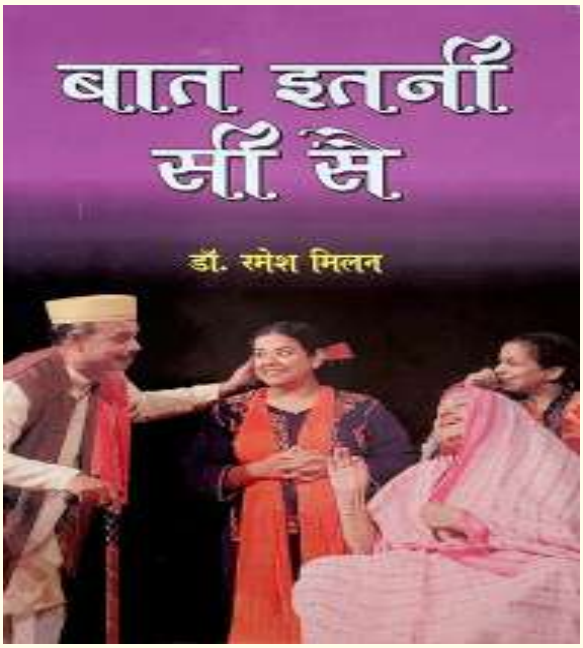

विवेचन लघु भूमिका में वांछित नहीं है। सारांश में कहना चाहूँगा कि नाटक की प्रवहनीयता, उसकी सहजता और विश्वसनीयता भी होती है। नाटक नाटक तो हो पर नाटकीय न हो तो लेखन सफल है। इस आधार पर संग्रह के धारावाहिक सफल हैं।

इस सफलता की एक बानगी है, शादी, ब्याह से लौटने के बाद मिठाई और पकवान की विविधता और स्वाद पर बातें करना। इसी तरह बहू का सास के पैर दबाना तत्कालीन जीवन मूल्यों की ओर संकेत करता है। 'लड़की जैसे हीरा और तू हीरे की जौहरी...' जैसे संवाद अपने इर्द-गिर्द एवं परिवेश के लगते हैं। धारावाहिक के पात्र स्नेह, सम्मान, खीज, मतभेद सभी जीते हैं। रिश्ते, सम्मानजनक सीमा का पालन करते हैं। इसके चलते संबंध आयातित नहीं लगते। वर्तमान में अनेक धारावाहिकों में सास-बहू एक-दूसरे के विरुद्ध जानलेवा

षड्यंत्र करते दीखती हैं। ऐसे में एक साथ बैठकर धारावाहिक देखती सास और बहू दोनों के मन में यह प्रश्न उठता है कि ये कौन-सी दुनिया के रिश्ते हैं? संबंध की नींव षड्यंत्र नहीं विश्वास होती है। 'इतनी सी बात' के पात्र इस विश्वास का निर्वाह करते हैं।

अलबत्ता नये रिश्ते जोड़ते समय आदमी के भीतर का लोभ, अपना लाभ तलाशता है। '...एक हजार गज में दो मंजिला मकान,...पाँच सौ बीघा जमीन,...एक लाख नगद दिलवा दूँगा,...घर भर देगा', जैसे संवाद इस लोभ को मुखर करते हैं। आदमी ऊपरी तौर पर आदर्शों की कितनी ही बात कर ले लेकिन निजी लाभ की स्थिति बनते ही सुविधा के गणित पर आ जाता है। 'क्या मैं दुनिया से न्यारी हूँ...' इस सुविधा का प्रतिनिधि प्रस्तुतिकरण है।'...ब्याह शादी के कमीशन लेकर नहीं खाया करते.../ अपना लोक-परलोक मत बिगाड़ना...' जैसे संवाद भारतीय दर्शन विशेषकर ग्रामीण और छोटे शहरों में भीतर तक पैठे सांस्कृतिक मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति हैं।

ये धारावाहिक दूरदर्शन के लिए लिखे गए थे। अत: इनके माध्यम से सरकारी नीतियों और योजनाओं का प्रचार-प्रसार होना स्वाभाविक है। '...पढ़ाई गाँव में इस्तेमाल करूँगा.../ नए तौर-तरीके इस्तेमाल करूँगा...' जैसे संवाद इसके उदाहरण हैं। 'लड़का 21 बरस का, लड़की 18 बरस की न हो तो कानून में जुर्म है' यह वाक्य भी दहेज की मानसिकता के विरुद्ध जनजागरण के सरकार के प्रयासों और कानून की जानकारी कथासूत्र में पिरोकर देता है।

इन धारावाहिकों का लेखन साँचाबद्ध एवं धाराप्रवाह है। यूँ भी धाराप्रवाह न हो तो धारावाहिक कैसा? कथासूत्र में 'वॉट नेक्स्ट' अर्थात 'आगे क्या घटित होगा' का भाव होना अनिवार्य तत्व है। इस संग्रह में यह भाव पाठक की उत्कंठा को बनाए रखता है।

'बात इतनी सी सै' की बात दूर तक जाने में सक्षम है। आशा है जिज्ञासु पाठकों और इस क्षेत्र विशेषकर संहिता लेखन में काम कर रहे नवोदितों के लिए यह संग्रह उपयोगी सिद्ध होगा।

लेखक : डॉ. रमेश मिलन
पुस्तक : बात इतनी सी सै

संजय भारद्वाज, अध्यक्ष, हिंदी आंदोलन परिवार,
सदस्य, हिंदी अध्ययन मंडल,
एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, पुणे

❑❑❑

गतिविधियां-

इंदौर में आयोजित- डॉ. जवाहर कर्नावट की लिखी पुस्तक 'विदेश में हिन्दी पत्रकारिता' का लोकार्पण श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति के तत्वावधान में समिति सभागार में हुआ। अध्यक्ष- डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, डॉ. सोनाली नरगुंदे, अध्यक्ष- पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, देवी अहिल्या महाविद्यालय की उपस्थिति रही। इस पुस्तक के संदर्भ में मुख्य अतिथि- डॉ. सुलभा कोरे ने कहा कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे देश में ही यथोचित सम्मान नहीं मिल पा रहा है। इस भाषा पर विदेश में काम हो रहा है और उसकी स्थिति का आंकलन इस पुस्तक में किया गया है।

77वें संत समागम की सेवाओं का विधिवत शुभारंभ
सेवा को भेदभाव की दृष्टि से न देखकर निष्काम भाव से करें

– सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

समालखा, 7 अक्टूबर, 2024: इस संसार में अनेक प्रकार के लोग रहते हैं जिनकी अलग-अलग भाषा, वेश-भूषा, खान-पान, जाति, धर्म और संस्कृति आदि हैं। पर इतनी विभिन्नताओं के रहते भी, हम सब में एक बात सामान्य है कि हम सब इंसान हैं। कैसा भी हमारा रंग हो, वेश हो, देश हो या खान-पान, सबकी रगों में एक सा रक्त बहता है और सब एक जैसी सांस लेते हैं। हम सब परमात्मा की संतान हैं। इसी भाव को अनेक संतों ने अलग-अलग समय और स्थानों पर अपनी भाषा और शैली में 'समस्त संसार, एक परिवार' के सन्देश के रूप में व्यक्त किया। पिछले लगभग 95 वर्षों से संत निरंकारी मिशन भी इसी सन्देश को न केवल प्रेषित कर रहा है, बल्कि अनेक सत्संग और समागम का नियमित रूप से आयोजित कर, इस सन्देश का जीवंत उदाहरण भी पेश कर रहा है। मिशन के लाखों भक्त इस वर्ष भी 16, 17 और 18 नवंबर 2024 को संत निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा, हरियाणा में होने वाले 77वें वार्षिक निरंकारी संत समागम में पहुँचकर मानवता के महाकुम्भ का एक बार फिर से नजारा सजाने जा रहे हैं। देश-विदेश से आने वाले ये भक्त जहाँ सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज और सत्कारयोग निरंकारी राजपिता रमित जी के पावन दर्शन करके स्वयं को कृतार्थ अनुभव करेंगे, वहीं मिलजुलकर संत-समागम की शिक्षाओं से अपने मन को उज्जवल बनाने का प्रयास भी करेंगे।

इस संत समागम की भूमि को समागम के लिए तैयार करने की सेवा का शुभारम्भ रविवार 6 अक्टूबर को हर वर्ष की भांति सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज और निरंकारी राजपिता जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर मिशन की कार्यकारिणी के सभी सदस्य, केंद्रीय सेवादल के अधिकारी और सत्संग के अन्य हजारों अनुयायी मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि 600 एकड़ में फैले इस विशाल समागम स्थल पर लाखों संतों के रहने, खाने-पीने, स्वास्थ्य और आने-जाने के साथ-साथ अन्य कई प्रकार की व्यवस्थाएं की जाती है, जिसके लिए पूरा महीना अनेक स्थानों से आकर भक्त निष्काम भाव से सेवारत्त रहते हैं। इस पावन संत समागम में हर वर्ग के संत एवं सेवादार महात्मा अपने प्रियजनों संग सम्मिलित होकर एकत्व के इस दिव्य रूप का आनंद प्राप्त करेंगे। इस वर्ष के समागम का विषय है -विस्तार, असीम की ओर।

समागम सेवा के शुभ अवसर पर विशाल सत्संग को संबोधित करते हुए सतगुरु माता जी ने फरमाया कि सेवा करते समय सेवा को भेदभाव की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए अपितु सदैव निरिच्छत, निष्काम भाव से ही की जानी चाहिए। सेवा तभी वरदान साबित होती है जब उसमें कोई किंतु, परंतु नहीं होता, उसकी कोई समय सीमा नहीं होनी चाहिए कि समागम के दौरान तथा समागम के समाप्त होने तक ही सेवा करनी

है, बल्कि अगले समागम तक भी सेवा का यही जज्बा बरकरार रहना चाहिए। यह तो निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। सेवा सदैव सेवा भाव से युक्त होकर ही करनी चाहिए फिर चाहे हम शारीरिक रूप से अक्षम हो या असमर्थ हो सेवा परवान होती है क्योंकि वह सेवा भावना से युक्त होती है।

संत समागम, जिसकी प्रतीक्षा हर भक्त वर्ष भर करते हैं एक ऐसा दिव्य उत्सव है जहाँ मानवता, असीम प्रेम, असीम करुणा, असीम विश्वास और असीम समर्पण के भाव को असीम परमात्मा के ज्ञान का आधार देते हुए सुशोभित करती है। मानवता के इस उत्सव में हर धर्म-प्रेमी का स्वागत है।

-स. वि. लव्हटे

❑❑❑

लक्ष्य बड़ा है सामने इसको सन्तजनों ने पाना है।
सत्य ज्ञान का ये उजियारा जग भर में फैलाना है।

छोटे छोटे दायरों में फंसकर न रह जाना है।
काम बड़ा जो करना है तो दिल को बड़ा बनाना है।

प्रशंसा पाने का मन में भाव अगर आ जायेगा।
फिर कहां दुनिया में हमसे परमारथ हो पायेगा।

कहे 'हरदेव' निज स्वारथ से ऊपर उठते जाना है।
जनहित में निष्काम भाव से आगे कदम बढ़ाना है।

-सद्गुरु हरदेव जी महाराज

सौभाग्य से मिलती है सेवा

कई बार हम अरदास तो करते हैं कि सेवा मिले परंतु जब सेवा मिलती है तो कहते हैं कि अभी मन नहीं है या अभी परिश्थितियां अनुकूल नहीं हैं। सेवा का सौभाग्य जब भी आए उसे शुकराने व पूर्ण समर्पण भाव से स्वीकार करना ही संतो की निशानी है। संत सकारात्मक सोच रखकर परोपकारी जीवन जीते हैं। ये छायादार वृक्षों के समान स्वयं धूप में खड़े रहकर भी दूसरों को छाया ही देते हैं। संत चेतन होते हैं, ये निष्काम भाव से सेवा करते हैं, मदद के भाव से नहीं क्योंकि मदद में अहंकार का भाव आ जाता है। सभी तन, मन, धन से खुशहाल रहें और सब में निरंकार का अंश देखते हुए निष्काम भाव से सेवा करते चले जाएं।

-सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

पाठकीय प्रतिक्रियाएँ-

आपके द्वारा प्रकाशित आसरा मुक्तांगन सितंबर/2024 का हिन्दी विशेषांक प्राप्त हुआ। डॉ. रमेश मिलन जी आपके द्वारा संपादकीय मे उद्धृत अथर्ववेद, गीता के वचनों से भाषा का श्रेष्ठत्व व्यक्त होता है। वैसे ही हिंदी के साथ भारतीय भाषाओं के प्रति गहराइयों से ममत्व भी दिखाई देता है। हिंदी भारत की आत्मा में बसी हुई है, यह आपका कथन बिल्कुल सच है।

आसरा मुक्तांगन का विविध विषयों से जुड़ाव, मानवता और सृष्टि के प्रति प्रेम समाजहित को स्पष्ट करता है। इस पत्रिका में गद्य-पद्य विधा में रचित सभी रचनाकारों के संवेदनशील साहित्यिक दृष्टिकोण से हिंदी भाषा की संपन्नता स्पष्ट होती है।

आसरा मुक्तांगन से हमें जोड़ने के लिए संस्था से जुड़े सभी मान्यवरों, संपादक डॉ. रमेश मिलन जी के प्रति आभार!

-डॉ. लतिका जाधव, पुणे

'आसरा मुक्तांगन' में छपे हिंदी दिवस पर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्व के लेख, हिंदी और अगणित रोजगार, बोली, भाषा तथा विश्व साक्षरता दिवस पर आलेख स्तरीय व प्रशंसनीय हैं जिसके लिए डॉ. सुनील देवधर सर, डॉ. प्रमोद शुक्ला सर, डॉ. प्रेरणा उबाले जी, आदरणीया वीनु जमुआर दीदी तथा डॉ. लतिका जाधव जी बधाई के पात्र हैं। घनश्याम अग्रवाल का व्यंग्य 'एकलव्य का अंगूठा', आदरणीया श्यामलता जी की कहानी 'मैं एक माँ हूँ', डॉ. रमेश यादव भाई, डॉ. सुनील देवधर सर, डॉ. रोशनी किरण तथा गौतमी पांडेय जी की कविताएँ मनभावन थीं। ऋता सिंह जी का यात्रा वृत्तांत- 'गुरुद्वारों की मेरी अद्भुत यात्रा' गुरुद्वारों का सजीव चित्र खींचने में सफल रहीं। आपकी पुस्तक 'राष्ट्रनायक सरदार पटेल' की समीक्षा बहुत ही सार्थक व सटीक की है संजीव निगम जी ने। आपका लिखा सम्पादकीय जिसे आपने अथर्ववेद के एक कथन से शुरुआत की है वंदनीय है। उस पर हिंदी भाषा के प्रति आपके विचार अत्यंत सुंदर है जो आपके हिंदी प्रेम को दर्शाते हैं।

-अलका अग्रवाल

मेरे शब्दों में आसरा मुक्ताँगन

'आसरा मुक्ताँगन' साहित्यिक जगत् में एक प्रतिष्ठित पत्रिका है। पत्रिका की साज-सज्जा बेजोड़ है। इसका सौन्दर्य रूप मन को आकर्षित करता है। हिन्दी भाषा को समर्पित इस मास सितम्बर के अंक में प्रकाशित लेख और कविताएँ समाज के विविध पहलुओं पर गहन चिंतन प्रस्तुत करती हैं। इस विशेषांक में लेखकों और कवियों ने अपने साहित्यिक दृष्टिकोण से समाज, शिक्षा, संस्कृति और पर्यावरण के महत्व को रेखांकित किया है। पत्रिका में प्रबुद्ध लेखकों व कवियों ने समर्पण भाव से हिन्दी भाषा के विकास और इसे अन्तरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। इस अंक में प्रतिष्ठित लेखकों व कवियों ने समाज में सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण पर भी गहरी चिंता व्यक्त की है। इसलिए पत्रिका मूलभूत संस्कारों और जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए संवाहक के रूप में प्रस्तुत हई है। इस अंक के सभी लेख और कविताएँ पठनीय और प्रसंशनीय हैं।

'आसरा मुक्ताँगन' के मुख्य संपादक डॉ. रमेश मिलन हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक और कवि हैं। ये अपने संपादकीय विवेक और दृष्टिकोण से जहाँ हिंदी भाषा की सेवा कर रहे हैं वहीं समाज विशेष रूप से नई पीढ़ी को सशक्त दिशा दे रहे हैं। इनकी कविताओं और नाटकों में सहजता के साथ संवेदनशीलता का रूप झलकता है।

डॉ. मिलन के मार्गदर्शन में 'आसरा मुक्ताँगन' पत्रिका विचारशीलता और संवाद की एक सशक्त धारा प्रवाहित कर रही है जो पाठकों को नई दृष्टि प्रदान करती है।

'आसरा मुक्ताँगन' पत्रिका से जुड़े सभी विज्ञ और प्रबुद्ध लेखकों, कवियों और मुख्य संपादक डॉ. रमेश मिलन के प्रति आदर भाव से मंगल कामनाएँ।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।'

-देवेंद्र कुमार तिवारी

आसरा मुक्तांगन पत्रिका जहाँ हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं, सामाजिक समस्याओं आध्यात्मिक और राजनैतिक चिंतन के लेख, सामग्री प्रकाशित कर लेखकों को तो सम्मानित करती ही है मानवता की रक्षक सनातन वैदिक संस्कृति को भी प्रोत्साहित करती है। इस महत्वपूर्ण पुनीत कार्य के लिए सम्पादक मंडल और सहयोगी बधाई स्वीकार करें स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति।

- पीतम सिंह 'प्रियतम'

पत्रिका 'आसरा मुक्तांगन' की 52 पृष्ठों वाली पीडीएफ प्रति मिली। सुंदर सुकूनदायक रंगों में सजी साहित्य जगत से लेकर विश्व विभूतियों के चित्रों से सज्जित। आवरण पृष्ठ ने मन मोह लिया।

भाषा विशेषांक अंक, संग में आलेख, कहानी, कविताएँ, यात्रा वृत्तांत, भाषा संस्कृति और संस्कार एवं पुस्तक समीक्षा इत्यादि का समावेश...अंक तो विशेष होना ही था। गतिविधियों की झलक के साथ ही प्रभु का स्मरण भी...। प्रधान संपादक के कथन 'साहित्य मानव सभ्यता का प्रकाश स्तंभ' को प्रमाणित करता है। अथर्व वेद की ऋचाओं से आलोकित, पठन/ मनन/ चिंतन से उपजे विचार संपादकीय को विशिष्ट बनाते हैं।

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। जहाँ सृजन आवश्यक है तो उतना ही आवश्यक वाचन भी होता है। हम कितना पढ़ पाते हैं, ग्रहण कर पाते हैं, स्वयं का आकलन स्वयं कर पाते हैं या नहीं, ये सारी बातें हमारे अपने ऊपर अवलंबित होती हैं।

एक समय था, महिने का आरंभ होते ही हम मासिक पत्र-पत्रिकाओं की बाट जोहते थे। हाथ में पुस्तक/पत्र/पत्रिकाएं लेकर पढ़ना...कितनी अनूठी...कितनी सुंदर अनुभूति होती थी न! समय का प्रभाव कहें या फिर जीवन की तेज चलती गति! एक क्लिक पर ई-पत्र-पत्रिकाएँ और सोशल मिडिया के साइट्स पर विविध साहित्यिक/सामाजिक /राजनीतिक समाचार उपलब्ध होने लगे हैं।

किंतु हाथों में प्रकाशित प्रति लेकर पुस्तक/ पत्रिका/ समाचार पत्र इत्यादि पढ़ने का सुख, उन पृष्ठों को, शब्दों के छुअन महसूस करने वाले पाठक वर्ग आज भी हैं। इनमें से एक यह पाठकीय प्रतिक्रिया लिखने वाली पाठिका भी सम्मिलित है। संभवतः पाठको की यह चाहत ही है कि कुछेक प्रकाशन समूह आज भी छपी हुई पत्रिकाएँ हम तक पहुँचाते हैं। आशा है इस पत्रिका की प्रति जल्दी ही हम पाठकों तक पहुँचेगी।

हिन्दी विशेषांक के इस अंक में सम्माननीय रचनाकारों की विविध विधाओं में प्रकाशित रचनाएँ सार्थक एवं पठनीय हैं। हिन्दी भाषा विषयक जानकारियों से परिपूर्ण, कविताओं की कलकल बहती धारा, स्वयं के प्रति दृढ़विश्वास उत्पन्न करने के प्रेरणात्मक लेख, मातृभाषा के प्रति प्रेम से सिक्त अंक संजोने योग्य! प्रधान संपादक डॉक्टर रमेश मिलन जी तथा आसरा मुक्तांगन प्रकाशन के समस्त टीम को बधाइयाँ तथा आने वाले शारदीय नवरात्र की शुभकामनाएँ।

-वीनु जमुआर

पुणे / संपर्क. 839054080

हिंदी की विकास यात्रा संबंधी अनेक जानकारियों से लबालब आसरा मुक्तांगन का सितंबर माह का अंक मेरी दृष्टि में साहित्य संपदा से समृद्ध अंक है।

डॉ. सुनील देवधर का आलेख, श्री घनश्याम अग्रवाल का व्यंग्य लेख, डॉ. वीनू जमुआर, श्री रामहित यादव, डॉ. लतिका जाधव के भाषा संबंधी लेख, डॉ. किशोर सिन्हा तथा श्यामलता गुप्ता की कहानियां, ऋता सिंह का यात्रा वर्णन, डॉ. रमेश यादव, डॉ. रोशनी किरण आदि की कविताएं सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। डॉ. रमेश 'मिलन' जी का संपादकीय तो सब कुछ अपने आप में समेटे हुए है। एक सुंदर एवं स्वस्थ विशेषांक के लिए आदरणीय संपादक महोदय बधाई के पात्र हैं।

- डॉ. प्रमोद शुक्ल

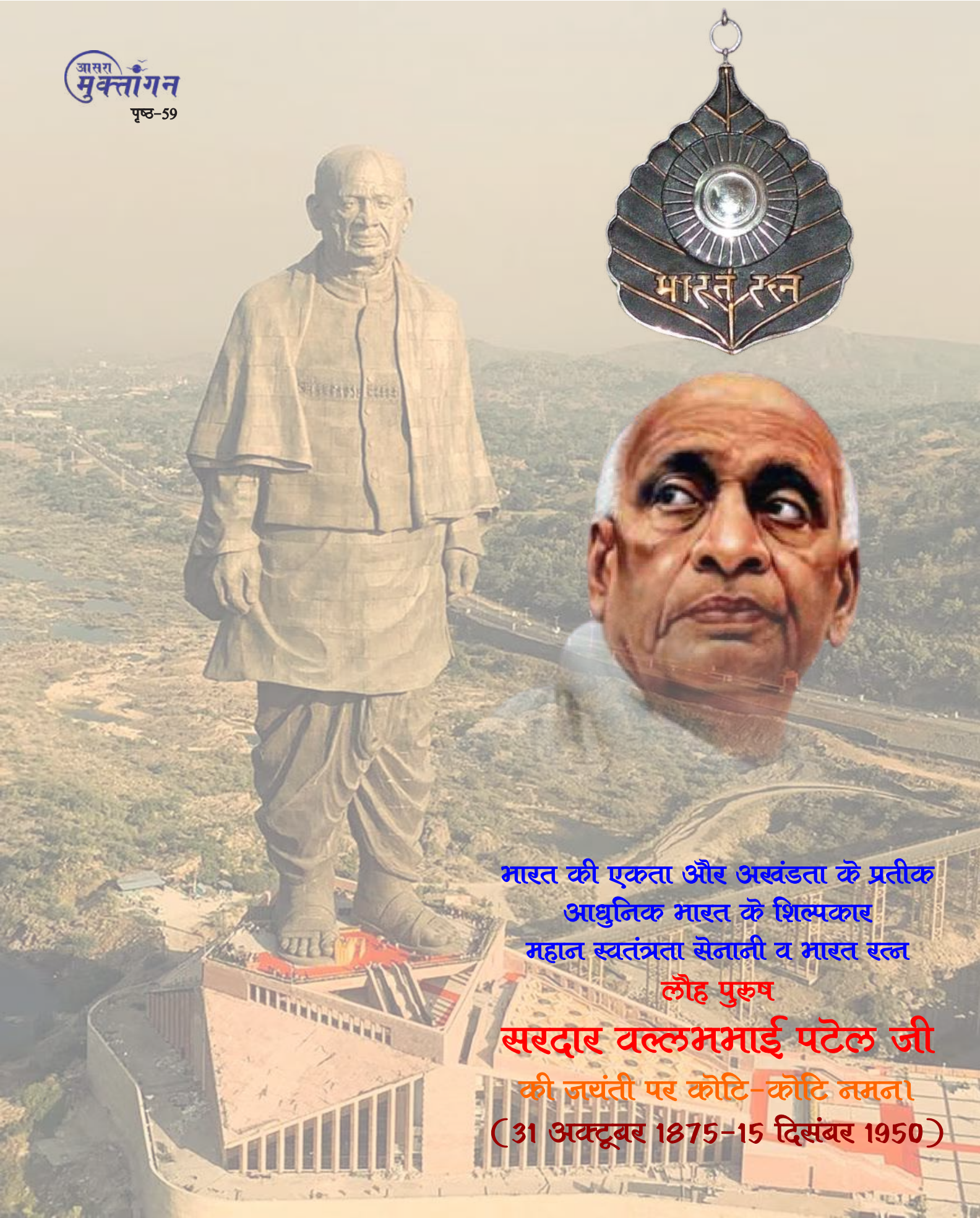

भारत की एकता और अखंडता के प्रतीक
आधुनिक भारत के शिल्पकार
महान स्वतंत्रता सेनानी व भारत रत्न
लौह पुरुष

सरदार वल्लभभाई पटेल जी

की जयंती पर कोटि-कोटि नमन।

(31 अक्टूबर 1875-15 दिसंबर 1950)

RNI NO. MAHHIN/2012/45032

छट जाये अज्ञान अंधेरा तो फिर रोज दिवाली है।
ज्ञान उजाला डाले डेरा तो फिर रोज दिवाली है।
मन अवध में राम जो आये तो फिर रोज दिवाली है।
अहंकार का वध हो जाये तो फिर रोज दिवाली है।
ज्योत से ज्योत जगाते जायें तो फिर रोज दिवाली है।
रोशन राह बनाते जायें तो फिर रोज दिवाली है।
प्रेम प्रीत की फुलझड़ी हो तो फिर रोज दिवाली है।
मिलवर्तन की जुड़ी कड़ी हो तो फिर रोज दिवाली है।
समदृष्टि की बंटे मिठाई तो फिर रोज दिवाली है।
जग हो इक परिवार की न्याई तो फिर रोज दिवाली है।
झूठ पर मन की विजय हो तो फिर रोज दिवाली है।
कहे 'हरदेव' कि
सत्य की जय हो तो फिर रोज दिवाली है

- हरदेव वाणी से साभार

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक महानंदा एम. शिरकर द्वारा साई ऑफसेट, डी-39, अमरज्ञान इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस.टी. डेपो के सामने खोपट, ठाणे (महाराष्ट्र) से मुद्रित एवं मंगल प्रभात, सूर्य नगर, विटावा, ठाणे-400605 से प्रकाशित
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com मोबाइल- 09029784346, 08108400605